

प्रवन्ध-निवन्ध

निवन्ध-निकुञ्ज

डॉ. बचेश्वर झा

निवन्ध-निकुञ्ज

डॉ. बचेश्वर झा



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-76-6

दाम : 250/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 9931654742, 6200635563

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली, जिला- सुपौल

NIBHANDH-NIKUNJ
Collection of Maithili Research Papers-Essays-Criticism by Dr. Bacheshwer Jha.

समर्पण

मातृ-पितृ चरणकमले भ्योनमः

दू शब्द

अवकाश प्राप्त कएलोपरान्त हम बोझ तरक दूबि जकाँ पड़ल रही। साहित्यक अभिरुचि रहलोपरान्त किछु नहि लिखि-पढ़ि रहलहुँ। जे गद्य-पद्य रचना छल ओकरा सहेज कऽ रखने रही। श्री उमेश मण्डल एक चिकित्सक रूपमे हमरा ओहिठाम बजाओल गेला। हुनकर तजुरबा तेहन सटीक छल जे नवजात शिशुक काया-कल्प सावित भेल। तहियासँ हमरा परिवारमे हुनका डॉक्टरक रूपमे समादृत कएल गेल।

एहि तरहेँ समय बितैत गेल। हुनकर पिताजी श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बहुत रास पोथी पढ़बाक अवसर सेहो भेटए लगल। क्रमश: सम्बन्ध बढ़ैत गेल।

मैथिलीक एक ससक्त प्रहरी उमेशजी हमरासँ किछु निवन्ध ओ स्फूट कविताक मांग कएलन्हि। हम हुनका समर्पित कऽ अपनामे उत्साह ओ दबल स्फूर्णाक जाग्रत करबाक चेष्टामे छी।

हम उमेशजीक दीर्घ जीवनक कामना करैत छियन्हि।

अस्तु..!

विगत जीवनक झाँकी-

हम जखन नेना रही तँ बुढ़-पुरानक मुहसँ सुनैत रही जे हटनी गाम बड़ उपजाउ अछि। एहिठामक गाछी-बिरछी अति सघन छलैक। हमर पितामह बाबू प्रसाद झा वैष्णव धर्मक पालन करैत घरसँ फराक बुढ़िया

पोखरिक महारपर कुटी वनाय रहथि। हुनक भोजन, माइनजन काका बनाबथि आ दुनू गोटए भोजन करथि। कालक्रमे हुनक अवसान भेलापर पिताजी चारि भाँइक भैयारी रहन्हि। खेतीक कार्य हमर पिताजी देखथि। माल-जालक कार्य पित्ती अनन्त झाक ऊपर संगहि जेष्ठ भाई उग्र मोहन झा मधुबनीमे अधिकांश समय बितबैत रहथि। हठात् कोसीक प्रकोप एहन भेल जे हटनीक रूप साफ बदलि गेल। ऊपजा-वारीक जगह काश-पटरेक बाहुलता सर्वत्र देखाए लगल।

हमर मातृक भवानीपुर नरुआरमे स्व. वलदेव पाठकक तीन भाँइ भैयारीक बीच छल। मझिला नाना स्व. भुटकून पाठक अनन्य शिव भक्त छलाह। हुनकर सहृदयता हमरा मायक प्रति विशेष रहन्हि। हमरो बचपनक अधिकांश समय नरुआरेमे बितए। माम् स्व. राजकान्त पाठक ओ ममियौत दशरथ पाठक संगहि माम चुनचुन पाठक हमरा पिताजीक गृहस्तीमे महती योगदान रहन्हि। समय-समयपर हर-बरद ओ हरवाह पठाए खेतीमे मदैत करथि।

संयोगवश, 1955 ई.मे कोसीक तटवन्ध बनल। हटनी प्रभृति इलाका पुनश्च जलमग्न भऽ गेल। पाँच वर्ष तक भूमि जलमग्न रहल। एहन स्थितिमे गाम-घरसँ लोक भागि कए कलकत्ता, जलपाईगुरी, दिनाजपुर इत्यादि जगहक भ्रमण कए रोजीक जोगारमे चल गेल।

मोन अछि हटनीसँ प्रत्येक दिन 5 मीलक दूरी तय कए डेवढ़ हाई स्कूल अबैत रही। ओतहिसँ मैट्रिक प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलहुँ। आर्थिक स्थिति लचरल रहबे करए। पिताजी खेती-बारी कार्य आरम्भ कएलन्हि। हमहूँ गाम आबी तँ हमहूँ ओहि काज सभमे सहयोग करियन्हि।

रामानन्द मिश्र भूगोलक शिक्षक कहलन्हि जे भूगोल विषय अबस्स राखू। राम कृष्ण महा महाविद्याल- मधुबनीमे भूगोल विषयक अंगीकार कएल। भूगोलमे प्रतिष्ठा तँ भेटल मुदा व्यर्थ भेल। स्नातक प्रतिष्ठा भेलापर

नेपालक तराईमे एक हाई स्कूलमे शिक्षक भेलहुँ। तीन वर्ष धरि ओतए समय बिताउल। पश्चात् अपन मातृ भाषा- मैथिलीमे स्वतंत्र छात्रक रूपमे परीक्षा देलहुँ। हमरा सभक केओ मददगार नहि तँए स्व. रमानाथ झाजी द्वितीय वर्ग देलन्हि। मुदा मार्क 56% छल तँए जखन कमीशनमे उपस्थित भेलहुँ तँ स्व. गुरुवर बुद्धिधारी बाबूक आशीर्वाद ओ तात्कालीन एस. आर. अहमद चेयरमेन छलाह। हमरा अनेक तरहक प्रश्न पुछलन्हि आ हमर प्रश्नोत्तरसँ संतुष्ट भए हमर नाम सेवा अयोग द्वारा निर्मली कॉलेज निर्मली अग्रसारित कऽ देल गेल। स्व. रामसेवक सिंह तात्कालीन प्रधानाचार्य हमर नियुक्ति कऽ स्थायी हेतु अग्रसारित कऽ देलन्हि। 12 अगस्त 1972 ई. तक यथावत हमरालोकनि कार्यरत् रही। 1980 ई.मे तृतीय चरणमे डॉ. जग्रनाथ मिश्र मुख्य मंत्री रहथि ओ निर्मली कॉलेजकेँ सरकारी सूचीमे सामिल कऽ देलन्हि। तहियासँ हमरो लोकनिक आर्थिक स्थिति सुधरए लागल। 36 वर्ष धरि एहि महाविद्यालयमे सेवा देलहुँ। अन्तमे प्रधानाचार्यक कुरसीसँ 15 मार्च 2009 ई.मे अवकाश प्राप्त कएल।

सम्प्रति कॉलेजमे अनवाक श्रेय प्रो. गोविन्द शरण सिंह ओ दिनेश प्रसाद सिंहकेँ छन्हि, जनिकर आभारी हम एखनहुँ छी। मैथिलीमे स्व. जय गोविन्द झा विभागाध्यक्ष रहथि। हमरा लोकनिक प्रयाससँ मैथिलीमे आनर्सक पढ़ाइ चालू भेल आ प्रथम बैचमे छह गोट छात्र मैथिलीमे प्रतिष्ठित भेला। बादमे जय गोविन्द झा प्रधानाचार्य भेला तँ मैथिलीक पूरा भार हमरा कान्हपर पड़ल।

हम समय-समयपर आकाशवाणी दरभंगासँ सेहो 1982 ई.सँ साहित्यिक वार्तामे भाग लैत रहलहुँ। सर्व प्रथम जखन हमरा आकाशवाणी दरभंगासँ प्रसाणक हेतु बजाओल गेल तँ असमंजसमे पड़ि गेल रही। हठात् श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक स्मरण भेल। हम निर्मलीसँ दरभंगा गेलहुँ। मिसर टोलमे हुनकर निवास स्थानक पता

चलल। हम जाइत देरी हुनक चरण स्पर्श कएल। अह्लादित भए पूछलन्हि- अहाँक नाम-परिचय? हम कहलियन्हि- 'बचेश्वर झा नाओं छी, निर्मली महाविद्यालयमे मैथिली विभागमे शिक्षक छी। हमरा आकाशवाणीसँ प्रसारणक हेतु पत्र प्राप्त भेल अछि। हम तँ कोरा कागज छी तँए अपनेसँ भेँट करए आएल छी। बड़ सिनेहसँ हमरा बैसा कए कहलन्हि जे समय निर्धारित रहैत छैक, तँए विषय-वस्तुक उद्घोष संक्षे9मे करब। कोशिश करब जे आवाज प्रष्ठ हुअए, घबड़ाएल सन नहि बुझना जाए। जाउ अहाँक प्रथम-प्रसारण थिक संतोष प्रद रहत...। हम हुनका ससिनेह नमन करैत निर्मली एलहुँ। हमर प्रसारण ठीक रहल। लगातार 16 वर्ष धरि आकाशवाणीसँ वार्ताकारक रूपमे हमर प्रसारण होइत रहल।

साहित्यिक अभिरूचि एखनहुँ अछि। बोझ तरक दूबि जकाँ छलहुँ, संयोगसँ उमेश मण्डलजी हमरामे स्फूर्ति जगाओल आ हमर रचनाकेँ उजागर करबाक अथक श्रम कएल, फलाफल आइ अपने लोकनिक हाथमे 'निवन्ध-निकुञ्ज' अछि। संगहि काव्यक एक पोथी सेहो हिनका द्वारा मुद्रित भए रहल अछि। 'निवन्ध-निकुञ्ज' अपनेक समक्ष अछिए तँए तत्सम्बन्धि किछु कहब आवश्यक नहि, अपनहि लोकनि ताहिपर विचार करब।

बचेश्वर झा

निर्मली
7 सितम्बर 2018

अनुक्रम-

विद्यापतिकालीन मिथिलाक कृषि

जाहि समयमे विद्यापतिक आर्विभाव मिथिलामे भेल छल ओ संक्रमणक काल छल। सामाजिक विश्रृंखलताक कारणेँ किछु लोक काज-धन्धा करबासँ मुँह मोड़ने छल। जे केओ काजुल, परिश्रमी छलो ओहो ननुचमे परि कर्त्तव्यहीन जीवन बितेनिहार भऽ गेल छल। मिथिलामे खेती आ पशुपालनक सिवाय दोसर जीविकाक साधनो तँ नहि छलैक। सीमित साधनो अछैत खेती करनाइ असौकर्ज बुझि दिनानुदिन आर्थिक दुर्वलताक शिकार होइत रहल। इएह कारण भेलै जे एतुका लोकक आर्थिक अवस्था लचड़ि गेलैक। एतबे नहि, किछु लोक कृषिक उपेक्षा कऽ भीख मांगब श्रेयस्कर बुझए लागल। एहन लोककेँ समाज घृणाक दृष्टिसँ देखैत छल। तेँ एहि प्रवृतिक लोकक ध्यान खेतीक ओर आकृष्ट करबाक निमित कहबी चरितार्थ भेल-

"उत्तम खेती मध्यम वाण,
निषिद्ध चाकरी भीख निदान।"

तात्पर्य ई जे खेती करब सभसँ उत्तम मानल गेल। व्यवसाय करब मध्यम। नौकरी करब अधम मानल गेल। सभसँ अधलाह- भीख मांगब बुझल गेल। जहाँ तक नौकरीक गप्प छैक, आजुक समयमे नौकरियेकेँ प्राथमिकता भेटल छैक। ओ भलेँ सम्पन्न परिवारक किएक ने होथि, नौकरी हेतु अपस्याँत देखल जाइछ। एहनो समय छलैक जखन नौकरी

कएनिहारकेँ समाजमे कुचर्चा होइत रहैक। एहिसँ ईहो ज्ञात होइछ जे आत्म निर्भरताक शिक्षा देल जाइत छल।

महा कवि विद्यापति अपन रचना 'लिखनावली' आ 'वर्षकृत्य'मे मिथिलाक कृषिक बहुविधिवर्णा कहल अछि। संगहि कृषिकेँ उपेक्षाक दृष्टिसँ देखनिहारकेँ एहि ओर आकर्षित करबा लेल अपना रचनामे शिव आ गौरीक माध्यमसँ उपदेश देल अछि। विद्यापतिक मात्र उद्देश्य अकर्मण्यताक अन्मूलन करब छल।

"बेरि-बेरि अरे शिव मो तोय बोलो,

कृषि करिअ मनलाई,

भिखि मांगिए पर गुण गौरव दूरिजाय,

निर्धन जन बोलि सबे उपहासे,

नहि आदर। अनुकम्पा।

तोहें शिव पाओल आक-धतूर,

हरि पाओल फूल चम्पा।।"

भूमिक अधिकता आ जन संख्याक न्यूनताक कारण खेती अदलि-बदलि कऽ होइत छलैक। जाहि खेतमे एहि वर्ष धान गृहस्थ करैत छल, ओकरा परती छोड़ैत छल। ई करलासँ साल भरिमे खेतक ऊपज शक्ति बढ़ि जाइत छलैक। भूमि तीन श्रेणीक मानल गेल छल।

विद्यापतिक समयमे पहिल श्रेणीमे गोचर, दोसर श्रेणीमे ऊपजाउ आ तेसर श्रेणीक वंजर।

गोचर भूमिमे अनेक प्रकारक घास लगाओल जाइत छल जे पशुपालनक हेतु प्रमुख छल। ई गोचर भूमि साधारण गाममे एक सय दंड, पैघ गाममे दुई सय दंड एवम् नगरमे चारि सय दंड छोड़ल जाइत

छल। वंजर भूमिकेँ तोड़ि कऽ खेतीक योग्य बनाओल जाइत छल। एहन भूमिकेँ विद्यापति खील भूमि कहलखिन्ह। एहन प्रकारक भूमिमे खेती कएनिहार भू-स्वामीकेँ सात वर्ष धरि ऊपजक आठम भाग दैत छल। तत्पश्चात् भू-स्वामीक अनुसार उपजक स्वामीत्वमे परिवर्त्तन भऽ जाइत छलैक। एखनहुँ परती जमीनमे खेती कएनिहारकेँ सुविधा देल जाइत छैक। एहि सुविधाक समय निर्धारित नहि छैक। जगह-जगहपर अन्तर देखल जाइत अछि।

ओहि समयक समाज दू वर्गमे बँटल छल। एक वर्ग राजा महाराजाक सामन्तादिक छल। एहन वर्गक लोकक खेती-पथारी दूर-दूर धरि होइत छलनि। ओतए ओ लोकनिक खेती करबाक मिश्रित्त कर्मान्तिक अर्थात् कमतियाकेँ रखैत छलाह। एकर अतिरिक्त आरो अधिकारी वर्ग ओकर काजक निरीक्षण करबाक लेल राखल जाइत छल।

समाजक दोसर वर्ग दलित वर्ग छल जे स्वयं अपन खेती करैत छल। एहन वर्गकेँ खेतीमे अपन पत्नीसँ सेहो सहयोग भेटैत छलनि। खास कऽपशुक हेतु सभ प्रकारक व्यवस्था स्त्रीगणे द्वारा होइत छल। महादेवकेँ मैथिल होएबाक प्रमाण कहक ईहो भऽ सकैछ। हुनक सासु मैना स्पष्ट रूपसँ कहैत छथिन्ह-

> "हमर धिया जखन सासुर जयतीह तखन ओ घास काटि लौती आ बसहा चरौती।"

खेती-पाती हर एवम् कोदारिसँ ओहू समयमे कएल जाइत छल। हरक व्यवहार विद्यापति साहित्यक संगहि तत्कालीन साहित्यमे सेहो कतेको स्थलपर कएने छथि। विद्यापति अपन वर्ष कृत्यमे हरक मुहुर्त्तक उल्लेख कएने छथि। ओहि दिन बरदक सिंहमे मक्खन गूड़ आदि रगड़ल जाइत छल। प्राय: ओहि दिन धनी-मनी व्यक्ति हरक-फारक आगूमे सोना लगबैत छल। विद्यापति कहैत छथि सोन लगायब एक विधान

छल।

एक तरहक कहबी छैक वा लोक धारणा जे पंचमीक मुहुर्त्तमे हर जोतबा काल जौं बरद चित्कार करए वा मेमिया तँ चारि गुणा उपज होएबाक संकेत भेटैछ। ओहि दिन पाँच सिरोर जोतबाक विधान छलैक।

विद्यापतिक लिखनावलीक एक पत्रमे हरक हेतु धुरन्धर बरदक चर्चा आयल अछि। खगौट भेलापर गृहस्थ एहन धुरन्धर बरदकेँ बन्हकी रखैत छल। एहिसँ ओहि समयक समाजक लचरल अवस्थाक परिचय भेटैत अछि। सम्पन्न गृहस्थ हरबाह खेत जोतबाक निमित रखैत छल। हरवाहीक अलाबा अन्यो काज हरबाहसँ करबैत छलाह।

विद्यापतिक एक पद्यमे उल्लेख आएल अछि जे गौरी शिवसँ खेती करबाक लेल कहैत छथिन्ह, तखनुक ई पाँती अछि-

“खटंग काटि हर हर जे बनाविअ,
त्रीशूल तोड़ि करू फार।
बसहा धुरन्धर हर लए जोतीय,
खेत खोला पहाड़।”

धनी-मनी व्यक्तिक ओहिठाम कमतियाक ऊपर महत्म होइत छल जकरा निरीक्षक समान पद होइत छलैक। कामत परक खेती-पथारीक सभ प्रकारक खबरि कमतियासँ लैत रहैत छल। कोन खेतमे कोन तरहक अन्न उपजाओल जाय संगहि खेत कोना जोतल जाय, कोन खेतमे आरि ऊँच्च कए बान्हल जाय संगहि कोन खेतमे कतेक लागत लगाओल जाय इत्यादि इत्यादि तकर जिज्ञासा महतम कमतियासँ करैत छल।

विद्यापतिसँ पूर्व मैथिली डाक आ घाघ भेल छलाह जनिका मिथिलाक कृषि कार्यक उद्गेता कहल जाइछ। मै. डाककेँ प्रकृतिक गहन अध्ययन छलन्हि। एखनहुँ डाक वचनावलीक अनुसार मिथिलाक गृहस्थ कृषि कार्यक समीक्षा कऽ सचेत भऽ जाइत छथि। डाकक कहब

छल- गृहस्थ छोट-क्षीण बरद नहियों राखथि मात्र दुई गोट धुरन्धर बरद कीनि खेती करथि। अपन खेती भेलापर अनको खेतीक हेतु मंगनी देथि। हुनक शब्दमे-

"नाटा बरद बेचि कए, दुई धुरन्धर कीन,
अपन खेती करि कए आनकेँ मंगनी दीन।"

एतबे नहि, ओ कहने छथि खेतक उपजा जोतपर निर्भर करैत अछि।

थोड़ के जोतिए अधिक महिमविह अविए,
ऊँच के बान्हिए आरि।
जौं खेत तैयो नहि उपजए तँ
डाक के परिह गारि।

एहि लेल विद्यापतिकालीन महत्तम कमतियाकेँ सलाह दैत छलाह जे हरसँ तैयार कएला बाद खेतकेँ कोदारिसँ साधब उत्तम होइछ।

मिथिलाक कृषिमे पर्याप्त वर्षाक अभाव प्राग ऐतिहासिक कालहिसँ रहल अछि। मानसून एतुका हेतु जुआवाजी कहल गेल अछि। किएक तँ अति वृष्टि अनावृष्टि आ दुर्भिक्षक शिकार एतुका गृहस्थ होइत रहलाह अछि। तेँ पटौनीक प्रभाव समय-समय पर होइत छलैक।

विद्यापति साहित्यमे सेहो पटौनीक उल्लेख भेटैत अछि। पटेबाक एक यंत्र विशेषक चर्चा कएने छथि। यथा- रहट संस्कृत अरधट्ट आ प्राकृतिक अरहट्ठ। एहि यंत्रसँ अहुखन इनार वा कूपसँ पानि बहार कएल जाइछ। एकर अतिरिक्त चर, चाँचर, डबरा, खत्ता आ पोखरिसँ करीन द्वारा पटौनीक काज लेल जाइत छल। तत्कालीन राजा द्वारा बड़का-बड़का पोखरि खुनाओल गेल छल।। मिथिलामे एहन अनेको पोखरि विद्यमान अछि, जकर सकल आब बदलि गेल छैक। एहि तरहक पोखरि

रजोखोरि कहबैत छल। किवदन्ति छल जे दैत्य द्वारा एहन विशाल पोखरि खुनल गेल छल।

विद्यापति तँ मात्र नदीक उल्लेख कएने छथि- गौरी जखन शिवसँ खेती करबाक आग्रह कएलनि तँ शिव कहलथिन्ह-

"सभ बात मानल मुदा पानिक अभाव भेलापर की होयत? तखन खेती तँ करब असौकर्ज होएत।"

एहिपर गौरी उत्तर देलनि-

"पाटय सुसरि धारा।"

एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे तत्तयुगीन मिथिलामे पटौनीक काज गंगानदीसँ कएल जाइत छल।

ओहि समयक कृषकमे प्रगाढ़ प्रेम होइत छलनि। एक-दोसरक हित चिन्तनक संग अति आदरक भाव रखैत छलाह। खेतसँ उपज निर्विघ्न घर आबए तेँ बाधक हेतु रखवार राखल जाइत छल। अहुखन मिथिलाक गाममे रखवार रखबाक प्रथा अछि। रखवारकेँ विशेष अधिकार गृहस्थक द्वारा देल गेल छल। कहुखन ई रखवार खेतक पूर्ण उपजकेँ हथिया लैत छल जे विद्यापतिक पदसँ ज्ञात होइछ-

"खेत कएल रखवारे, लूटल ठाकुर सेवा भोर।"

यदा-कदा एहनो होइत छलैक जखन खेतीक समय बीति जाइत छल तखन वर्षा होइत छल। जेकर विद्यापतिक पदसँ पुष्टि होइछ-

"समय गेले मेघे वरिसब,

की दहु तेँ जलधार।"

एहना स्थितिमे वर्षाक पानिकेँ रोकबाक हेतु खेतमे ऊँच्च आरि बान्हल जाइत छल ताकि खेतसँ पानि ससरि नहि जाय। विद्यापतिक पद्यसँ संकेत भेटैछ-

"गेला नीड़ निरोधक की फल।"

पुन: विद्यापति अपन रचनामे प्रेम रूपी फूलक हेतु शीलक आरि बान्हि मर्यादाक रक्षा कएने छथि-

"फूल एक फूलवारि लगाओल मुरारि,
जतने पटओलन्हि सुवयन वारि।
चौदिस वॉधलि सीलक आरि,
जीव अवलम्वन करू अवधारि।"

एहिसँ ईहो ज्ञात होइछ जे लोक भूमिकेँ छोट-छोट टुकड़ीमे बाँटि खेती योग्य बनबैत छल। विद्यापतिक समयक कृषकक समस्त उपजाक अन्नक उल्लेख कतहु एकठाम नहि भेटैत अछि। तखन एतए मसूरी, राहड़ि, सरिसो, तिल जौ आदिक अवश्य उत्पादन होइत छलैक। जतेक प्रकारक अन्नक उल्लेख भेल अछि ओ सभ अन्न विभिन्न अवसरपर मिथिलामे विभिन्न देवी देवताक प्रसन्नताक हेतु दान कएल जाइत छल। एकर सांगोपांग वर्णन विद्यापतिक 'वर्षकृत्य'मे भेटैत अछि।

अनुकूल समयसँ यथेष्ट उपज होइत छलैक। गृहस्थी नीक हालतमे भेलासँ मिथिलाक लोक बाहर नहि जा कऽ घरहि रहैत छल। कहबी छलै-

"कर खेती घरही भला।"

इएह कारण छल जे एतुका जनमानस वाह्य परिवेशक अनुभवसँ वंचित रहल। विद्यापतिक पूर्व जहिना गृहस्थीसँ उदास लोक छल तहिना कविक रचनाक प्रभावसँ गृहस्थीक ओर झुकाव भेल छल। खेतीसँ उत्पन्न अन्नक उपयोग मोला व्यवस्था द्वारा चलैत छल। मोलाक अन्तर्गत क्रय-विक्रयक विधान छल। एकरो उल्लेख विद्यपतिक लिखनावलीमे आयल अछि। तौल-नापक व्यवस्थामे टंक और मानी पांथी चलैत छल। 4 मानी

एक टंक होइत छलैक। ओहि समयक 1 मानी आजुक 16 सेरक बरा-बर होइत छलैक।

खेतसँ पर्याप्त धानक प्राप्तिक प्रमाण छलैक जे पैघ गृहस्थ डेढ़िया वा सवाईपर कर्जा लगबैत छलाह। कर्जाक अदायगी अगहन मासमे नवका धान भेलापर होइत छलैक। विद्यापतिक लिखनावलीमे कृषि सम्बन्धी चर्चा विलक्षण ढंगसँ कएल गेल अछि।

अस्तु...! ❑

लेखन तिथि : 4 अगस्त 1993

एवम्

आकाशवाणी दरभंगासँ प्रसारित : 7 अगस्त 1993

विद्यापतिक रचनामे विरह वर्णन

विद्यापति अपन वहुमुखी प्रतिभाक परिचय अपन रचनामे देलन्हि अछि, मुदा काव्य प्रतिमाक वास्तविक परिचय हुनक विरह गीतसँ होइत अछि। प्रेमक प्रगाढ़ता संयोगमे नहि वियोगेमे होइत छैक। महाकवि राधाक विरह-वेदनाक सजीव आ मर्मस्पर्शी वर्णन कएलन्हि अछि। जौं सूर विप्रलम्भ श्रृंगारमे गोपीक वेदनाक टीसकेँ भ्रमर गीतक अन्तर्गत उजागर कएलन्हि तँ विद्यापति सूक्ष्म दृष्टिसँ राधाक मनोदशाक विछोहावस्थाकेँ विरह गीत रूपमे उजागर कएल अछि।

समयानुकूल विरहिणीक स्थितिक स्वाभाविक वर्णनमे विद्यापतिक कलम माजल छन्हि।

साहित्य शास्त्रमे श्रृंगार रसकेँ रस राजक संज्ञा देल गेलैक अछि। कमनीयताक कारणेँ अन्य सभ रससँ एकर स्थान उच्च मानल गेलैक अछि। कविक वर्णनमे सत्यता रहबाक चाही ई सत्यता प्रेम वर्णनमे सर्वाधिक पाओल जाइत अछि।

प्रेमक चित्रणमे 'विरह'केँ महत्वपूर्ण स्थान देल जाइत छैक। विरहक द्वारा प्रेमक प्रगाढ़ताक पूर्ण परिचय भेटैत छैक। विरह ओ कसौटी थिक जाहिपर प्रेम सुवर्णक परीक्षा होइत अछि। एकर अधिकतामे प्रेमी एवम् प्रेमिकाकेँ एक दोसराक प्रति वास्तविक भावावेश एवम् तन्मयता होइत अछि। विरह प्रेम जीवक एक मर्मस्पर्शी घटना

थिक। एहिसँ प्रेमक परिपुष्टि होइत अछि। विरह एक प्रकारक पुट थिक। बिनु पुटे वस्त्रपर रंग नहि चढ़ैछ।

साहित्य-दर्पणमे उल्लेख अछि-

"न बिना विप्रलम्भेन संयोग: सुखमश्नुते, कषायिते वस्त्रादो भूयान राग: प्रवर्त्तेत।"

अर्थात् बिनु विरहक प्रेमक स्वतंत्र सत्ता नहि। एही रूपेँ बिनु प्रेमक विरहक अस्तित्व नहि। प्रेमक अग्निकेँ प्रज्जवलित करैछ विरह-पवन, प्रेमक अंकुरकेँ बढ़बैछ विरह जल, प्रेम दीपक वर्त्तिकाकेँ उस कबैछ विप्रलम्भ। विरह-वेदना मधुममी होइछ। एहिमे रूदन एवम् आमोद सामने भाषित होइछ। संयोगक अवस्थामे हृदयमे आशा एवम् निराशाक ओतेक द्वन्द्व नहि होइत अछि जतेक विरहक अवस्थामे। वरहमे वासनाक अन्धकार प्राय: लुप्त भए जाइत अछि तथा प्रेमक विशुद्ध अनुभूतिमे विरही डूबि जाइत अछि।

श्रृंगार तथा विरहक एतेक महत्वकेँ जनैत विद्यापति अपनाकेँ ओहिसँ फराक कोना रखितथि? एहि विरह वर्णनक हेतु विद्यापतिक लेखनी सेहो चलल आ चलबेटा नहि कएल अपितु अपना रचना शक्तिक भाव एवम् अनुभूतिक बलसँ समस्त भारत वर्षकेँ भाव-विभोर कए देलक।

विरह-वर्णनमे विद्यापति हृदयक अनेक भावकेँ निरलंकारिक भाषामे एहि सरलतासँ चित्रित कएल अछि जे ओ भाव सभ हृदय पटलपर स्वभावत: अपन अधिकार स्थापित कए लैछ।

विद्यापतिकेँ महाकवि कहएबाक एक प्रधन कारण ईहो थिक जे विरह एवम् विरहक पश्चात् मिलनक वर्णनमे हिनकर स्थान उच्चत्तम रहल अछि। एहि मिलनमे ओ जे अपन स्वाभाविकता भवुकता सुन्दर कल्पना तथा पद्य योजनामे कमनीयता देखाओल अछि से एक महान कविए सँ

सम्भव भए सकैछ। प्रेम सूत्रमे ग्रथित नायक लोकनिक चित्र हुनक काव्यमे सहसा जीवनक चांचलय प्रदर्शित कए देलक।

पं. जगन्नाथ साहित्य दर्पणमे विरह अथवा काम दशाक दश अवस्था कएल गेल अछि-

अभिलाषाश्चिन्ता स्मृति गुण कथनो द्वेग सप्रलाप उन्मादो व्याधिर्जड़ता मृति रिति दशात्रश्य कामदशा अर्थात् स्मरण, गुण-कथन, अभिलाषा, मूर्च्छा, व्याधि, उद्वेग, प्रलाप, जड़ता, उन्माद एवम् मरण। एहि दस अवस्थाक अतिरिक्तो अनेक भावक चित्रण विद्यापति कएलन्हि अछि। विरहक महत्वपर दृष्टिपात करैत विद्यापति लिखैत छथि-

"जेहन विरह हो तेहन सिनेह।"

प्रेमक असली स्वादक अनुभव विरहेक अवस्थामे वास्तविक रूपसँ भेटैत अछि। विद्यापतिक विरह व्यथिता राधिका अनभिज्ञ छथि। हुनका समीपमे नहि छथिन्ह। राधा हुनक वियोगमे शुष्क शीर्षा सुमनक सदृश्य धाराशालिनि छथि। हुनक अश्रुप्रवाहसँ भूमि कर्दमचुक्त भए गेल अछि। राधा ओहि थालबला भूमिपर लेटा रहली अछि। हुनक सखी सभ कृष्णक आगमनक आश्वासन दैत छथिन्ह परन्तु ई आश्वासन विरहग्निमे घीक काज करैत छन्हि। हिनक यौवन विरहक वेदनासँ दिनानुदिन क्षीण भए रहलन्हि अछि। हुनक व्यथा अधिकतर भए जाइत छन्हि।

विद्यापति राधाक हृदयक मनोवैज्ञानिक वर्णन करैत छथि-

"अंकुर तपन ताप यदि जारब, कि करब वारिदमेहे,
ई नव यौवन विरह गमाएब कि करब से पिया ने हे।
हरि हरि की इह दैव दुराशा,
सिन्धु निकट यदि कंठ सुखाएब के दूर करत पिया सा।।"

एहिठाम दृष्टान्त दए राधिका जे अपन हृदयक दुख रखलन्हि अछि

से सहृदय संवेदय थिक। सहसा भावावेशमे आबि विधाताकेँ 'हरि-हरि की दए दैव दुराला' कहि भर्त्सना करैत अछि। एतए मधुमयी वेदनाक चित्रण कएल गेल अछि।

सखीक सम्वादसँ जखन काज नहि चलैत छन्हि तखन राधा स्वयं कृष्णकेँ रोकबाक प्रयास करैत छथि-

"माधव तोहे जनु जाए विदेशे

हमरो रंग रभस लए जएबए लएवह कोन संदेशे,

बनहि गमज करू होइत दोसर मति विसरि जएव पति मोरा।

हीरा मणि माणिक एको नहि मांगव फेर

मांगव पहु तोरा।।"

एतए राधाक प्रेमक अलौकिक रसास्वाद अछि। तर्कक अनुसार आदान-प्रदान सेहो होएबाक चाही। रंग-रभसक प्रति बदला की दए सकताह? ओ थिक कृष्णक प्रेम। राधाक याचना। फेर मांगव पहु तोरा, नि:स्वार्थ प्रेमक भाव स्पष्ट रूपसँ प्रदर्शित भेल अछि।

कृष्ण मथुरा प्रस्थानक वार्तासँ सम्पूर्ण गोकुल शोका कुल भए गेल अछि। सर्वत्र अश्रुक प्रवाह एवम् करूण चीत्कार प्रारम्भ भए गेल अछि।

अव मथुरापुर माधव गेल, गोकुल माणिक के एहि लेल।

गोकुले उछलला करूणाक रोल नयन जले

देख बहए हिलोल।

राधा बहुत दिनसँ आशा लगौने छलीह जे कृष्ण औताह। अवधिक अवसान भऽ गेल। बाट तकैत-तकैत दू-दू नेत्र परिश्रान्त भए गेलन्हि। अन्तमे निराश भऽ विलाप करए लगलीह।

लोचन धाम फेदायल हरि नहि आएल रे,

शिव-शिव जिवओ ने जाए आस अरू झाएल रे।

पहिने राधिका कृष्णक प्रेमक केन्द्र विन्दु छलीह। एखन सभटा विपरीत भए गेलन्हि अछि। तखन अपनाकेँ साँझक तारा बुझैत छथि। जकर दर्शन अशुभ होइछ, संगहि भादवक चौठीक चान अपन मुखकेँ बुझैत छथि जकर र्दन अशुभकारी मानल जाइछ- विरहाग्निमे दग्ध राधिकाक लेल ई जतबा आश्चर्यक विषय भेल ओतबए लाजोक। विरहाग्निसँ जर्जरित राधाक हृदयक टीस स्पष्ट अछि-

"की हम साँझक एकसरि तारा, भादवचौठीक शशी,

इथि दुहु झांझ कओन मोर आनन जे पदुहुँ न हेरथि।।"

कालिदासक रति अपना विलापमे कहैत छन्हि-

"मदनेन विना कृतारति: क्षण मात्रं किल जीवितेतिमे,

वचनीय मिदं व्यवस्थितं रमणस्वा मनुयामि।"

यद्यपि।

एतएव देखैत छी जे विद्यापति कालिदासहुक विरह-वर्णनसँ टपि जाइत छथि। एतए विरह वर्णनमे कविक कल्पनाक चातुर्यदर्शनीय अछि-

"लोचन नीर तटनि निर्माणे, ततहि कलामुखि करए सनाने।

सरस मृणाल करहुजप माली, अंहरनिश जप हरिनाम तोहारी।।"

अर्थात् विरहिणी राधिका नयनक अश्रुसँ नदीक निर्माण कए ओहीमे स्नान कए रहल अछि, तात्पर्य जे ततेक अश्रुपात भेलन्हि अछि जे ओ नदीक रूपधारण कए लेलक अछि।

कृष्णक मिलनक आशा समाप्त भए गेलापर नायिका राधा अपन सौन्दर्यक त्याग करए लगलीह अछि। मात्र शरीर एवम् स्नेह शेष बचि गेल छन्हि-

"सरदक शशिधर मुख रूचि सोपलक हरिन के लोचन

लीला।

केसपाल लए चामरि के सोपलक पाए मनोभव पीड़ा।।”

पावसकालीन विरहोद्वेगक एकसँ एक उत्तम पद्य पदावलीमे पाओल जाइत अछि। दु:खाभिभूत राधाक करूण क्रन्दन हृदय विदारक एवम् करूणोत्पादक अछि। एहि समयक प्रत्येक वस्तु जे संयोगक अवस्थामे आनन्द दायक अछि राधाक हृदयकैं विदीर्ण कए रहलन्हि अछि। प्रियतमक विरहमे ओ सभ वस्तु कष्टदायक छन्हि।

सखि हे हमर दुखक नहि ओर...।

विद्यापति कह कैसे गमाओ हरि बिनु दिन रातिया।।

एहि पदक अक्षर अक्षरसँ भग्न हृदयक हाहाकार प्रति ध्वनित भए रहल अछि। दुखक आगि ज्वालामुखी बनि फूटि पड़ल अछि। हरि बिनु केसे गमाओल दिन रातियाक भावक कविता रवीन्द्रनाथ सेहो लिखलन्हि अछि-

तुमि यदि नादाओ, करो अमाम हेला।

केमन करे कारबे आमार एमन बादल बेला।।

संस्कृत साहित्यमे एहि प्रकारक अनेक वर्णन अछि-

“इतो विधुद्वल्ली विलसित मित: केतकितरो,

स्फुरद्गन्ध प्रोधजलद निनाद स्फूर्जितमित:

इत: केलिक्रीड़ा कलकलरव: पक्ष्मलद्वशां

कथं भात्स्यन्तेते विरह दिवसा: संमृतरसा:।।”

राधाक प्रेमक तन्मयता एतेक बढ़ि गेल अछि जे ओकर वर्शान्त नहि भए सकैत अछि। ओ कृष्णक नाम लैत-लैत एतेक तन्मय भए गेल छथि जे ओ अपनाकैं स्वयं कृष्ण मानए लगैत छथिन तथा राधा-राधा जपए लगैत छथि। तत्क्षणहि हुनका अपन वास्तविक दशाक ज्ञान भऽ

जाइत छन्हि। तथा विरहक तीव्र वेदनासँ ओ आकुल भए उठैत छथि।

अनुखन माधव-माधव रटइत राधा भेलि मधाई।

भेल सन्देह।।

एतए प्रेम पराकाष्ठापर पहुँचि गेल अछि। नायिका राधाक रूपमे सेहो तथा कृष्णक रूपमे सेहो दुनू अवस्थामे मर्मव्यथा सहैत छथि। एहि पदमे विद्यापति प्रेमक तन्मयताक एहन चित्र उपस्थित करैत छथि जे संसारक सम्पूर्ण साहित्यमे अपन सभता नहि रखैत अछि। एहि प्रकारसँ विरहमे मिलन एवम् मिलनमे विरहक वर्णन विद्यापतिहिक उत्कृष्ता थिक।

विद्यापतिक विरह वर्णन कएक विशेषता ई अछि जे हुनक नायिका विरहमे रहितहु अपन भाग्यक दोष दैत छथि नायकक नहि। हिनक राधिका कुलवती ललना छथि तैं प्रेममे जतेक बाधा, यातना आर जतेक व्यथा सहैत जाइत छथि हुनक प्रेम सोना जकाँ ओतेक चमकैत जाइत छन्हि। स्वप्नोमे ओ कृष्णकेँ कटुक्ति नहि कहैत छथि। अप्पन कर्मक दोष तथा कि करत नाह दैव भेलवाम।

एहि प्रकारे अछि-

"सखि कहि कहब अपतोष, हमर अभाग पियाक नहि दोष।।"

अन्तमे युग-युग जीवथु लख कोष हमर अभाग हुनक नहि दोष।।

विरहिणीक चित्रण कालिदासक शब्दमे-

"कल्याण वुद्धैरथवा तवाणं न कामचारी ममिशंक नीय:।

ममैव जन्मान्तर पातकानां विपाक निस्फूर्जथुर: प्रसक्ष्य।।"

सीता सेहो पूर्व जन्म पापकेँ अपन दुखक कारण मानैत छथि। एक स्थलपर तँ राधा निराश भऽ मृत्युक अभिलाषा करैत छथि जे भावोत्पूर्ण अछि-

"आन करह हिय विहि कएल आन,
अवहु न निकसए कठिन परान।।"

विद्यापतिक विरहमे प्रकृतिक उद्दीपन, रूपक चित्रण श्रृंगार रसक स्थायी भाव रतिकेँ जाग्रत करबामे सफल भेल अछि। जाग्रतावस्थामे तँ कृष्णसँ मिलन असम्भव अछिए, स्वप्नहुमे नायिकाकेँ कृष्णसँ मिलन नहि भऽ पबैत छन्हि। तेँ नीन नहि होइत छन्हि-

"सपनहुँ संगम पाओल, रंग बढ़ाओल रे
से मोर विहि विधटाओल नीन्दओ हेरायल रे।।"

निन्द होइतन्हि कोना? ओ तँ प्रियतमक संग विदेश चल गेलन्हि-

"सपनेहु तिलाएक तन्ह सों रंगे,
निन्द विदेसल तन्हि पिआ संगे।।"

कालिदासक यक्षिणी- 'त्वंहितस्म प्रियेति' कहि कऽ पतिक विरहकेँ सहन करैत छथि। किन्तु एतए काकक भाषासँ प्रियतमक आगमनक प्रतीक्षा एवम् आकुलताकेँ नव जीवन देल गेल अछि-

"काक भाष निज भाषहु रे, पिय आओत मोरा
क्षीर खीर तोहिदेव भरि कनक कटोरा
जौं पिआ आओत मोरा।।"

जखन विरहक कष्ट असहय भऽ जाइत छन्हि तँ सन्देश पठवए चाहैत छथि-

"के पतिया ले जाओत रे प्रियतम पास हिअ नहि सहय
असहदु: खरे भेल साओन मास।"

विद्यापति विरहक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म दशाकेँ देखलन्हि तथा ओहिसँ अपन हृदयक सम्बन्ध स्थापित कएलन्हि। ई विरहक प्रत्येक दशाक वर्णनमे अनुभूति पक्ष सर्वथा ऊँच स्तरक एवम् मनोग्राही रहल अछि। विद्यापति नायक-नायिका दुनूक विरहक चित्रण कएलन्हि मुदा स्मरणीय जेहन आकर्षक राधाक विरह वर्णन भेल अछि तेहन कृष्णक नहि यथा-

"अइसन नागर अइसन नव नागरि अइसन समय मोर,
राधा बिनु सब बाधा मानिए नयन तेजिअ नोर।।"

वास्तवमे राधा एवम् कृष्णक प्रेम 'सागर सागरोपम्' थिक।

विरहमे सज्जनक प्रेम आओरो अधिक निखरि उठैत अछि। विद्यापति स्वयं लिखैत छथि-

"सुजनक प्रेम हेम समतूल,
दहइते कनक दुगुन होए मूल।।
टुटइते नहि टुट प्रेम अद्भुत,
ये सन बढ़ए मृणालक सूत।।"

विद्यापतिक विरह वर्णन विश्व साहित्यमे अपन स्थान मूर्धन्य बनौने अछि। हिनक भाव प्रारम्भमे लौकिक स्तरक तथा वैयक्तिक रहैत अछि, किन्तु जखन गम्भीरताकेँ प्राप्त करैत अछि तखन अलौकिक, समष्टि सूचक एवम् विश्वक निधि भए जाइत अछि।

भाव पक्षक संगहि संग विरह वर्णनमे हिनक कला पक्षक समावेश सेहो पूर्ण रूपसँ भेल अछि। कलात्मकता कृत्रिम नहि अपितु स्वाभाविक अछि। अनुभूति व्यक्त करबामे सरलता अपनाओल गेल अछि। शब्द चयन, वाग्वैदग्ध, एवम् सुन्दर उक्तिसँ हिनक वर्णन अलंकृत एवम् विभूषित अछि। कलापक्षक रसक परिपाकमे सर्वत्र सहायक भेल अछि।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे विद्यापति अन्य भाषाक विरह-वर्णनसँ

अधिक उत्कृष्ट वर्णन कएने छथि। अन्य विशेषताक संग भाव पक्ष श्रेष्ठ रहितहु कलापक्षक उपेक्षा नहि भेल अछि। भावक गम्भीरताक अभिव्यक्तिक मनो वैज्ञानिक ढंगसँ कएल गेल अछि। मिथिलाक संस्कृतिक अनुपालन सर्वत्र करैत विरहिणीक शब्द-शब्दसँ वेदना निःश्रृत भेल अछि। ❑

कन्यादानक भीषण समस्याक कारण

मध्य मिथिलांचलमे वैवाहिक परम्पराक पालन आइसँ अनुमानत: सय वर्ष पहिने दोसर रीतिसँ होइत छल। ताहि समयक हेतु ई रीति-रेवाज हितकर रहल होएत, मुदा तकर प्रभाव बादक मैथिल सन्तानपर ताहि तरहेँ पड़ल जे एखनहुँ तकर छाप अमिट अछि।

ओना तँ कन्यादानक समस्या प्राय: सभ दिनसँ एक कठीन समस्या रहल अछि। समयानुसारे भलेँ ओकर रूप परिवर्त्तित होइत गेल हो...।

महाकवि विद्यापति अपन 'पुरुष-परीक्षा'मे एही समस्याक सन्दर्भ चर्चा कएलन्हि-

"कन्या ककरा दी? पुरुषकेँ?"

पुरुष शब्दक प्रयोग ओ विशिष्ट अर्थमे कएने छथि। अन्यथा सभ पुरुषाकार थिकाह। वीर, ध्यर्यवान, विद्वान आ वुद्धिमान, चारिटा पुरुषक लक्षण होइछ, एकर अभाव जकरामे छैक से पूँछ हीन पशु थिक। तेँ कन्याक विवाह पुरुषसँ हो।

खास कऽ कन्यादानक समस्या आजुक समस्यासँ भिन्न होएबाक कारण ओहि समयमे जनसंरव्या कम आ भूमि अधिक रहलोपर सन्ताँ भूमिसँ भरण-पोषण सहजहि भऽ जाइत छल। आजुक अपेक्षा आवश्यकता कम आ उपभोगक पदार्थो परिमार्जित नहि। विज्ञान अपन

प्रभाव ओतेक नहि देखओने छल। आइ तँ विज्ञान मिथिलाक कथे कोन सम्पूर्ण धरतीक देश लोक, संस्कृतिकेँ जोड़ि देलक अछि। तेँ ओहि समयमे मिथिलाक लोकक उक्ति छल-

"उत्तम खेती, मध्यम वाण।

निषिद्ध चाकरी, भीख निदान।।"

अर्थात् खेतीकेँ उत्तम, व्यापारकेँ मध्यम, चाकरी वा नौकरीकेँ निषेध तथा भीख मांगव सभसँ नीच कर्म मानल जाइत छल। इएह कारण छल जे एहिठाम कहल जाइत अछि-

"कर खेती घरही भला।"

कहबाक तात्पर्य घरेमे रहू, खेती करू अमोधमंत्र छल। एतबे नहि, ओहि समयक हेतु अधिक सन्तानवान होएब मान्य छलैक। किएक तँ प्राकृतिक प्रकोपक कारण जनाधिकआर नहि होमए पबैत छल, जाहिसँ जन संख्याक वृद्धि ऊपर अंकुश स्वत: लागि जाइत छल। एतए तक जे परिवारक कोन कथा? गामक गाम जनशून्य भऽ जाइत छल। तेँ अधिक सन्तानबला लोक पुण्यवाण कहबैत छलाह। बेटा नहि रहलापर बेटीक सन्तान वंशक टेक रखैत छल।

काल-क्रमे बेटी विवाहोपरान्त जमीन-जथा दऽ घरेमे राखब परिपाटी चलल जे 'कनेदानी' कहबैत छल। कनेदानी राखब प्रतिष्ठाक बात बुझल गेल। कनेदानीक सन्तान भगिनमान कहबैत छथि। जनिक पुरुषा कनेदानी रखलन्हि से डीही कहबैत छथि। कनेदानीक सन्तान डीही पक्षक परम भक्त होइत छलाह। बिना दरमाहाक नोकर ई भगिनमान होथि, संगहि डीहीक कृपाकांक्षी सेहो। तेँ जनह्रासक कारण नहि बुझाइत छल। कनेदानीक प्रति प्राय: भलमानुष होइत छलाह, जे बादमे बिकौआक नामसँ जानल गेलाह।

बिकौआक सन्दर्भ किछु चर्चा : हरि सिंह देव महाराजक द्वारा

पञ्जी-प्रवन्ध कएल गेल। एहिसँ मैथिल-व्राह्मणक पञ्जीकृत भेलापर श्रेणी बनल। ओहिमे योग, श्रोत्रीय, भलमानुष प्रभृतिक उदय भेल। पञ्जीक अनुसार जे निम्न श्रेणीकेँ प्राप्त कएलन्हि ओहिमे सँ किछु सम्पन्न व्यक्ति उच्च श्रेणीक व्राह्मणसँ सम्बन्ध कए सर्व साधारणक दृष्टिमे प्रतिष्ठा हासिल करबाक चेष्टा कएलन्हि। एतए तक जे निम्न श्रेणीक व्राह्मण पैघसँ पैघ जमींदार रहितहुँ ओहि प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त नहि कए सकैत छलाह। फलत: अर्थ अपन प्रभाव देखओलक अन्तरालमे एक बात प्रशस्त भऽ गेल जे निम्नो श्रेणीक ब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा अपनाकेँ ऊपर उठा सकैछ। स्पष्ट अछि कनेदानी राखब एहि पञ्जी-प्रथाक कारणे चलाउल गेल। सुखी सम्पन्न लोक एहि सुविधाक उपयोग करए लगलाह। उत्तरोत्तर देखा-देखीमे एक तरहक उपरौंझक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल। किन्तु, ओहिकालक मान्यताक कारणेँ एहन बहुत कम लोक छलाह जे निम्न श्रेणीक लोकसँ सम्बन्ध करए चाहैत छलाह। फल ई भेल जे एहि अल्पसंख्याक व्राह्मणक मांग बढ़ि गेल। एहि वर्गक लोककेँ समाज तेहन ने टीकासनपर चढ़ा देलक जे सभ व्याहकेँ मात्र पेशा बनाए लेलक। इएह वर्ग बिकौआ कहाओल अर्थात् जे बिकथि। विक्रयबला पदार्थसँ ई वर्ग भिन्न छलाह। पूर्ण मूल्य देलहुँ सन्ताँ क्रय कएनिहारक जूतिमे ई नहि रहथि। ई बिकौआ बिकथि मात्र विवाहक हेतु। विवाहोपरान्त ई पूर्ण स्वतंत्र रहथि। ने स्त्रीक प्रतिदायित्व आ ने सन्तानक प्रति स्नेह। मतलब रहन्हि केवल विदाइसँ कोनोटा त्रुटि सासुरमे भेलापर रूसि एहन तँ साधारण बात रहन्हि, अपन सन्तानक जन्मक सम्बन्धमे भ्रामक प्रचार कऽ देबामे संकोच नहि करथि। एहन तरहक दन्त कथा वल्हमीझाक आदिक सम्बन्धमे प्रचलित अछि।

बिकौआक लक्षण : ई बिकौआ आजुक तुलनामे कम नहि किन्तु, मुद्रा मोचन हजार-लाख जँ नहि नहि करैत छलाह तँ दान जैतुकसँ लेथि। जाहि कन्यासँ विवाह होइन्ह तकर पालनक भारसँ मुक्त रहबे करथि,

संगहि अलाबा ऊपरसँ हिनक धाक कड़गर रहन्हि। उत्तम भोजन, वस्त्र आ ढेउवा विदाइक रूपमे भेटि जाइन्हि। एतए तक जे बाप-पुरुषा वा नीज रीन-कर्जा लेल सेहो सासुरेसँ चुकाएब उद्देश्य रहन्हि। सालमे एक-आध बेर सासुर जाथि ताहि सहवाससँ जे सन्तान उत्पन्न होइन्हि वएह कनेदानीक वा डीहीक उपलब्धि बूझल जाइत छल। ई बिकौआ आकर्मण्य जीवनक अभ्यासी भऽ गेल छलाह। किछु नहि मात्र पेट पोषव उद्देश्य रहन्हि। तम्बाकू, भांगक पूर्ण अभ्यासी रहथि। शारीरिक चेष्टा घिनौन बनौने रहथि। चालि-ढालि पूर्ण असभ्य जेकाँ रहैत छलन्हि। माथमे चानन-ठोप लगौने रहथि। पैरक वेमाय विदरल ठोर, नमरल पेट, चुबैत लेर बकनेरक टाड़ी रथि तथापि एहनो अश्रद्ध रूप भेलापर महग रहथि, किएक तँ पञ्जीक प्रमाण पत्र भेटल रहन्हि। तँ कन्या पक्ष हिनक रूप, गुण वैभवक मूल्यांकन नहि कऽ सोन सन कन्याकेँ ढेंग संग बान्हि दैत छल। बादमे ई बिकौआ वहु-विवाही होमए लगला, जाहिसँ मैथिल व्रह्मणमे कन्यादानक मुख्य समस्या छल। बहुविवाहक समस्या बिकौआ द्वारा केवल उत्पन्न भेल से नहि आओरो कारण भऽ सकैछ, जेना राजकुलक संसर्गसँ व्राह्मणमे कुप्रथा अएबाक संभावना। पहिने व्राह्मण तपी, त्यागी होथि किन्तु मंत्री अथवा राजपुरोहित भेलापर देखाउससँ बहु विवाहक अभ्यासी भेलाह। किएक तँ राजभवनमे रानिक अतिरिक्त सुन्दरीक झुण्ड निवास करैत छल। परञ्च, मैथिलक ई बिकौआ वर्ग अर्थक लोभसँ निम्न कुलमे पच्चीस-तीस स्त्रीसँ विवाह करैत छलाह। एतबे नहि, श्मशानघाट जेबासँ पूर्वो विवाह कऽ लैत छलाह। जँ प्रथम स्त्रीकेँ घर अनितो छलाह तँ शेषकेँ नैहरेमे छोड़ि दैत छलाह। इएह जीवन निर्वाहक उत्त साधन छलन्हि। एहि बहु विवाहक प्रथाकेँ तोड़बाक चेष्टा प्यारेलाल मुंशी 1870 ई.मे कएने छलाह। हुनक आन्दोलन जोर-शोरसँ चलल छल। ओहि परिप्रेक्ष्यमे 1878 ई.मे तिरहुतमे 54 बिकौआ व्राह्मण मृत्युसँ 665 स्त्री विधवा भेल छल जाहिमे अधिकांश युवतीमे छल।

एतए तक जे मधुबनी जिलाक कोइलख निवासी एक बिकौआ 50 वर्षक आयु तक 35 विवाह कऽ नेने छलाह। सन् 1875 ई. दरभंगा जखन सवडिविजन बनल तँ तात्कालीन पदाधिकारी मेटलाक आदेश कएल जे प्यारे लाल मुंशीक आन्दोलनक अनुसार बहु विवाह बन्द हो। एहि तरहेँ बिकौआ द्वारा बहु विवाहक समस्या उत्पन्न भेल से कही वा मिथिलाक लोक द्वारा बनाओल गेल। रूढ़िवादी विचारक कारण कन्याक भविष्यक समीक्षा नहि कऽ अपन उत्तरदायित्वकेँ समाप्तिक बहानामे बिकौआक ठोंठमे कन्या बान्हब थिक।

बंगालक कुलीन प्रथा सेहो मिथिलाक बिकौआ प्रथाक समान छल। वार्ड (Ward) महोदयक अभिलेखसँ पता चलैत अछि जे वंगपराक उदय चन्द्रकेँ 65 स्त्री छलन्हि, कुशदाक राम किंकरकेँ 72 स्त्रीसँ विवाह रहन्हि। एक एहनो घटना भेटैत अछि जे दुगलीक रामचन्द्र मुखर्जीकेँ 32 स्त्री रहैन्ह आ वो 65 वर्षक अवस्थाकेँ पार कएने छलाह, दैवात् यक्ष्माक शिकार भऽ गेलाह, मृत्युक निश्चितता जानि बालककेँ कहलथिन्ह-

"दीन भावसँ बाबूजी अपने तँ मरैत छी घरमे एको चुटकी अन्न नहि अछि, एहन हालतमे श्राद्धो कोना होएत?"

पिता किछु गंभीर भऽ निहसंकोच भऽ कहलथिन्ह-

"अविलम्ब नव गोपाल चटर्जीक 9 वर्षीय कन्यासँ हमर विवाहक व्यवस्था करू, किछु दिन पूर्व प्रस्ताव आएल छल, एखनो ओ कन्या अविवाहिते अछि।"

पुत्र सम्वाद पठा कए 250 रूपैया पर बात निश्चित कएलथिन्ह। विवाहक 9 मासक अभ्यंतरे रामचन्द्र मुखर्जीक मृत्यु भऽ गेलन्हि। एहि तरहेँ ओ अपन श्राद्धक इन्तजाम विवाहे द्वारा पूरा कए मुइलाह। ई सभ छल बहु विवाहक कुपरिणाम! विवाह सन पवित्र रेवाजकेँ दुषित करब

समाजक कुचालि कहू वा कलंक।

बिकौआ द्वारा विवाहित कन्याक जीवन झाँकी : एहि प्रथाक प्रकोप तँ तेहन छल जे बूढ़, बकनेर, अकर्मण्य वरक संग तरूणीक विवाह एक प्रकारक विडम्वना कहल जा सकैछ। अनेको कोम लांगी जीवनक सोलहम वसन्तक पहिने विधवा भऽ कठीन जीवन जीबाक अभ्यासी होइत गेल। राजा राम मोहन रायक शती-प्रथा उन्मूलनसँ अनेको विधवा वा बूढ़क स्त्री काम पिपासावश कुत्सित कर्मक भाजन भेल। एतबे नहि, बिकौआ द्वारा विवाहित किशोरी पिताक घरमे आजीवन थोपल रहलासँ कुमार्ग गामी भऽ जाइत छल। एहिसँ दारूण स्थिति ई भेल जे मैथिलक दरिद्र समुदाय बिकौआक वंशधर एखनो अछि। हिन्दूस्तानक अधिकांश शहरमे भनसिया, भीमंगा वा ताईं नीच कर्ममे प्रवृत मैथिल ब्राह्मण बिकौआक सन्तान थिकाह। इहए कारण अछि जे मिथिलेत्तर प्रान्तमे मिथलाक कुख्यातिक कुचेष्टा लोक करैत अछि। आब बिकौआ प्रथाक अन्तो आवश्यक छल।

बिकौआ प्रथाक अन्त कहू वा विकल्प दहेज प्रथाक आरंभक कारण- अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारसँ लोक नैतिक स्तर ऊपर उठए लागल। विज्ञान विकसित भेल। वैज्ञानिक आविष्कारसँ लोक जीवनमे आमूल परिवर्त्तन होमए लागल। चिकित्सा विज्ञान प्राकृतिक प्रकोपकेँ रोकि देलक। जनह्रास नहि भेलासँ जनवृद्धि अवाध गतिमे होमए लागल। स्वाधीनताक कारणेँ जन जीवन उर्द्धगामी होइत गेल। तेँ आब कनेदानी राखब आ ओकर सन्तानक भार उठाएब असौकर्ज भऽ गेल। शिक्षित समुदायमे वैचारिक क्रान्ति आएल तेँ पुरना प्रथा, रूढ़िवादिता, कुलीन प्रथा वा बिकौआक समूल नष्ट करब आवश्यक प्रतीत भेल। अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाहक परम्पराकेँ समाप्त कऽ अपन वैभवक अंश नगद रूपमे दऽ कन्याक विवाह कराएबक परिपाटी शुरू भऽ गेल।

दहेजक दारूण स्वरूप : जहिना बिकौआक श्रेणी छल तहिना शिक्षित वर्गक माप दण्ड कायम भेल व्यवस्था रूपमे। डाक्टर, इंजीनियर, ओभरसियर, टेकनीसियनक श्रेणी सरकारी सेवक प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी ओ चतुर्थवर्गीय गैर सरकारी सेवकक संगहि शिक्षण संस्थाक सेवक श्रेणी कायम भेल। आब की छल वरक विक्री उपर्युक्त आधारपर होमए लागल। बरदहटा जकाँ वरक हाट सेहो लागल रहैछ जेना-सौराठक सभा गाछी। जाहि कन्याक पिताकेँ जेहन उपाय रहैछ तेहन श्रेणीक वरकेँ खरीद कऽ विवाह करबैत छथि। दिनानुदिन दहेजक प्रकोप बढ़ले जाय रहल अछि। एहि दहेजक दारूण रूप तँ ई भेल जे गरीब कुमार व्रह्मण जे अयोग्य अछि ओ अविवाहिते मरैत अछि। अनेको उदाहरण भेटैत अछि। बिकौआ प्रथामे एहन बात नहि भेल रहए। खैर! दहेज-प्रथामे सक्षमक संग विवाह करायब युग-धर्म मानल गेल अछि, मुदा दहेजक विकराल रूप सामने अछि। बिकौआ रूसैत छल तँ ओ मनौती कएलापर मानि जाइत छल, किन्तु ई दहेज-प्रथाक शिक्षित वर्ग तँ रूसलापर स्त्रीक जान लऽ लैत अछि। एतबे नहि, कन्याक अपमान, तिरस्कार ओ अवहेलना करब स्वाभाविक होइछ। मनोनुकूल विदाइ वा दहेजक राशिमे कमी भेलापर सासु, ससुरक संग अभद्र व्यवहार तक कऽ दैत छथि। पहिलुका बिकौआ भांग, तमाकू खाइत छल तँ आजुक वर मदिरा, सिगरेट, चरसक अभ्यासी होइत अछि। बिकौआ एक आध बेर सासुर अबैत छल, मुदा आजुक ई बिकौआ सालो भरि सासुरे रहबाक आकंक्षी अछि। अन्तर सिर्फ एतबाटा जे बिकौआक स्त्री पितेघरमे रहैत छल जाहिसँ मर्यादित छल, मुदा एखनुका वरक स्त्री संगहि रहैत अछि, किन्तु एहि पढ़लाहीक शील, स्वभाव रहन-सहन चालि-ढालि वातावरणक कारणेँ विकृत भऽ जाइछ। अधिकांश स्त्री तँ शीलहरणक शिकार भऽ जाइत अछि। कोना बूझब जे बिकौआ प्रथाक अन्त भेल?

आजुक ई दहेज प्रथा तँ ओकरोसँ विभिन्न रूपमे सामने आएल अछि। आजुक दहेज प्रथाक कारणेँ कन्याक पिताक धर्म, धन ओ इज्जत सभ नीलाम भऽ जाइत अछि। पाईक अभावमे कन्याक पिता बोझ तरहक दूभि जकाँ पिअरगात कृशकाय भऽ समय काटि रहल अछि। कतबो रूप-गुणसँ युक्त कन्या छन्हि, मुदा पाईक अभावमे हुनक पिताकेँ केओ मोजर नहि दऽ सकैछ। पैसाक पिशाची लोक योग्य-अयोग्य कन्याक सीमाकेँ सन्दिग्ध कऽ देने अछि। अनेको पिता-पुत्रीकेँ शिक्षित करैत छथि, ताकि हुनका बेटाबला दहेजमे छूट देताह मुदा से सम्भव नहि। योग्य वर कन्याक वरण करथि से ख्याल केओ नहि करैत छथि जाहिसँ निर्मल दाम्पत्य जीवन नशीव होएब कठीन भऽ गेल अछि। एकर प्रतिफल की होएत? मैथिल समाजक श्रृंखला टूटि जायत, आर्थिक विषमता सामाजिक जन्म देत।

एक दिसि जँ कन्या पक्ष बालुक भीत जकाँ ढहल जाय रहल अछि तँ दोसर दिसि वरक पक्ष मनोरथक पूल बिनु सिमेन्ट-बालुक जोड़बामे तल्लीन अछि। कहिया धरि ई दहेजक दाहसँ सन्तप्त रहत से नहि जानि।

दहेजक कारण अविवाहित कन्याक जीवन झाँकी : दहेजक दर्दनाक असरि तेहन तरहेँ पड़ि रहल अछि जे अधिकांश सम्भ्रान्त परिवारक कन्याक कौमार्य अवस्था विवाहक प्रतिक्षेमे समाप्त भऽ जाइछ। एतए तक जे यौवनकालमे नारकीय अवस्थाक अनुभव करैत अछि। प्राय: बेटीबला ओ बेटाबला दूनूक समक्ष ई समस्या उत्पन्न छन्हि। केओ एहिसँ मुक्त नहि छथि, मुदा टाका गनाएब आ गीनबकेँ आइ मर्यादाक विषय जानल जाइत अछि। जे जतेक टाका गनबैत छथि ओ ओतेक गर्वोक्तिसँ समाजकेँ बुझबैत छथि, संगहि जे गनैत छथि से अप्पन बड़प्पनक विशद् वर्णन करैत छथि।

सभसँ खेदक विषय तँ ई जे गरीब लोक जे बेटीक प्रति ताका लैत

अछि वा छल, तकरा लोक बेटी बेचबा कहैत छल। घृणाक दृष्टिसँ देखैत छल, आइ ओकर उनटा हवा बहि गेल अछि। बेटा बेचनिहारकैं लोक बेटा बेचबा नहि कहि समाजमे उच्चासन दैत अछि जाहिसँ बेटाक विवाह टाका लऽ कए करबामे गौरवान्वित होइत अछि। ई समाजक लोकक विचारहीनता नहि तँ आर की? एहिसँ निन्दनीय बात आइ की होएत? तखन तुलसीक पाँती स्मरण भऽ जाइछ-

"समरथकैं नहि दोष गोसाईं।"

अर्थात् पैघ लोककैं दोषी नहि कहल जाइछ। ओइ दहेजक पृष्ठपोषक समाजक पैघे लोक छथि तँ एकर उन्मूलन सम्भव कोना? नहि जानि बिकौआक जगह दहेज आएल आ ई कहिया धरि लोककैं खिहारैत रहत? आइ तँ अधिकांश ललना अभावी पिताक छातीपर दुर्गम पहाड़ बनि बैसलि अछि। कतेक तँ विवाह सूत्रमे बान्हलोपर भाग्यपर झखैत अछि। मनोनुकूल घर-वरक अभावमे संघर्षरत जीवन बिता रहल अछि। सुख सुविधामे पलल बालिका पतिक घरमे गंजन, दुर्व्यवहार, व्यंग्यपूर्ण वाक् वाणसँ विद्ध होइत रहैछ जकर कारण होइछ लेन-देनक गड़वरी, दान जैतुकमे मनचाही वस्तुक आपूर्त्तिमे कमी। एतबे नहि दहेजक उपरान्त वरियातक विशिष्ट सेवा नहि भेलासँ वा कोनो तरहक विघटन भेलापर कन्याकैं सासुरमे पति द्वारा वा पतिक घरक लोक द्वारा अमर्यादित व्यवहार कएल जाइछ। कतेकठाम तँ कन्याक हत्या कऽ देल जाइछ आ नहि तँ कन्या स्वयं आत्म हत्या कऽ लैत अछि। सभक मूलमे दहेजे अछि जे कन्याक पिताकैं विवश कऽ दैछ, विवशताक कारण होइछ द्रव्याभाव, अर्थाभाव। कोजागरा, जड़ाउरक संग-संग साल भरि तक व्राह्मण समाजमे बेटीबलाक तनोतरी ढील भऽ जाइछ तेँ विवाहसँ विध भारी कहल जाइछ।

दहेज-प्रथाक उन्मूलनक उपाय- यद्यपि वर्त्तमान सरकार दहेज लेनिहार ओ देनिहार दुनूकैं कठोर दण्ड देबाक अध्यादेश जारी कएल

अछि, मुदा ई नैतिक पतनबला लोक एखनहुँ कम्बल ओढ़ि कऽ घी पीबएबला बात रखने अछि। सरकारक आँखिमे तँ गर्दा दैते अछि संगहि समाजोकेँ उल्लू बना रहल अछि। लेन-देन कऽ लइए। गुप्त रूपसँ ताकि हम आदर्श रूपमे कुटमैती कएल अछि। तेँ सरकारक द्वारा एकर उन्मूलन कथमपि सम्भव नहि। एकरा लेल वैचारिक क्रान्ति चाही, समाजक हरेक व्यक्तिक नैतिक समर्थन चाही। ई एक कलंकपूर्ण रेवाज थिक जतए पाइपर दू आजीवन मिलि कए रहए बला जीव तकर प्रेमक आकलन पाइपर हो। निश्चय एहि तरहक समाजकेँ कलंकित समाज घोषित कएल जाय जतए टाकाक आधारपर दाम्पत्य सम्बन्ध बनाओल जाइछ। एक शब्दमे कहए पड़त जे विवाहक पवित्रताकेँ तखने कायम राखल जायत जखन हरेक वर्गक लोक आत्मगत विचार कऽ विवेकपूर्ण निर्णय लेथि। आडम्वरपूर्ण विवाह प्रक्रियाक संग दहेजक विकृत परिपाटीक विरोध करथि। भविष्यक जननी सृष्टिक संरचना करनिहारि आजुक कन्या काल्हि पूर्ण अभिशप्त भए जाएत।

यत्र नार्य वस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता।

मनुस्मृतिक ई वाक्य सर्वथा अमान्य भऽ जाएत आ एक दिन हमरा लोकनिकेँ अवनतिक महान गर्तमे लऽ कए चल जायत! ❑

एकैसम शताब्दीक प्रारंभ जनवृद्धिमे भारत प्रथम आ चीन दोसर

प्राय: कहल जाइत अछि जे 'बहुलोका: दोषा:'

भारतक विशाल जनसंख्या आ एकर लगातार वृद्धिक गति एक समस्र्रा बनि सभसँ भयावह आ विस्फोटक सिद्ध भेल अछि। जतए भारतक हेतु सर्वमान्य सिर दर्द एवम् गहींर चिन्तनक विषय बनि गेल अछि, ओतए इएह समस्या भारतमे गरीबी, वेरोजगारी, कुपोषण संगहि भूमि विखण्डन एवम् अपखण्डनक समस्याकेँ दिनानुदिन अति शोचनीय स्थितिमे पहुँचा देलक अछि।

एतबे नहि, भारत जनाधिक्यक सीमापर आबि गेल अछि। ई जनाधिकय पछिला दू दशाब्दीक आर्थिक विकासक सुखद प्रयासकेँ पकारि देलक अछि। गरीबी आ बेकारीक समस्या एकरे द्वारा पल्लवित भऽ रहल अछि।

खेदक संग कहए पड़ैत अछि जे एक ओर तँ भारी जनसंख्या हमरा सभक गरीबीकेँ बढ़ा रहल अछि तँ दोसर ओर गरीबी सेहो जनसंख्यामे वृद्धि कऽ रहल अछि। जोसेफ डी. कास्ट्रो अपन प्रसिद्ध पोथी 'Geognaphy of hunger' मे चीन, जापान आ भारतक उदाहरण प्रस्तुत करैत एहन विचार प्रगट कएल अछि। 1981 क जनगणनाक अनुसार भारतक जन संख्या अड़सठि करोड़केँ पार कऽ गेल अछि। जाहिमे आसाम, जम्मू एवम् कश्मीरक जनसंख्या शामिल नहि अछि।

एक करोड़ चालिस लाख मानबक वृद्धि प्रति वर्ष भारतमे भऽ रहल अछि। देखल जाइछ जे आस्ट्रेलियाक क्षेत्रफल भारतक क्षेत्रफलसँ दोबरसँ अधिक अछि। एखन तक भारत चीनक बाद संसारमे सर्वाधिक जनसंख्याबला देश अछि। संसारक कुलजन संख्याक 15 प्रतिशत भाग भारतमे रहैत अछि। जखन संसारक कुल क्षेत्रफलक अढ़ाइ प्रतिशत भू-भाग मात्र एकरा प्राप्त छैक। तेँ जौं भारतक ई जन संख्या अपन वर्त्तमान अढ़ाइ प्रतिशतक दरसँ बढ़ैत गेल तँ वींसवी शताब्दीक अन्त तक एक अरबक जनसंख्याकेँ छूबि लेत।

सन् 1831 इस्वीक बादसँ भारतक जन संख्यामे जे वृद्धि आरंभ भेल अछि ओकर गतिकेँ देखैत भारतक आजादीक बाद स्वतंत्र भारतक आर्थिक विकासक योजनामे सर्तकता बरतल गेल। इएह कारण भेल जे सन् 1952 ई.मे परिवार नियोजन नीतिकेँ सरकारी कार्यक्रमक रूपमे अपनाओल गेल आ विश्वक पहिल देश छल जे अपन आर्थिक विकासक योजनामे परिवार नियोजनकेँ स्थान देलक। एकर बावजूदो एहि कार्य-क्रमक प्रति उदासी देखल गेल जे कष्टप्रद विषय थिक। यद्यपि प्रथम आ द्वितीय पंचवर्षीय योजनामे पाँच करोड़ पैंसठि लाख टाकाक द्वारा एकर संगठन कएल गेल जाहिमे शोध, संचार एवम् केन्द्र आ राज्य सरकारक अन्तर्गत चिकित्सा सेवा प्रदान करैत राखल गेल। समय-समयपर जनगणना देशमे भेलासँ सरकार आ समाजकेँ जगाओलक। तेँ तेजीसँ एहि ओर प्रयास चलल। गर्भ निरोधक प्रचार-प्रसार शुरू भेल। तेसर योजनामे 25 करोड़क लागत आयल। एहि तरहेँ बीचक तीन वार्षिक योजनामे परिवार नियोजनकेँ 'King fin of the plan' मानल गेल। संगहि कार्यक्रमकेँ प्रर्याप्त राशि द्वारा Time bound एवम् Target oriented क रूपमे अपनाओल गेल।

भारतक चतुर्थ योजनामे बहुत अधिक प्राथमिकता देल गेल। एहि कार्यक्रमपर 315 करोड़ टाका खर्च कएल गेल तथापि न्यून सफलता

भेटल। पाँचमी योजना 516 करोड़ टाकाक आवंटन कऽ जन्म दरकेँ 35-30 प्रति हजार कम करबाक लक्ष्य राखल गेल जेकरा हेतु वन्ध्याकरण हेतु प्रस्तुत भेल नर-नारीकेँ तकरा चन्द्र किस्मक प्रलोभन देल गेल। एतए तक जे छठवीं सातवीं योजनामे तँ भ्रूण हत्या गर्भ-पात आदिक वैध करार कऽ देल गेल। जाहिसँ जनसंख्याक वृद्धिमे ह्रास आबए।

सन् 1974 ई.मे विश्व जनसंख्या नियंत्रण सम्मेलन रूमानियाँक राजधानी बुखारेस्टमे भेल। भारतक तात्कालीन परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ओहि सम्मेलनमे बाजल छलाह जे विश्वक गरीबी तखने दूर होयत जखन विश्वक जनसंख्यामे कमी आओत।

भारतमे जनसंख्याकेँ नियंत्रित करबाक संकल्पकेँ दोहरबैत स्व: प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधीक बीस-सूत्री कार्यक्रमकेँ परिवार नियोजनपर विशेष जोर देल गेल।

पाँचम योजनामे Minimum needs programme क अन्तर्गत स्वास्थ्य, परिवार नियोजन एवम् पौष्टिक आहारकेँ एक संग विकसित करबाक प्रयास कएल गेल। एहि समेकित योजना द्वारा बाल-मृत्युकेँ कम कऽ संगहि माताकेँ स्वास्थ बनाकए कम बच्चा उत्पन्न करबाक प्रवृत्तिकेँ जगाओल गेल। सरकार द्वारा सर्वोत्तम गर्भ-निरोधक दवाइकेँ उपलब्ध करएबाक प्रयास जारी राखल गेल अछि।

एतबे नहि, कमसँ कम मूल्यपर हरेक ठाम गर्भ निरोध उपलब्ध करेबाक व्यवस्था कएल गेल अछि। गरीब देशमे एहि कार्य-क्रमक अन्तर्गत वन्ध्याकरणक हेतु आर्थिक प्रलोभन सेहो देल जाय रहल अछि। जनसंख्या वृद्धिमे 80 प्रतिशत देहातक योगदान रहैछ। जकरा हेतु रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन आदि द्वारा प्रचार-प्रसारसँ देहाती नर-नारीकेँ नियोजन करएबाक हेतु अन्मूख कएल गेल अछि।

ऐं ई स्वीकार नहि काएल जा सकैछ। जे भारतमे परिवार-नियोजन

कार्य-क्रम पूर्ण रूपेण असफल रहल, मुदा एतेक प्रयत्नक बावजूदो जनसंख्याक वृद्धि दिनानुदिन चौगुन्ना होइत जाए रहल अछि तें लऽ कऽ ई कहल जाए रहल अछि जे अणु विस्फोट ओतेक खतरनाक नहि जतेक जनसंख्याक वृद्धि विस्फोट भऽ सकैछ।

आइ जनसंख्याक वृद्धिमे संसारक साम्यवादी देश चीन अपन जनसंख्याकेँ नियोजित करबामे कमाल हासिल कएलक अछि। हमरो सभकेँ एहिसँ प्रेरणा लेबाक चाही। 1953 ई.मे चीन अपन विकासक अभिन्न अंगक रूपमे परिवार-नियोजन लागू कएलक। एहि कार्य-क्रमक अन्तर्गत देरसँ विवाह, बच्चाक जनम्मे अन्तराल संगहि अन्तिम रूपसँ दू बच्चाक लक्ष्य जन तांत्रिक अधिकार कायम कऽ देलक। एतए तक जे विवाहक संगहि Contraceptative क प्रयोग करबाक प्रेरणा देल गेल। तेतबे नहि, मुफ्तमे Contraceptives क वितरण करा कए जनसंख्यामे ह्रास आनबाक महती प्रयास कएलक अछि। नव विवाहित दम्पतिक हेतु अनिवार्य नियम लागू कएने अछि जे Contraceptives क प्रयोग ओ लोकनि करए। एतबे नहि, बूढ़-बुढ़ानुस द्वरा सामाजिक सभामे युवक युवतीक ध्यान एकर लाभक ओर आकृष्ट करोओल जाइछ। ई कार्य-क्रम चीनमे व्यक्तिकेँ छोट परिवार राखक ओर सराहनीय कार्य कएलक अछि। छोट परिवारक प्रवृतिकेँ जगेबामे सरकारक द्वारा उठाओल गेल कानूनी प्रयास कम महत्वपूर्ण नहि अछि। पसिद्ध अर्थ शास्त्री J.Myrdal सेहो Asian drama मे चीनमे सरकार द्वारा एहि क्षेत्रमे उठाओल गेल कानूनी प्रयासक चर्चा कएलन्हि अछि। जकरा हेतु सरकार एक Grash family planning programme अपनौलक अछि ताकि 2000 ई. तक रूसक समान जनवृद्धि शून्य प्रतिशत तक लाओल जाय सकैछ। आब ओहिठाम दू बच्चाक बदलामे एक बच्चाबला परिवारक व्यक्तिकेँ वेतनमे वृद्धि आवासीय सुविधा, संगहि पेंशन आदिमे सुविधाक प्रलोभन देल अछि।

दोसर ओर एक बच्चाक बादसँ वेतनमे आंशिक दरसँ कटौती तथा

अन्य सुविधासँ वंचित कऽ देबाक नियम लागू कऽ देल गेल छैक। एहि तरहेँ चीन अपन जनसंख्याक वृद्धि गतिमे 1975 ई.मे 25 प्रतिशत प्रति हजारसँ 1979 ई.मे 18 प्रतिशत ❑

पुस्तक समीक्षा साकेतानन्दक

‘गण-नायक’

प्राचीन परम्पराक अनुरूप साहित्यक क्षेत्रमे कथाक रचना अवाध् रूपसँ भऽ रहल अछि। हर्षक विषय अछि जे मानव मोनक चिरसंपोषित अभिलाषा आइ साहित्यक अनुभूति आ विवेचनक रूपमे फलीभूत भऽ रहल अछि।

मैथिलीमे लघुकथाक विकास जतेक तीव्रगतिसँ भेलैक ताहिमे लघुकथाकेँ लोक प्रिय बनेबाक श्रेय स्व. हरिमोहन झाकेँ छन्हि।

आधुनिक साहित्यक सर्वतोभावेन गुण सम्पन्नता भारतीय अन्य कोनो भाषा साहित्यक समकक्षताकेँ मैथिलीक कथा प्राप्त करैछ। कथा, समय काल सिमित परिवेशक दृष्टिए कष्ट साध्य अछि तँ संगहि महत्वपूर्ण यथेष्ठ। इएह एक एहन विधा अछि जे दिन-प्रति-दिन प्रगतिक ओर अग्रसर, गतिशील आ उर्द्धमुख अछि।

‘गणनायक’क कथाकार साकेतानन्दजी विलक्षण प्रतिभा पुरुष छथि जे अपन सारस्वत साधनासँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यमे अक्षय कीर्ति, अशेष गौरव आ निस्सीम अर्थवत्तासँ श्रीमन्त कएलन्हि अछि। विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित रचना सभकेँ कलाविद्, समीक्षक

आ विचारक निर्वाध भावसँ सराहलन्हि अछि।

विद्वान, कथा मर्मज्ञ सभ हिनक कथाकेँ साहित्यक श्रेष्ठ उपलब्धि मानि कऽ खुलेआम स्वीकृतमे अविचल हाथ उठाकए साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेलापर सोल्लास समर्थन कएलन्हि अछि।

'गणनायक'क कथा मानव जीवनक विसंगतिक ठोस धरातलपर ठाढ़ अछि। कथाकारक मूल चेतना, प्रगतिशील आ विचारोत्तेजक अछि। युग सापेक्ष आ लोक जीवनक एहन शास्वत चित्र अछि जे साहित्यमे अविस्मरणीय तँ रहबे करत संगहि भावी पीढ़िक हेतु प्रतिक ओर उनमुख होएबामे आत्ममंथन करक हेतु विवश करैत रहत। समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे कथा जे हो मुदा हमरा दृष्टिमे कथा सुग चित्रकेँ अपना 'अलबम'मे समेटि कऽ चलि रहल अछि। जे आबएबला युगक ओर आँगुर उठाकए संकेत सेहो करत। हम पबैत छी लेखकक भावना एच.जी वेल्सक भावनासँ अनुप्राणित अछि। ओना तँ 'गणनायक'क कथानक सेहो जनजीवनक एक गोट नव पक्षकेँ समक्ष अनलक अछि। धरातलपर गति लएबाक हेतु गद्यहिक मंद-चंचल चरण चलबए पड़ैछ। तेँ उपयोगिताक दृष्टिसँ ई गद्यक युग कहबैछ।

कथा कहबाक सुनबाक प्रवृत्ति लोकक रागात्मक सम्बन्ध समानान्तर चलैत आबि रहल अछि, तेँ कथाकेँ प्रागैतिहासिक कालसँ श्रृंखलाबद्ध करबाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि। स्पष्टत: कथा आदर्शवादक खण्डहरसँ बहार भऽ यथार्थक खड़िहान दिस बढ़ि रहल अछि। सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना 'गणनायक'मे वेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता, शोषण, चोर बाजारी, दमनात्मक प्रवृत्ति एवम् नोकरशाहीक यथार्थ चित्रण अछि।

मुख्यत: शिक्षित वर्गक मोह भंग एवम् ओकर निरीहता आ पीड़ासँ जुड़ल संघर्षक कथा कहैत अछि। कामाख्या ओहिसँ प्रबल संघर्ष करैत

एक स्वाभिमानी युवक अछि। एहिठामक लेखक कामाख्याकेँ 'उपक्रम' कथा केर मुख्य पावक रूपमे उपस्थित कऽ आदर्श स्थापित कएलनि अछि, किएक तँ विपन्नताक पीड़ा झेलैत ओ कालक चारण नहि बनैत अछि। एहि कथामे जीवनक सम्मानजनक संकल्प अछि।

'आलुक विमा' कथामे प्रशासन तंत्रक विकरालताक दुस्साहसिक प्रतिरोध कृषक प्रतिनिधि जय मंगल, रामशरण आ रहमतुल्ला द्वारा देखल गेल अछि। एतबे नहि, प्रदर्शनपर उतारू आक्रोशित कृषक आ कृषक प्रतिनिधिपर पुलिस द्वारा लाठी गोली तक चलाओल जाइछ, जाहिसँ कृषक प्रतिनिधिकेँ जानसँ हाथ धोमए पड़ैछ। कथामे प्रजातंत्रक माखौल, त्रुटिपूर्ण व्यवस्थाक जिम्मेवार पदाधिकारीक विषद विर्णन करबामे लेखक निर्भिक एवम् निस्संकोच देखल गेलाह अछि।

'कचोट' कथामे जीवनक नग्न सत्य प्रतिभासित होइछ। जकर मुख्य पात्र बौआ झा छथि। जौं एहि कथामे एकओर भारतीय सभ्यताक निर्मम हत्या भेल अछि तँ दोसर ओर मोनीक अव्यक्त प्रेमक पीड़ा पाठककेँ स्पन्छित करैत अछि।

'एक डेग आगू' कथामे सामन्तवादीक खूनी पंजासँ धाइल रामजीक कुरूप चित्रण अछि। सामन्ती सन्तापसँ संत्रस्त जवान बेटी गुलबियाक ठानल विवाह नहि कऽ कर्जासँ मुक्त होएबाक प्रयास ओकर अग्रिम सोचकेँ समक्ष अनलक अछि। ई कथा पाठककेँ अतिसंवेदनशील बनबैत अछि।

'पकड़ वियाह' कथामे सम सामयिक विद्रुप संस्कृतिक सबाक चित्रण अछि। अभावग्रस्त मैथिलक पुत्री उम्रक सीमा टपि कए अभिभावककेँ विचार शून्य बना दैछ जकर कारण दहेज प्रथाक विकल्प रूपमे 'पकड़ वियाह' शुरूए भेल अछि। कथाकार कथामे धड़फरा कऽ रोचक आ भाव प्रधान होइतहुँ समस्याक समाधानक हेतु अल्पकालीन,

असौकर्य गुझना जाइछ। कथाक परायणसँ कथा अध बटियेमे पाठककेँ छोड़ि दैछ जाहिसँ पूर्ण तृप्ति नहि होइछ।

अगिला कथा 'आब भेटने की' मे नारीक संवेदनाक सन्तप्त रूप भौतिक सुखक निरसता, प्रेम, स्नेह, दया, सहानुभूतिसँ रिक्त मर्मान्तक पीड़ाक अभिव्यक्ति अछि। ई एकटा सरल सहज रोमांटिक कथा अछि जे बड़ रोचक शैलीमे आगाँ बढ़ैत अछि। आ अन्तमे आबि समग्र रूपमे एकटा विलक्षण प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। भव प्रवण्ता एवम् मधुबर विन्यास एहि रोमांटिक कथाक विशिष्ट गुण अछि। लेखक एहि कथामे माँजल मनोविश्लेषक प्रतीत होइत छथि।

'त्रिवेणी समाहार' सामाजिक बोधसँ जुड़ल कथा अछि। कथाक मुख्य पात्र भिखारी साहु सम्पूर्ण कथामे चर्चित भेल छथि। अथक प्रयास, श्रमसाध्य जीवन, साहस आ समयसँ जुझैत निर्धन लोक पूर्ण धनवान होइत अछि, ओकर सम्पन्नतासँ सीदित गामक डाही दुष्ट पंचैती करनिहार रामेश्वार बाबू आ शिवजी सिंह अपन प्रपंचक चपेटमे आनि भिखारीक समटल आ समृद्ध परिवारकेँ कहलपूर्ण बना दैत देखल जाइत छथि। तेसर साम्यवादक दोहाइ देनिहार दरिद्र फूल झा भिखारीक दोहन गाहे-वगाहे करैत कथामे देखल जाइछ। ई कथा एकहि संग अनेक विषय वस्तु, व्यक्ति आ तत्सम्बन्धी घटनाक वस्तुतः समाहार बुझाएल मुदा मुख्य तीन परिस्थिति आ परिवेशक दिशा बोध करबैत अछि। कथा अपना-आपमे विड़ल अछि। विसंगति आ समाजक छद्मकेँ उघारि कऽ पाठकक समक्ष राखि दैछ।

'मचकल खुट्टा' लोकोक्तिक आधार लए लिखल गेल कथा अछि। खास कऽ अनमेल विवाहक कारणेँ उत्पन्न परिस्थितिक बोध कथा अछि। मचकल खुट्टासँ तात्पर्य अछि कमजोर पतिसँ। कथाकारक कमाल जौं-जौं आगाँ बढ़ैत अछि पाठककेँ कौतुहलपूर्ण बनबैत रहैछ। कथा मुख्य पात्रक रूपमे कजरैलावाली गोरि-नारि सुडौल, सुनमनी आ तारूणक

तेजसँ क्षीजित मुख्यमण्डलवाली छथि, जनिक विवाह दूबर-पातर, कारी खेड़नाठ आ झाँमर मुँह संगहि विकृत बगेवानि रेलक खलासीसँ होइत कथामे देखाओल गेल अछि। नपुंसक पतिक कारणेँ तेरह वर्ष धरि दागल साँढ़ नि:सन्तान कजरैलावाली लोकक बीच बाँझी कहबए लगैछ। जखन बर्दास्त नहि भेलैक तँ दाबल मोन विकल्पक ओर आकृष्ट भेलै। जहिना पानि पनिबट ढूढि लैछ तहिना बगलक पड़ोसी पाचो मनगर, बलगर, सुडौल सुन्दर युवक भेटि गेलासँ रमणामे भाँगठ नहि भेलै। कथाक रोचकता आरो बढ़ैत अछि जखन कजरैलावाली एक सुन्दर बालकक जन्म दऽ अपना संग पतिक दोषसँ मुक्त होइछ। एहि तरहेँ कथामे देखल जाइछ जे एक दोषसँ मुक्त होइत अछि तँ लोकापचार आ कुचर्चाक आब सद्य: भाजन बनैत अछि। खुजल मुँहकेँ ओ बन्द कऽ नहि सकैत छल किएक तँ ओकर खुट्टा मचकल रहै। अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचैत पाठक आकर्षणक कारणेँ अचाएल रहैछ। हृदयपर स्थायी प्रभावक अनुभव करैछ।

'गणनायक' अन्तिम कथा चिन्तनीय, रोचक, समयानुकूल बदलैत राजनीतिक परिदृश्यक सटीक चित्रण अछि। एहि कथाक मुख्य पात्र नरेबाबू सामन्ती गुणग्राही छथि। चुनावमे छल-बल-कलसँ जीतैत छथि। वएह एकर गणनायक थिकाह। अपन आधार सीढ़ी छीतन दासकेँ बिसरि जाइत छथि। छीतन दास हरिजनक माइनजन (मुखिया) अपन हानियोँकेँ ताकपर राखि हिनका चुनावमे एड़ी-चोटी एक कऽ दैत अछि, चारि कट्ठा जमीनक त्रासदीक कारणेँ ओ डिल्ली अन्नजल तेजि कोनहुना जाइत अछि। ओतए विस्फारित आँखिसँ नरेबाबूकेँ ढूढ़ि हिनका राजकीय आवासपर पहुँचैत अछि, दुलर्भ भेँट जखन होइत छैक तँ सुख-सुन्दरीक अठखेल कएनिहार, नरेबाबू छीतन दासक व्यथाकेँ सुनबाक बदला डाँट-फटकारसँ नकारि कऽ दैत छथि। एहि तरहेँ कथामे छीतन दासक अवहेलना हैब, अनभुआर, अनपढ़ मैथिल छीतन दासक दिल्लीसँ

आपसीक गुंजाइश कथामे नहि हैब पाठककेँ संदेहक सीमामे बान्हैत अछि। कथा शिक्षाप्रद संग-संग वर्तमान समयक गणनायकक रंग बदलैत चरित्रक प्रण्ट चित्र कथा थिक।

समस्त कथाक परायणसँ सुस्पष्ट प्रतीत होइछ जे समाजवाद, साम्यवाद वर्तमानकालीन सांस्कृतिक परिवेश, राजनैतिक संरचना आर्थिक परिस्थितिक ठोस धरातलपर आधारित एहन शास्वत भावनासँ जनमानसकेँ अवगत करौलन्हि अछि जे संजीविनी बुटि बनिकए प्रगतिशील साहित्यकारक हेतु आदर्श उपस्थित करैत अछि।

हिनका रचनामे यथार्थवाद नहि अपितु यथार्थ अछि। हिनक पात्र काल्पनिक भऽ सकैए, मुदा कल्पनाशीलताक कायामे कटुजीभ लगाओल गेल अछि तथापि क्रान्तिकारी आ यथार्थमयी छन्हि। संगहि संग वर्त्तमान समयक चोट, बढ़ैत सभ्यताक रंग, जमानाक क्रुर थापड़ आ समग्र जीवनक कटु-मधु अनुभवकेँ विवेकक तराजूपर तौलि कऽ उकेरल गेल अछि। भाषाक सहजता, शिल्पगत वैशिष्ट्य हिनक कथाक अपन फराक पहचान बना दैत अछि। कथाक कलात्मकता पाठकक अन्तस्थलकेँ छुबि लैत अछि।

मिथिला मैथिलक मानदण्डकेँ नव-नव सौवर्णी प्रतिभासँ मढ़बाक महनीय गुण साकेतानन्दजीमे पाओल जाइछ। निष्पक्ष भावेँ स्वीकार करए पड़ैछ जे शण्य-श्यामल सधन आग्रहुज लोक कलाक आर्वजक सम्पदासँ संरक्षित कोसी, कमला, गण्डकी आ वागमतीक पावन जलसँ अभिसिंचित एवम् विभिन्न वन सम्पदासँ आच्छादित मिथिला भूमि जतेक श्रीसम्पन्न रहल अछि, प्रतिभाक दृष्टिए सेहो एहि क्षेत्रक प्रतिस्पर्धी कतहु होअए से अनुपम जकर साकेतानन्दजी प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप छथि।

अपन प्रतिभाक प्रकाश विस्तृत कऽ प्राचीन कथाकारसँ सर्वथा भिन्न कथाक रचना कएल अछि। भाव, भाषा, संवेदनशीलता आ

सम्प्रेषणीयताक संग भाव संग्रहण अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ यथार्थकेँ कथा वस्तुसँ जोड़बाक दुस्साहस कथा कलाकेँ नव आयाम देलक अछि।

कथा कर्मीक हेतु एक आदर्शक उपस्थापना थिक। साकेतानन्दजीक रचनाक एहि विशिष्टताक आकलन प्रस्तुत करब सलाध्य नहि अपितु तथ्यकथन अछि। एकहि शब्दमे हिनका शलाध्य तँ अनाआसे उपलब्ध भेल छनि। तथास्तु।। ❑

मैथिलीक विकासमे नेपालक योगदान

सन्दर्भ बोध- मैथिली साहित्यक उत्पत्तिक जनमानसक हृदयसँ भेल अछि तेँ एहिठाम जनमानसक हेतु मनोरंजक गीत काव्य ओ नाटकक प्रधानता रहल अछि। एहि कारणेँ मैथिली साहित्यक विकासधारा मिथिलहिटामे नहि प्रवाहित भेल प्रत्युत् मिथिलाक अतिरिक्त एकर प्रधानधारा उत्तर नेपालमे एवम् दोसर पुर्वांचल प्रदेशमे प्रवाहित भेल। जहाँ तक वास्तविकता छैक नेपाल आ मिथिलाक सम्बन्ध सदा-सर्वदासँ आबि रहल अछि। कर्णाट् वंशीय राजा हरि सिंह देव मुसलमान आततायी गयासुद्दीन तुगलकसँ पराजित भऽ मिथिलासँ भागि नेपाल गेला ओतहि राज्यक स्थापना कएल। मिथिलाक विद्वान लोकनि सेहो अपनाकेँ असुरक्षित बुझि नेपालेमे आश्रय लेलनि। नेपालक तत्कालीन राजा लोकनि मैथिल विद्वावनक बड़ सम्मान कएलनि। ओहिठामक राजा संगीत आ नाटकक विशेष प्रेमी छलाह। कला मर्मज्ञ मैथिल विद्वान अपना संग अनेको विषय-वस्तुक पाण्डुलिपि लेने गेल छलाह तेँ हुनका सभक समादृत हएब उचिते छल। संगीतसँ परिपूर्ण मैथिली नाटकक रचना नेपालक तत्कालीन राजा लोकनिक अवधिमे मैथिल विद्वान द्वारा भेल। यैह कारण जे नेपाल मैथिला विद्वान आ भाषाक केन्द्र भऽ गेल रहए।

नेपालमे मैथिली भाषाकेँ राजकीय भाषा मान्यता भेटि गेल छलै।

मुख्य भाषाक रूपमे मैथिली गनल जाइत छल। साहित्यक हरेक विधा एहिठाम अनुप्राणित भेल। एहुखन नेपालक तराई क्षेत्रमे मैथिली भाषी कए मिथिलाक संस्कृतिक स्पष्ट प्रभाव देखल जाइत अछि।

'नाट्यम् रसात्मक काव्यम्' काव्य क्षेत्र तँ आरो चमत्कृत भेल। खास कऽ हृदय काव्यक भरपूर सामग्री नेपालमे ओरिआओल अछि।

सातम् आठम् शताब्दीक वौद्धगानसँ लऽ कऽ जे क्रम नेपालक धरतीपर मैथिलीक विकास हेतु चलि पड़ल छलैक ओ मध्य कालमे आबि अति समृद्ध अवस्थामे देखल जाइ अछि।

म.म. हर प्रसाद शास्त्री 1916 ई.मे सिद्ध साहित्यक अन्वेषण नेपाल मध्य कएल, जेकरा बंगला भाषाक प्राचीनतम साहित्य आनि वौद्धगान ओ दोहाक नामसँ प्रकाशित कएल।

ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर' नेपालहिमे प्राप्त भेल। विद्यापतिक प्रमाणिक पदावली एतुक्के देन थिक।

कर्णाट् वंशीय राजालोकनिक संग मल्लवंशीय राजा लोकनि सेहो मैथिली साहित्यक अनन्य प्रेमी छलाह। देखल जाइछ जे जय स्थित मल्लसँ लऽ कऽ रंजित मल्ल धरि एतए मैथिलीक सर्वांगीण विकास कएल। मल्लकालीन मैथिली साहित्यमे गीत तथा नाटकक प्रधानता रहल अछि। गीत काव्य भक्ति प्रधान अछि। भक्तपुर (भात गाँव)क राजा भूपतीन्द्र मल्ल (1687-1731) ई. राज्यकाल विष्णु, शिव आ भवानी आदिपरक शतश: मैथिली गीतक रचना कएने छलाह। एहिठामक रचित मैथिली गीतपर महाकवि विद्यापतिक रचनाक पूर्ण प्रभाव अछि। भाषा परिमार्जित एवम् सुललित देखल जाइछ-

"हे देवि! शरण राखू भवानी,
तुअ पद कमल भ्रमर मोर मानस
जनम जनम ईहो मानी।

भूतीन्द्र मल नृप ईहो गाओल

जय गिरिजा पति स्वामी।।”

मिथिलाक छिन्न-भिन्न भाषा, साहित्यक आकारकेँ सुरक्षित सम्वर्द्धित नेपालेक राजवंश द्वारा भेल। एहुरवन नेपालक लाइव्रेरीमे अमूल्य ग्रन्थ ओ दुर्लभ ग्रंथ सभ ठेकनाओल अछि जे जीर्णवस्थाकेँ प्राप्त कएने अछि।

विश्व साहित्यक पर्यालोचन कएलासँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे साहित्यक समस्त प्रभेदमे नाटकक स्थान अति महत्वपूर्ण अछि। संस्कृतक आचार्य लोकनि काव्येषुनाटकम् रम्यम्क अन्तर्गत नाटककेँ अनेक विषयक द्दष्टिए रमणीय कहि एकर सत्यतापर मोहर लगा देलन्हि। नाटकमे अनुकरणात्मक अभिनय द्दश्यमान होइछ तेँ एकरा रूपक कहल जाइछ। उन्मेष युगक प्रमुख नाटक केन्द्र भक्तपुर बनेपा कान्तिपुर अछि।

हरि सिंहदेवक नेपाल आगमनसँ इतिहासमे नाना प्रकारक परिवर्त्तन भेल तथा नेपाल आ मिथिलाक अनेक प्रकारक सम्बन्ध भऽ गेलैक। हरि सिंह देवक मृत्युक पश्चात् हुनक पुत्र मान सिंह देव तथा श्याम सिंह देव नेपालमे राज्य कएलन्हि। श्याम सिंह देव नेपालमे राज्य कएलन्हि। श्याम सिंह देवक कन्याक विवाह मिथिलामे भेल। एकर फल ई भेल जे मैथिल विद्वानक आदर सत्कार नेपालक राजदरवार एवम् अन्य विशिष्ट समाजमे बराबर होइत रहल। बादमे नेपालक मल्लवंशी राजाक पारिवारिक सम्बन्ध सेहो मिथिलामे भेल। एहिसँ मिथिलाक भाषाक प्रभाव नेपालपर नीक जकाँ पड़ल। मिथिलासँ विशिष्ट विद्वान, पण्डित, कवि, धर्मशास्त्री, संगीतज्ञ सभ नेपाल जाय लगलाह। मिथिलामे हुनका लोकनिक संरक्षणक सेहो कोनो व्यवस्था मुसलमान सवहिक निरंतर आक्रमणसँ नहि रहि गेल। इहए कारण भेल जे मैथिल विद्वान लोकनि

मिथिलासँ मैथिली नाटकक बीज नेपाल लऽ गेलाह। मैथिली नाटकक जन्म वस्तुत: मिथिलामे भेल मुदा विकास नेपालमे।

नेपालमे मैथिली नाटकक विकासक संक्षेपत: निम्नलिखत कारण भेल-

(क) पारस्ववर्ती क्षेत्र होएबाक कारण मिथिला आ नेपालक सांस्कृतिक सम्बन्ध बरोवरि अछि।

(ख) नेपाल सभ दिन हिन्दूराज्य रहल आ मिथिलामे सेहो हिन्दूत्वक प्रति मोह। नेपालक राजा एहिठामक विद्वान ओ पण्डितक सम्मान कएलन्हि।

(ग) नेपालक मल्लवंश ओ मिथिलाक कर्णट् वंशक रक्त सम्बन्ध दूनू क्षेत्रक निवासीमे, भाषा आ संस्कृतिकेँ आओर निकट अनवामे सहमत भेला।

(घ) मुसलमानी आक्रमणक कारणेँ एहि भू-भागक विद्वान आ पण्डित नेपाल जाय स्वस्थ चित्त भए सकलाह।

(ङ) हरि सिंह देव एतए 1324 ई. गमासुद्दीन तुलकसँ पराजित भए नेपालमे भात गाँवक निकट अपन राज्य स्थापित कएलन्हि जे पाँच पीढ़ी धरि चलल। एहि कर्णट शासन कालमे कवि साहित्यकारक पर्याप्त आदर भेल।

(च) मल्लवंशक राजा सभ सेहो मैथिल विद्वान, पण्डित, कवि संगीतज्ञ आदिकेँ सम्मानित करैत छलाह आ वसवाक हेतु पर्याप्त भूमि आ

सम्पत्ति देलन्हि।

(छ) मल्लवंशक शासनकालमे मैथिली नेपालक राज भाषा भए गेल तथा मैथिलीकेँ विकसित होएबाक अवसर भेटल।

(ज) इतिहास साक्षी अछि जे मुसलमानी प्रभुत्वमे नाटक नहि विकसित भेल। हिन्दू राज्य नेपाल तकर नीक वातावरण प्रस्तुत कएलक।

(झ) नाटकक विषय-वस्तु नेपाल आ मिथिलाक प्रचलित कथाक आधारपर लेल गेल।

मल्लवंशक राजा जय स्थित मल्ल स्वयं बड़ कलाप्रिय छलाह। हिनक समय 1394 ई. धरि कहल जाइछ। हिनक पश्चात् मक्षमल्ल (1474) ई. धरि नेपालमे मैथिली नाटकक रचनाक कोनो पुष्ट प्रमाण नहि भेटैछ। मक्षमल्लक पश्चात् नेपाल तीन भागमे विभक्त भऽ गेल आ तीनटा राजधानी भात गाँव, बनिकपुर तथा कान्तिपुर आ ललित पाटन आ काठमाण्डू स्थापित भेल। एहि तीनू राज्वंशक राजा लोकनि स्वयं नाटकार छला तथा ओ लोकनि कवि एवम् नाटककारकेँ प्रश्रय देलन्हि। विभिन्न अवसरपर नाटकक अभिनयक आयोजन करबैत छलाह। नाटककेँ रचनिहारकेँ प्रोत्साहन दैत छलाह।

भाग गाँव शाखामे विश्व मल्लक समय (1533) मे नाटकक बहुत विकास भेल। प्रसिद्ध नाटक 'विद्या विलाप'क रचना ओही समयमे भेल। एहि नाटकक अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सेहो 'विद्या विलाप' नाम विधा सुन्दर नामसँ कएल। जगज्योर्तिमल्ल (1618-1833) राज्यकालमे मैथिली नाटक खूब विकसित भेल। हिनक राज्यकालमे मुदित कुवलमश्व वंशमणिक लिखलन्हि। हर गौरी विवाह एवम् कुंज विहारी नाटक सेहो कम प्रसिद्धि नहि पओलक। हिनक पौत्र जगत्प्रकाश मल्लक समयमे

छौटा मैथिली नाटक लिखल गेल। उषाहरण, नलीय नाटकम्, पारिजात हरण, पार्वती हरण, मलय गन्धिनी एवम् मदन चरित्र। सुमति निता मित्र मल्ल स्वयं एक पैघ नाटककार छलाह जनिक लिखल आठ गोट नाटक भेटैत अछि। हिनक पुत्र भुपतीन्द्र मल्ल स्वयं कवि छलाह जनिका समय चौदहटा रचना भेल रंजित मल्लक समयमे तँ चरम सीमापर नाटकक रचना पहुँच गेल छल ई मल्ल वंशक अन्तिम राजा छलाह। 1921 ईस्वीमे मल्लवंशक अन्तिम राजा रंजित मल्लक समयमे (1921) मैथिली नाटक रचना एक प्रमुख बात थिक।

नेपालमे शहवंशक उदय आ एकीकरणक पश्चात् भाषाक नामपर गौण काज लेल अछि। गोरखा बोलीक प्रभावमे पड़ि मैथिली तँ लग-भग मेटाय गेल। खाली नाच, गीत कतहु-कतहु लेखन आदिमे एकर रूप सुरक्षित रहलैक। राणाकालीन नेपाल भाषा साहित्यक हेतु अन्धकारक युगक रूपमे मानल जाइत अछि। मैथिलीक अवस्था तँ नेपालमे विचारणीय रहल।

2007 सालक मुक्ति राणा शासनसँ आ बादमे 2017 साल धरि उथल-पुथलक समय होएबाक कारणेँ मैथिलीक विकास हेतु नेपालमे कोनो ठोस काज नहि भऽ सकल। 2014-16 सालमे एकटा 'नव जागरण' पत्रक एक मात्र अंकक प्रकाशन संतोष दिया सकैत अछि। 1960 ई.क बाद कनेक स्थिरता तँ आएल मुदा सरकारी संरक्षणक अभावमे गत 30 वर्षमे जतेक साहित्यिक काज होएबाक चाही ओ नहि भऽ सकल। कोनो साहित्यानुरागी आ पिपासु मोनकेँ आ अहलादित करएबला सामग्रीक अभाव सदैव खटकैत रहल तथापि एहि अवधिमे जे किछु भऽ सकल अछि तकर साहित्यक विधागत लेखा-जोखा कएल जा सकैछ।

आधुनिक काल : मध्यकालीन मैथिली साहित्यक जएटा उपलब्धि अछि से आधार स्तभक रूपमे मानल जाइछ। मुदा नेपालमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण काज 1960 ई.क बादे भेल जकरा हमरा लोकनि

आधुनिक कालक प्रारंभ मानि कऽ चलैत छी।

एहिसँ पूर्व पचासेक दशकमे पं. सुन्दर झा शास्त्री अपन मूल जन्म स्थान दरभंगासँ मैथिली लेखकक रूपैं प्रतिनिधित्व करैत छलाह। गलीक कुकुर आदि एखनो दरबार नै खुजलैए सन रचना करैत छलाह।

पं. जीवनाथ झा सेहो अपन प्रवन्ध काव्य आदि रचनासँ प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह। वस्तुत: जनकपुरमे पं. जीवनाथक प्रवेश एतुक्का वातावरणमे साहित्यक प्रति अनुराग जगौलक आ ओ साहित्यक गुरुजीक रूपमे सर्वत्र चर्चित भेलाह। डॉ. धीरेन्द्र साठिक बाद जनकपुरमे आधुनिक मैथिलीक शुरूआत कएलन्हि। ओ एहिसँ पूर्व मैथिली लेखकक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह। 1962 ई.मे प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन नेपालक मैथिली सहित्यक इतिहास लिखलन्हि, जाहिमे प्राचीन साहित्यक रूपमे चर्चा भेल अछि ओतेक आधुनिक कालक साहित्य हल्लुक प्रतीत भेल अछि। तेँ हिनकासँ तुलनात्मक दृष्टिए डॉ. जयकान्त मिश्रक इतिहास लेखन श्रेष्ठतर अछि। पहिल कारण तँ एक दशकमे साहित्य लेखन ओतेक समृद्ध नहि छल। दोसर सूचनागत त्रुटि सेहो प्रफूल्ल सिंहकेँ भेलन्हि।

आब तँ तीन दशकमे किछु-किछु एहन रचना सभ भेल अछि जकरा आंगुरपर गनल जा सकैत अछि।

प्रवन्ध काव्यमे पं. रमाकान्त झाक 'व्यथा' डॉ. धीरेन्द्रक 'त्रिपुण्ड' पं. मथुरानन्द चौधरी माथुरक खण्ड काव्य 'त्रीशूली' प्रमुख अछि।

मुक्तक काव्यमे डॉ. धीरेन्द्रक 'हैंगरमे टाँगल कोट' करूणा भरल ई गीत हमर' राम भरोस कापड़ि भ्रमरक बन्न कोठरीमे औनाइत धुँआ, नहि आब नहि, मोमक पिघलैत अधर, अपन्न-अनचिन्हार, विनोद चन्द्र झाक 'कृषक बाला, पं. शुभ नारायण झाक 'यंत्रणा', पं. सुरेश झाक मैथिली रस कलश काव्य प्रमुख कृति देखना जाइछ। पं. झा मैथिली गीता सेहो

लिखने छथि। चन्द्र शेखर झा शेखरक 'हम नेपाल हमर नेपाली' कविता संग्रह आएल अछि।

अनुवाद विधा : नेपालक कतिपय साहित्यकार विभिन्न रचनाक अनुवाद मैथिली भाषामे कएलनि अछि, जे हुनक मैथिली प्रेमक प्रतीक थिक। यदुवंश लाल चन्द्र सप्तरी जिलाक तिलाठी ग्रामवासी द्वारा 'उसैको लागि'क चाँदनी साहक रचनाकेँ लोकेश्वर व्यथित, पं. कृष्णा प्रसाद उपाध्यायक द्वारा विद्यापतिक पदावलीक, डॉ. धीरेन्द्रक 'उमर खैयानक' महाकवि भनुभक्तक रामायण मैथिलीमे अनुवाद कऽ वद्रीनायण वर्मा अद्भुत कएल अछि। प्रकाशनक बाटपर अछि पं. सूर्यकान्त झाक मेघदूतक, डॉ. रमेश द्वारा सात जापानी कथा अनुवाद मैथिलीमे चमत्कारी प्रयास थिक।

कथा-उपन्यास आ साक्षात्कार विधा : वस्तुत: नेपालमे मैथिली कथाक क्षेत्रमे सेहो नीक काज भेल अछि। किछु प्रतिबद्ध कथाकारक संग्रह एखन धरि समक्ष नहि भेल अछि तेँ छुछुन्न लगैत अछि। एखन धरि प्राप्त कथा संग्रहमे डॉ. धीरेन्द्रक 'कूहेश आ किरण', 'पझाइत धूरक आगि', 'शतरूपा आ मनु' राम भरोस कापड़ि भ्रमरक तोरा संगे जयवो रे कुजवा, रेवती रमण लालक 'पाधवनहि एलाह मधुपुरसँ' प्रमुख अछि।

डॉ. धीरेन्द्रक सम्पादनमे नेपालक प्रतिनिधि गल्प संग्रह, प्रो. सुरेन्द्र लाभक संपादनमे नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प प्रकाशित भेल अछि।

उपन्यास : एहि विधामे श्यामाझाक 'बिनु माइक बेटी', कुमरकान्तक 'सेहन्ता'क अतिरिक्त एम्हर डॉ. धीरेन्द्रक भोरुकवा, कादो कोयला, ठुमुकि चल, पाठककेँ सेतोष दैत अछि।

साक्षात्कार : साक्षात्कार विधामे रेवती रमण लालक साक्षात्कार एक मात्र पोथी अछि, ओना एहि क्षेत्रमे राम भरोस कापड़िक नीक काज सभ भेल अछि। जकरा अनतर्गत अश्रेय, केदारनाथ व्यथित, विजय

मल्ल, मातृका प्रसाद कोइरालाक साक्षात्कार खूब चर्चित भेल अछि।

नाटक : एहि विधामे आधुनिक नाटककारमे महेन्द्र मलंगिया लेखनमे भिड़ल छथि। प्रारंभिक रचना 'लक्ष्मण रेखा खण्डित', जुआएल कन-कनी, ओकरा आंगनक बारह मासा, टूटल तागक एकटा छोर, एकांकी संग्रह हुनक प्रमुख पुस्तकाकार छन्हि। काठक लोक फिलहाल चर्चामे आएल अछि। 'देहपर कोठी खसा दिअ' आलुक बोरी सन बहुतो रेडियो रूपक ओ लिखने छथि। एकांकी लेखकक रूपमे डॉ. धीरेन्द्र, राम भरोस कापड़ि, डॉ. लक्ष्मण शास्त्री, श्याम सुन्दर शशि, ललनक प्रमुख स्थान अछि।

निवन्ध समालोचना तथा संस्मरण : एहि विधामे प्रो. ब्रज किशोर ठाकुरक अध्ययन ओ विवेचन छोड़ि आन रचना पुस्तकाकार रूपमे नहि आबि रहल अछि। ओना, डॉ. धीरेन्द्रक साहित्य सम्बन्धी, भ्रमरक लोक संस्कृति सम्बन्धी, डॉ. विमलाक साहित्य सम्बन्धी महेन्द्र मलंगियाक, रेवती रमण लालक राजेन्द्र किशोरक विविध सामयिक निबन्ध सभ प्रकाशित भेल अछि।

यात्रा संस्मरण : एहि विधामे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना आएल अछि। प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक, रेवती रमण, श्याम शशि सेहो एक दिस संलग्न छथि। समालोचना संग्रहमे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादनमे नेपालक मैथिली पत्रकारिता आएल अछि।

पत्र साहित्य : 2025 सालसँ प्रारम्भ भेल नेपालक सामयिक संकलन युग आब एकटा ठोस रूप लऽ चुकल अछि। प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क सम्पादनमे मैथिली विराटनगरसँ डॉ. हरिदेव मिश्रक सम्पादनमे ईजोत काठमांडूसँ, पं. सुन्दर झा शास्त्रीक सम्पादनमे फूल-पात काठमांडूसँ, वाणीक हिलकोर जनकपुरसँ संगहि दुविधान एतहिसँ

एम्हर 2019 सँ राम भरोस कापड़िक सम्पादनमे गाम-घर साप्ताहिक निरन्तर प्रकाशित भऽ रहल अछि। अर्चना द्वैमासिक गत 16 वर्षसँ प्रकाशन आ 'आँजुर' आब मासिक रूपमे प्रकाशित भऽ रहल अछि। नेपाली भाषी साहित्यकार द्वारा मैथिली साहित्य सेवामे डॉ. कृष्णा प्रसाद उपाध्यायक नाम आदरसँ लेल जा सकैछ। ओना, हिनके भाइ डॉ. लक्ष्मण शास्त्री तँ अद्भुत काज कएलनि अछि। ई अपन दू गोट पोथी दऽ एक धर्म काव्य युधिष्ठीर महाकाव्य आ दोसर धीकताम् गीत काव्य। रामेश्वर प्रसाद अर्याल द्वारा रचित शिव-मधुक भाग्य रेखा नामक कथा काव्य देखि पड़ैत अछि। फुटकर रचनामे मनुव्राजकी, केवेर धिमिरे, जगदीश धिमिरे आदि प्रमुख छथि।

उपसंहार वा निर्णयात्मक बिन्दु : एहि तरहेँ विभिन्न विधामे गत तीस वर्षसँ भेल विकासक रूप रेखा पूर्ण संतोष तँ नहियेँ दैत अछि मात्र आशा टा जगबैत अछि। विकासक संभावना नीक छैक। अवसर पाबि चिक्कन काज कऽ सकैछ। नेपालमे संवैधानिक राजतंत्रक अन्तर्गत पूर्ण प्रजातंत्रक बहाली भेलासँ भाषा विकासक गति अपना ढंगसँ संचालित कएल जा सकैछ। राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानसँ सरकार 'मैथिली विभाग' खोललक अछि जाहिसँ किछु महत्वपूर्ण रचना सभक प्रकाशन होएब सम्भव थिक। खास कऽ मैथिली साहित्यक इतिहास, शब्द कोषओ विधागत संग्रह प्रमुख रहत। तहिना अनुसंधानक हेतु विद्वत वृतिक संभावना सेहो छैक जाहिसँ सरकारी वा नीज पुस्ट सामग्रीमे सुरक्षित मैथिलीक पुरना महत्वपूर्ण पाण्डुलिपिक उद्धार कएल जा सकैछ। सम्पूर्ण मैथिली संसारक हेतु अपन रचनासँ योगदान पहुँचेबाक लेल एहिठामक साहित्यकार तल्लीन छथि।

अस्तु...। ❑

मैथिली साहित्यक अवदान

मिथिला भाषा रामायण

चन्दा झा

कविवर मैथिली साहित्याकाशक चन्द्र थिकाह। मैथिली साहित्यकेँ अपन शीतल ज्योत्सनाक अमर वरदान देलन्हि। इएह कारण थिक जे ओ मैथिलीक महान् कविक रूपमे समादृत होइत आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत छथि। वस्तुत: विद्यापतिक पश्चात् इएहटा कवि भेलाह जे मातृभाषाक वास्तविक महत्व बुझि ओकर विकासक दिशामे प्रयत्नशील भेलाह।

उन्नैसम शताब्दीमे पुन: कवीश्वरे जनभाषाकेँ काव्य भाषाक रूपमे मण्डित कैलन्हि तथा अपन सशक्त लेखनीसँ अनवरत साहित्य सृष्टिमे योगदान दैत मातृवाणीक अर्चनामे सुवर्ण वर्णावलीक उपहार चढ़बैत रहलाह। हिनक वहुमुखी प्रतिभा, प्रगाढ़ पाण्डित्य, साहित्यक रूचि, पुरातत्व-प्रेम एवम् दीर्घ जीवन विविध प्रकारेँ मैथिली साहित्यक सम्वर्द्धनमे सहायक सिद्ध भेल। हिनक जन्म सन् 1931 ई.मे सप्तमी वृहस्पतिकेँ दड़िभंगा जिलाक पिण्डारूछ गाममे भेल छल। प्रारम्भिक शिक्षा मातृक बड़ गाँव सहरसा जिलामे भेल। बादमे संस्कृतक उच्च शिक्षाक हेतु पवित्र नगरी काशी गेलाह। काशीसँ प्रत्यागत भेलापर पाण्डित्यक अतिरिक्त हुनक कवित्व शक्तिक यशोवल्लरी चतुर्दिक पसरए लागल। बाल्यकालहिसँ प्रतिभापूर्ण प्रतीत भेलाह।

मिथिला भाषा रामायणक मूल प्रेरक स्व. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह छलाह। मातृभाषा मैथिलीमे धर्म ग्रंथक अभाव खटकलैन्ह। चन्दा झा शिवक समर्पित भक्त छलाह। शिवक प्रिय राम तेँ भक्ति भावना हुनक साहित्यक कृतिक विधा थिक। मातृभूमि ओ मातृभाषा प्रेमक पुष्पाञ्जलि दय ओ अपन काव्य देवताक अर्चना कैलन्हि। एहि दृष्टिए मिथिला भाषा रामायण हुनक सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रिय कीर्त्ति थिक। चन्दा झाक नामोल्लेख मात्रसँ हिनक रामायणक उद्घोष होइछ। ग्रन्थक नाम करणेसँ मिथिला-मैथिलीक प्रति कविक सहज अनुरागक परिचय भेटैत अछि। प्राय: ई शौभाग्य कोनो आन ग्रंथकेँ नहि हएत जेकर प्रत्येक शब्दपर विद्वत मण्डली विचार कएने हो तथा जे पाण्डित्यक कसौटीपर परिशुद्ध प्रमाणित भेल हो।

रामायण भारतीय वाङमय केर आदर्श कृति थिक। देशक चारित्रिक आदर्शकेँ अनुप्राणित करबाक लेल राम चरितक अवतार मैथिलीमे आवश्यक छल। वस्तुत: जाहि सांस्कृतिक संघर्षक युगमे चन्दा झाक आर्विभाव भेल छल तकर ई अनिवार्य प्रतिक्रिया छल। कवीश्वरक एहि कृतिक केँ सर्व प्रथम महा काव्यो हैबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। चन्द्र कवि जहिना काव्यात्मकतामे बाल्मीकि तहिना रचना करबामे प्रमुख। चन्दा झाकेँ युग जागरणक प्रतीक मानल जाइछ। ओना तँ मिथिला भाषा रामायणक मूलाधार थिक अध्यात्म रामायण मुदा अटूट श्रद्धाक कारणेँ मौलिकताक निर्वाहमे त्रुटि नहि होए देल अछि। विशेष कय मिथिलाक वर्णन, लक्ष्मण-परसुराम सम्वाद, लंका दाह वर्णन, राम अंगद-सम्वाद आदि कतेक स्थल अछि जतए कविक मौलिक प्रतिभा स्फुट भेल अछि, तथा मनोरम सिद्ध भेल अछि। वभिन्न रसक प्रयोग लेल राम कथाक महत्व सर्वोपरि अछि तहिना भाव प्रकाशनक क्रममे विविध अलंकारक प्रयोगसँ ओ एकर कला पक्षकेँ समृद्ध बनौने छथि। एतए स्पष्ट अछि जे रामायण मूलत: भक्ति काव्य थिक। मिथिलाक गौरवक गुणगान नहि

बिसरलाह अछि रामक मुँह कहबैत छथि-

"सत्य तिरहुति यज्ञभूमि पुण्य देनिहारि,
शास्त्रकेँ बजैत बेर कीर बैसि डारि-डारि।"

पुन: सीताक चरितक प्रसंगमे ओ एहि विषयकेँ नहि बिसरल छथि जे सीता मिथिलाक बेटी छलीह। सीता स्वयं कहलैन्ह-

"जनक जनक जननी अवनि,
रघुनन्दन प्राणेश
देवर लक्ष्मण हमर छथि,
नैहर मिथिलादेश।"

एकर भाषा ओ शैली माधुर्य जन साधारणकेँ आकृष्ट कएलक। ओ शीघ्रहि विद्वानसँ लऽ कऽअशिक्षित समाज मध्य ई प्रिय भए गेल। एहि गंथक अध्ययनसँ मैथिली विद्वानकेँ अपन मातृभाषाक गौरव ओ गंभीरताक ज्ञान भेलन्हि। एहि क्रममे देखब जे अशोक बाटिकाक वन्दिनी सीताकेँ अपन विपन्न जीवनसँ विशेष कठोर बचन कहबाक भनस्ताप छन्हि जे मनो वेदना विगलित भए उठल अछि- हे रघुनाथ! अनाथ जकाँ दश कंठकपूरी हम आइलि छी सिंहक त्रास महावनमे, हरि नीक समान हेराय छी। ❑

मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा ‘यदुवरक देन

सहरसा जिलाक प्राचीन लेखक वा कवि लोकनिक विस्तृत परिचय प्राप्त करबाक साधन नहि अछि। यद्यपि हुनका लोकनिक रचना अधिकांशत: प्रकाशित होइत छल ‘मिथिला मोद’मे परन्तु कोनो साहित्यकार अपन परिचयक प्रसंगमे नहि लिखैत छलाह।

यदुनाथ झा ‘यदुवर’ मैथिली भाषा एवम् साहित्यक विकासक लेल ‘मोद युग’मे जे कोनो अनवरत साहित्य रचना करैत रहलाह ताहिमे सँ एक प्रमुख व्यक्ति रहथि ‘यदुवर’ सहरसा जिलाक मुरहो गामक वासी, शिक्षे संस्कृतक विद्वान डाक-तार विभागमे जीविकापन्न रहथि।

मिथिला मोदक एक सशक्त लेखक आ व्यापक अर्थमे जातीय हित चिन्तक छलाह। हिनक जन्म अनुमानत: 1888 ई. तथा मृत्यु 1932 ई.मे भेलन्हि। मोदक जन्महिसँ हिनक रचना उपलब्ध भेल छल। डॉ. जयकान्त मिश्र हिनक प्रसंगमे कहैत छथि- ‘Enthuism for Maithili unbound, Very few well Parallel to him’ मैथिली साहित्यमे गीतक जे एकटा सशक्त परम्परा अछि ताहि क्रममे यदुवरजी बहुत गीतक रचना कएने छथि। ओकर विषय वस्तु प्रतिपादन करबाक शैली आदिमे परिवर्त्तन कऽ देलन्हि। गीतहुमे हुनक नव दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति भेल अछि। गीतक अतिरिक्त अनेको कविता, कैकटा निवन्ध मिथिलाक एक जटिल समस्या, वैवाहिक समस्याकेँ प्रस्तुत करैत कथा आदि प्रकाशित छनि। हिनक विचारधारा कतेक प्रगतिशील एवम्

आधुनिक छलनि से स्पष्ट रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि। मैथिलीक राष्ट्रीय गीतक संकलन मैथिली गितांजलीक भूमिकामे संकलन एवम् प्रकाशन कय यदुवरजी एकटा नव दिशाक संकेत कयलन्हि जकर ऐतिहासिक महत्व छैक।

भूमिकामे स्पष्ट कहने छथि : ज्ञान श्रृंगारिक सम्बन्धी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेल अछि आब राष्ट्रीय विषयक कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचेबाक अछि। आब राष्ट्रीय विषयक कविताक प्रकाशन होयब परमावश्यक अछि। एहिसँ सिद्ध होइछ जे मैथिलहुमे राष्टीय भावना एवम् आधुनिक विचारधाराक प्रादुर्भाव होमए लागल। शंकरक विवाह नामक गल्प, प्रभात प्रभा, मैथिलीक आरती नव युगक लोकनिसँ। गृष्म ॠतु वर्णन भ्रमर आदि काव्य रचना तथा वसन्त आदि निवन्ध प्रकाशित छनि जकर उल्लेख आगाँ कयल जाय।

मैथिली समाजक व्यापक रूपेँ हित चिन्तक मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक उन्नतिक हेतु सतत संघर्षशील। यदुवरजी कतहु कतहु परंपराक पालन करितहु विषय-वस्तु एवम् शिल्प दूहूमे नवीनता आनि देलनि। देश भक्ति भावनाकेँ स्पष्ट रूपेँ मुखरित कयने छथि।

सर्व प्रथम प्रस्तुत अछि हिनक किछु गीत। स्वभाविक धार्मिक प्रवृत्तिक रहबाक कारणेँ भक्ति गीतक रचना करब स्वाभाविक। थोड़ शब्दमे हृदयक भक्तिभाव अभिव्यक्ति करैत- 'दुर्गाक वन्दना :

जय जय दुर्गे, दुरित निवारणी,
भव भय हारिणी रिपु संहारिणी,
जन सुख कारीणि तारीणि,
वढ़ु तनु धारिणी जगदुपकारीणि,
शिव संग सतत विहारीणि,
जय नारायणी नरक निवारीणि

यदुवर अधम उधारीणि।।

तीनटा गीतमे चण्डीक वन्दना कयने छथि। जाहिमे देश भक्तिक भावनाक जे अभिव्यक्ति भेल अछि से पाँतीएसँ स्पष्ट होइछ।

"मिथिलाक मान राखू भारतमे चण्डी, एरहु सभ पाप हो रामा।।"

दोसर गीतमे भगवतीकेँ उपराग दैत छथिन्ह जे जाहि भूमिसँ अहाँ जन्म लेलहुँ तकरे आइ दुर्दशा अछि आ से अहाँ देखैत छी। विषम वस्तु एवम् विचारधारामे कतेक आधुनिकता छलनि तकर उदाहरण अछि-

"मैथिलीक आर्ती नामक कविता।" एहिमे मैथिली अपन सन्तानकेँ करूण स्वरेँ अपन दुर्दशा दूर करबाक लेल कहैत छथिन्ह। मिथिला शिक्षित समाजकेँ जे अपनाकेँ प्रवुद्ध मानैत छलाह हिन्दीए प्रिय छलैन्ह। हुनका लोकनिपर ने अंग्रेजक मातृभाषाक प्रेमक प्रभाव आ ने बंगालक नव जागरणक। अपने घरमे अपन मातृभाषा छोड़ि हिन्दीक भक्त बनि अपनाकेँ गौरवान्वित बुझनिहार मैथिल छलाह। स्वदेश, स्व भाषा, स्वजातिसँ विमुख मैथिल सन दोसर जाति भरिसके छल होएत। तेँ ओहन प्रवुद्ध मैथिलक हेतु-

"की अपराध हमर अछि कहु-कहु मिथिलाक सपूत सुजान। भए रहलहुँ अछि पतन दृष्टि सौं हम अवनत दुर्दिन खरिहान।।

चूभि-चूभि मुख हमहि सिखाओल बाजब माय-बाप अछि।

विलरै छी सभ हमर आई किए हा ओ अहाँ लोकनि प्रेमादिया।।

ताकू आँखि उठाय कनेको थिकहुँ मैथिली माय अहाँक।

खैने लात फिरै छी घर-घर, कोनहुँ विधिए जीवन

राखि।।

दोसर कविता अछि 'नवयुवक लोकनिसँ नम्र निवेदन'

कवि नवयुवक लोकनिसँ आग्रह करैत छथि जे ओ लोकनि आलस्य छोड़ि भाषा, जातिक विकासक लेल कटिवद्ध भय जाथि ताहि हेतु केओ उपहासो जौ करए तँ करए दियौ।

हँसय देखि यद्यपि केओ अहाँकेँ हँसय दियौ मरि पोरव,
देश, जाति ओ धर्म हेतु निज किछु तँ समय बँचाउ,
कोनहु विधि देशक सेवाकेँ सबथल राम जँचाउ।

साहियमे भ्रमरक चर्चा उत्यधिक होइत रहल। भ्रमरक गुंजन कानकेँ तृप्त मनहि करओ, मुदा ओकर स्वभाव निन्दनीय मानल जाइछ। लोभी, मुदा यदुवरजी रूपेँ उदार चरित्र व्यक्तिवक संग तुलना कएल।

एहि मान्यताक खण्डन कय नव दृष्टिकोणक स्थापना कयलन्हि अछि। हुनक मते भ्रमर कपटी नहि अछि ओ तँ गुणक अन्वेषण करैत रहैछ। एक फूलसँ दोसर फूलपर जायब गुणक अन्वेषण करब थिक। समाजहुमे गुणवान व्यक्तिक आदर होबक चाही। गुणवान व्यक्तिक गुण ग्राहकक अभाव नहि।

"कारी देखि भ्रमर सब तोहर, करइत छथि उपहास,
कपटी रूप कहै छथि सब और दैत अछि त्रास।
कारी रूप विचित्र यद्यपि तो किन्तु सकल गुण ख्यात्
गुणिए जन करइत छथि जगमे गुणी जनक सम्मान।"

जहिना भ्रमर चर्चि तहिना कोइली आद्दत। ऋतुराज वसन्तक वर्णन। वसन्तक आगमन संदेश बाहक कामदेवक एक शसक्त सैनिक थिक कोइली। परंच यदुवरजी एहू मान्यताकेँ खण्डित कय जागरणक दूतमानलन्हि अछि। एकटा ओ कोइलीसँ भारतवासीक पारस्परिक ईर्ष्या,

द्वेषकेँ व्यक्त करैत कहैत छथिन्ह।

"सुमरि सुमरि तोहरा हे कोकिल, नयन नीर वरिसाबै,
भाग्यहीन भारतवासीकेँ जनु कहियो विसराउ।
सभकेँ बचन सुनाय हितक पुनि वैर, विरोध हैटाउ।"

विषय-वस्तुमे नवीनता अनवाक क्रममे उपेक्षित तुच्छ वस्तुक वर्णन कय एकटा नव दिशाक सूत्र पात कयलनि। उल्लू, रेलबे स्टेशनक सिंगनल, मोसियानी, कुकुर आदिपर काव्य रचना करब हिनक मौलिकताक परिचायक थिक। उदाहरण स्वरूप- मोसियानी :

"शान्ति भरल छुए जे मोसियानी,
तोहर गुणकेँ सभ केओ मानी,
कलमक मारि खाइओ ढेरि,
तथापि दैत छ मसि प्रतिवेरि।"

एहि प्रकारेँ यदुवरजीक काव्य रचनाकेँ सर्वत्र कोनो ने कोनो प्रकारक मौलिकता, नवीनता अछिए। स्वदेश, स्वभाषा आ सभ जातिक हित चिन्तन, ओकर उन्नतिक हेतु अथक प्रयत्न करब संगहि ओकर अधिकार प्राप्तिक लेल संघर्षशील रहब प्रधान उद्देश्य छल।

मिथिला, मैथिल एवम् मैथिलीक लेल कतेक प्रेम छलनि तकर उदाहरण स्वरूप चारिटा पाँती-

"सूनू औ बन्धुगण त्यागू ई विषधर निन्दकेँ
कर्त्तव्य पालनमे लागू, भजु मातु पद अरविन्दकेँ
गाँथि एकताक सूत्रमे, हिनका जगाउ सब मिलि कए,
निज देश मिथिला, जाति मैथिल, मातृ भाषा मैथिली...।"

अस्तु शुभम्...। ❑

मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र

मिथिलाक भूमि एहन अछि जाहिठाम अदौसँ माँ मैथिलीक कोखिसँ विद्या भास्कर लोकनि जन्म ग्रहण करैत रहलाह अछि।

एहि सरिसबक माटिमे माँ मैथिलीक कोखिसँ एक एहन सूर्यक उदय भेल जे जन्म-ग्रहण करितहि अपन रश्मिसँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक क्षेत्रकेँ आलोकित कएल। विद्याध्ययन कऽ कौलिक मर्यादाक रक्षा कएलन्हि। एहन प्रातः स्मरणीय संतोषी, तपस्वी, निर्लोभी एवम् निरासक्त व्यक्ति भवनाथ मिश्र छलाह। हिनकासँ पूर्व आ पछातियो अनेक सरस्वतीक वरद पुत्र लोकनिक नाम लेल जा सकैछ जे मिथिलाक रहितहु मिथिलेत्तर प्रान्तोमे अपन नामोज्वल कएने छलाह ओ लोकनि थिकाह- "गौत्तम, कणाद, याज्ञवल्क्य, उदयनाचार्य, पक्षधर, मण्डन मिश्र, वाचस्पति, जय कृष्णा, त्रीलोचन, हरि मिश्र, गंगेश, विद्यापति, चन्दा झा, भारती, गार्गी, लक्ष्मीनाथ प्रभृति।" एहूमे अधिकांश सरिवसक माटिमे उत्पन्न भेनिहार छलाह। तपः पूत, परम ज्ञानी, शास्त्रानुसार चलनिहार एवम् नवन्यायक निष्णात भवनाथ मिश्र आजीवन ककरोसँ किछु याचना नहि कयल तेँ ई अयाचीक नामसँ बहु चर्चित भऽ गेलाह। अपन उपनाम अयाची सँ जगत विख्यात भेलाह। अभाव ओ असंतोषकेँ अपना लग कहियो फटके नहि देलन्हि। मात्र सवा कट्ठा बाड़ी जगह खेत ओ खरिहानक काज करैत छलन्हि। एहीसँ जीविका चलैत छलन्हि।

दुर्वासा दूभिक रस खाय रहैत छलाह। तैं अयाची साग-पात खाय काया ठाढ़ रखने छलाह। भव नाथक 'अयाची' टेक तोड़बा लए दैविक आ लौकिक प्रलोभवन सभ आएल मुदा ई टस-सँ-मस नहि भेलाह।

एहि तरह संकल्पक पालनमे हिनक धर्म पत्नी भवानीक सेहो सराहनीय सहयोग रहल। एहन आस्तिक दम्पतिक कोखिसँ अद्भुत संस्कारी पुत्रक जन्म भेल कहबी छैक 'बाढ़े पूत पिता के धर्मे' बालकक नाम शंकर मिश्र राखल गेल। शंकर शंकरे समान छल। त्यागसँ अमरत्वक प्राप्ति होइछ। असली सुख त्यागेसँ भेटैछ। त्यागी लोकक तुलना ककरोसँ नहि कएल जा सकैछ। अयाची द्वारा सांसारिक सुखक त्याग एक प्रेरणा पुंजक रूपमे अछि। वास्तविक ओ विशिष्ट आनन्दक अनुभूति त्यागीकेँ होइछ। बिना संकोच कहल जा सकैछ जे अयाची पारखी छलाह तैं ने ओ त्याग मय जीवन जीबाक आदर्श उपस्थित कएल। एहि सन्दर्भमे कविक उक्ति अछि-

"धन्य-धन्य मातृभूमि, सकल ज्ञान-गुणक खान
कतहु सबा कट्ठा मात्र बाड़ीक साग-पात,
औखन चमकैत अछि अयाचीक स्वाभिमान।।"

पूजा-पाठमे लीन रहनिहार अयाची पलखति भेलापर विद्या विलासमे लीन होथि। हुनक ख्याति सर्वत्र पसरि गेल छल। जखन दूर-दूरसँ जिज्ञासू छात्र लोकनि शंकाक समाधानार्थ हिनका लग अबैत छल तँ ई अपन बालककेँ भिड़ा देथि। आगन्तुक छात्रकेँ झुझुआइत देखि अयाची बुझि जाथि जे बालक शंकरक वयस कम तेँ ई लोकनि अपन अपमान बूझैत छथि तखन ओ कहि देथिन्ह जे शंकरक वयस नहि देखू।

बालक शंकरक प्रखड़ विद्वताक थाह पाबि ओ लोकनि स्वीकारैत छलाह जे मिथिलाक जतेक नाम सुनल ताहिसँ बेसी एहिठामक विशेषता अछि। अयाची पुत्र शंकरक संस्कार देखि मुक्त कण्ठसँ हिनक भाग्यक

भूरि-भूरि प्रशंसा करथि। भवनाथ जौं महादेव तौं भवानी सद्य: पार्वती प्रतीक छलीह। निर्धन पतिक अनुगामिनी, सती साध्वी ओ परम सहिष्णु छलीह। टकुरीसँ सूत काटि वस्त्र अपन आ पतिक हेतु ओरिआउन कऽ लैत छलीह। अभावी घर रहितो आतिथ्य भावमे अग्रगणी छलीह। जनश्रुति अछि एक समय अतिथि-सत्कारक हेतु घरमे ओरिआउन नहि भेलापर लोटा बन्धकी राखि भोजन सामग्री जुटाए बाड़ीसँ खम्हारू उपाड़ैत छलीह कि एक तमघैल स्वर्ण मुद्रा प्राप्त भेलन्हि। भवानी पुलकित भऽ गेलीह जे आब दरिद्रीक अन्त भऽ जाएत। मुदा अयाची लोहि स्वर्ण मुद्राक तमघैलकेँ अपन पुत्र शंकरक द्वारा राजाक कोषमे जमा करा देलन्हि किएक तँ माटिक धन राजकोष थिक। एहिपर हुनक पत्नी विचलित रहि गेलीह। एकरा दैवी प्रलोभन कहि सकैत छी।

मिथिलाक सभ्यता ओ संस्कृति संसारक सभ्यता ओ संस्कृतिसँ श्रेष्ठ अछि। विभिन्न ठामक विद्वान एहिठाम वर्षे रहि अपन ज्ञान पिपासाकेँ शान्त करैत छलाह। एहिठामसँ सभ्य ओ सुसंस्कृत भऽ जाइत छलाह। अपन संस्कारक परिचय लग-भग पाँचे वर्षक अवस्थामे अयाची पुत्र शंकर मिथिलेशकेँ जखन देल तँ ओ अवाक् रहि गेलाह आ अयाचीक तपश्ययाक प्रसादात् बालक बुझि नतमस्तक भऽ अभिनन्दन कएलन्हि- शकरक उक्ति :

“वालोहं जगदानन्द, नमे बाला सरस्वती,
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णेयाम जगत्रयम्।”

भवनाथ ओ भवानी दुहुक कर्म-कमलसँ धर्मक जे पराग झड़ल ताहिसँ मिथिलाक माटि अपलखित अछि।

अयाचीक निर्लोभता प्रस्ट प्रमाण तखन भेटैछ जखन मिथिलेश बालक शंकरक संस्कारसँ संतुष्ट भऽ अपन वेश कीमती रत्नक माला दर्गनि उतारि शंकरक गरामे पहिरा देल आ एक मोटरी स्वर्ण मुद्राक संग स्वयं

हाथीपर बालक शंकरकेँ अयाचीक डीहक माटि माथमे लगएबाक हेतु नेने एलाह। मिथिलो चित ढंगसँ तत्कालीन महाराजक सम्मान कएल। महाराज हिनक दैन्य दशा देखि खोरिस हेतु प्रर्याप्त धन प्रदान करबाक ईच्छा प्रगट कएल तँ अयाची करवद्ध कहल-

"अपने हमर टेककेँ नहि तोड़ू। हमरा कोनो वस्तुक प्रयोजन नहि अछि। ई व्रत निमहि जाय इएह हमर आकंक्षा।"

मिथिलेश हुनक चरण रज लऽ अपना कए धन्य मानल। बादमे भवानी बालक शंकरक कमाइ पुरस्कारसँ भिज्ञ करोलन्हि तँ प्रसन्न भेला जे आब दरिद्रता भागि जाएत मुदा तत्क्षणहि बालक शंकरक जन्मक समय मरनी चमैनकेँ निछाउर किछु नहि देने छलीह से मोन पड़ि गेलन्हि।

ताहि समय सहर्ष कहल जे ई सभटा रत्न स्वर्ण मरनीकेँ बाजा कए देल जाय। दुनू प्राणीक मतैक्यसँ मरनी डरीनकेँ दऽ देल गेल। ओहो एहि प्राप्त धनकेँ धर्म काज बुझि पैघ पोखरि खुनाए देलक। जे मधुबनी जिलान्तर्गत विद्यमान अछि, मुदा काल-क्रमे ई पोखरि विकृत ओ भथन भऽ गेल अछि जे औखन चमनिया-डावर नामसँ जानल जाइछ।

एखनहुँ ई श्लोक अयाची मिश्र पुत्र शंकर आ पक्षधर मिश्रक प्रति अछि-

"शंकर वाचस्पतियो:
शंकर वाचस्पति सद्दशी,
पक्षधर प्रति पक्षी भूतो
न भवति।"

अर्थात् शंकर ओ वाचस्पति तँ महादेव आ वृहस्पतिये छलाह। कहल जाइछ जे अयाचीक शंकर पक्षधर मिश्रक बाद भेल छलाह। ईहो अनुमान अछि जे मिश्र उपाधि- ओहि समयमे विद्वान लोकनिक होइत छल। खेदक विषय अछि जे एहन उद्भट न्यायक पण्डित अयाचीक कीर्त्ति

गाथाक कोनोटा प्रमाणिक पोथी- आ हिनक जन्म सम्बन्धी ई. सनक परिचय- ठोस रूपमे नहि प्राप्त अछि।

अयाचीक निर्माउल भूमि सरिसब अद्यावधि म.म. सर गंगा नाथ झा एवम् हुनक पुत्र लोकनि सन विभूतिक जन्म देने अछि। कवि सेहो अयाचीक डीहक माटि माथमे लगबैत कहि उठैत छथि-

“हे डीह! अमर कीर्त्तिक निधान
जकरा कण-कणमे स्वाभिमान।
थिक विप्र अयाचीक वर्त्तमान
से माटि थिक चन्दन समान।
सबा कट्ठा बाड़ीक साग
रखने छल अयाचीक पाग।।”

अन्तमे श्रद्धा सुमन चढ़बैत एहि मिथिलाक विभूतिकेँ नमन करैत छी। ❑

मैथिली साहित्यमे कविवर लाल दासक देन

मिथिलाक भूमि एहन अछि जाहिठाम अदौसँ माँ मैथिलीक कोखिसँ विद्या भास्कर लोकनि जनम् ग्रहण करैत रहलाह अछि। आधुनीक मैथिली साहित्यमे कवीश्वर चन्दाझाक पश्चात् लालदस अपन बहुविधि आयामसँ मैथिली साहित्यकेँ श्री सम्पन्न कयलन्हि। अपन साहित्यक गंभीरता, बहुमुखी प्रतिभा संगहि मातृभाषाक प्रति अगाध स्नेहसँ मैथिली साहित्यकेँ गद्य-पद्य, मौलिक ओ अनुदित सभ प्रकारक रचनासँ परिपूरित कयलन्हि।

कविवरक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत खड़ौआ गाममे एक कुलीन कायस्थ परिवारमे 1856 ई.मे भेल छल। पाँच वर्षक अवस्थामे अक्षरारंभ कएने रहथि। हिन्दी मैथिली आ फारसीक शिक्षा प्रप्त कएलोपरान्त संस्कृतक अध्ययनमे लागि गेलाह। अपन प्रतिभाक बले ओ संस्कृतमे पटुताकेँ प्राप्त कयलन्हि। एतए तक जे संस्कृत श्लोक रचनामे दक्षताकेँ प्राप्त कए लेल। धर्मात्मा पिताक कारणेँ हिनकोमे धर्मक प्रति अभिरूचि रहन्हि। उपयुक्त अवसर पाबि हिनक धर्मिक भावना पल्लवित ओ पुष्पित होइत गेल।

सौभाग्यसँ हिनका महाराज रमेश्वर सिंहक सद्दश आश्रय दाता भेटि गेलथिन्ह। महाराजक सानिध्यमे देशक विभिन्न तीर्थ स्थानक भ्रमण कऽ लेलन्हि। कहबी सार्थक भेल-

“सुकठीक वनिज पशुपतिक दर्शन” अर्थात् धार्मिक भावनाक

तृप्तिक अलावा प्रकृति सुषमाक अवलोकन करबाक सेहो सुअवसर भेटल।

राजदरबारमे काव्य मनीषी ओ विद्वानक सम्पर्क सेहो प्राप्त भेलन्हि। एहि सभ प्रकारक वातावरणक प्रभाव कविवरक व्यक्तित्व निर्माणमे बड़ पैघ काज कएलक। काव्य रचबाक प्रवृति हिनकामे वाल्यकालेसँ छलन्हि। विलक्षण प्रतिभा ओ प्रगाढ़ पाण्डित्यक मणि कंचन भाग पाबि कवित्व शक्ति अति प्रखड़ भए गेलन्हि।

कविवर लाल दासक सभसँ प्रसिद्ध कृति हुनक 1924 ई.क रमेश्वर चरित रामायण थिक। ई महाकाव्य मैथिली साहित्यक हेतु एक उत्कृष्ट कृति थिक। ई रामायण अति लोकप्रिय एवम् सभजन सुलभ ओ बोधगम्य होएबाक हेतु चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायणक समकक्षी साबित भेल। मैथिली साहित्य जगतमे दू दूटा राम काव्यक रचना होएब वस्तुत: गौरवक विषय मानल जाइत अछि।

मैथिली भाषामे रमेश्वर चरित रामायणक अतिरिक्त कविवरक अन्य कृतिमे प्रमुख अछि- सप्तशती दुर्गा टीका, चण्डी चरित, स्त्री धर्म शिक्षा, श्री सत्य नारायण कथा टीका, गणेश खण्ड, महेश्वर विनोद, हरितालिका व्रत कथा, वैधव भंजनी, अनेक लघु कविता, गीत तथा वन्दना। संगहि सावित्री-सत्यवान नाटकक रचना तँ बूझू सोनामे सुगन्धक काज कएलक अछि। मिला-जुला कए दर्जनसँ ऊपर रचना कए ई मैथिली साहित्यक कोशकेँ भड़ि देने छथि।

कविवरक काव्य प्रतिभाक परिप्रेक्ष्यमे : रामायण कविवरक एक उत्कृष्ट महाकाव्य थिक जाहिमे भक्ति भावनाक संग कविक काव्य कुशलताक विलक्षण एवम् पाण्डित्यक प्रखर परिचय भेटैत अछि। रामायणक नामकरणेमे सीताक चरित्रक महिमा देखौलन्हि अछि। रामायणमे रामक महानताक प्रमुख श्रेय सीताक चरित्रकेँ अछि। सीता

चरित्रक महानताक विवरण प्रस्तुत करैत कवि कहि उठैत छथि-

“शक्तिमान जगशक्तिक योग
शक्ति विमुख शव सन सब लोग
मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक सीता रूप प्रधान
तनिक नाम जपि पाव नर, दुहु लोकक कल्याण।।”

श्लेष द्वारा कवि आश्रय दाता महाराज रमेश्वर सिंहक नामोल्लेख सेहो कएने छथि। कविवर लालदास यद्यपि अपन रमेश्वर चरित रामायणक आधार मुख्यत: वाल्मीकि रामायणकेँ कहने छथि, मुदा अध्ययनसँ थाह भेटैत अछि जे वाल्मीकि रामक महिमा रामक रूपेँ स्वीकार कएने छथि, मुदा लालदासक रामक महिमा रमेश्वर होएबाक कारण अर्थात् रमा (सीताक) पति होएवाक कारणे मानने छथि। सीताक अभावमे सहस्त्र वाहुक समक्ष हुनक समस्त शौर्य समाप्त भऽ जएतन्हि आसुरी प्रवृतिक आगाँ जकरा लेल सीता ओकर वध सहजहि कऽ सकैत छलीह। वाल्मीकि अपन रामायणमे सभ स्थलपर रामक गुण गान कएने छथि, मुदा लालदास रामक स्तुति करैत छथि तँ हुनका विदेह दुहिता प्रीतिपद कहि ई संकेत दैत छथि जे रामक समस्त कार्य-कलाप सीताकेँ प्रसन्न राखबाक हेतु होइत अछि। लालदास सीताकेँ सृष्टिक मूल शक्ति कहैत छथि।

लालदास अपन रामायणमे परम्परागत आठ काण्डक अलावा नवम् पुष्कर काण्डक रचना कए सीताक असाधारण महत्वकेँ अओरो बढ़ा देने छथि। एहि काण्ड सभमे रामक पराक्रमक श्रेय एक मात्र सीताकेँ छन्हि।

राम निमित्त मात्र छथि। उपयुर्क्त आधारपर लालदास कृत रमेश्वर चरित रामायण वाल्मीकि रामायणसँ अपन भिन्नता स्पष्ट कए दैत अछि।

कविवर लाल दास अपन रामायणक रचना जनभाषामे कयलन्हि।

मनबोध प्रसिद्धो तत्सम् शब्दकेँ तद्भव बनाए जतए विकृत कए देने छथि, लालदास शिष्ट लोकक भाषा ग्रहण कयलन्हि। अशिक्षित लोकक भाषा नहि। फलत: तत्सम शब्दक संग ठेंठ शब्दक प्रयोग अत्यन्त रोचक सिद्ध भेल अछि। मनबोधकेँ ठेंठ शब्दक प्रति अन्ध भक्ति छलन्हि, मुदा लालदास, चन्दा झा सदृश भावक सहज अभिव्यक्ति हेतु उचित शब्दक प्रयोग कयलन्हि।

मैथिल संस्कृतिक उल्लेख अपन रामायणमे कविवर नीक जकाँ कयने छथि। ववाहक अवसरपर विपटाक बिनोद, समधिकेँ गारि देब, डहकन गायब आदिक मनोरंजक चित्र प्रस्तुत कयने छथि जे द्रष्टव्य थिक-

“मैथिल विपटा लगबए ताल
कहए कृपण बड़ अवध भूपाल।
चारि बेर खैतहुँ जे भोज
पबितहुँ दान होइत नहि ओज।
खर्चक डरे अवध महराज
कयल एकहि बेर चारू काज
अपने लेता चारि दहेज
याचक, नर्त्तक पुरलक भेज।”
एक आर चित्रण अछि-
“वैसथि भोजन करए नरेश
डहकन गाब नारि गण वेशे।
सुनि समधीन मुखसँ प्रिय गारि
हँसथि खाथि पुनि बुझथि विचारि।”

कविवरक रमेश्वर चरित रामायण मैथिली साहित्यक हेतु एक अक्षम नीधि थिक। ई सम्पूर्ण महाकाव्य वर्णानात्मक शैलीमे लिखल गेल

अछि। विषय वस्तुक वर्णन स्वाभाविक सरल आ मनोरम अछि। लंका काव्यक किछु पाँतीसँ-

“लंका जरए अथान सन, बढ़ल ज्वाला आकाश
रवि सन कवि तेहि बीचमे शोभित प्रभा प्रकाश।।
अनल अनिल साहित सौं लंका कैं हनुमान,
भष्म कएल छन मे यथा त्रिपुरहि रूद्रक वाण।।”

अपन जानकी बन्दनामे कविवर प्रौढ़ कल्पना शक्तिक परिचय देने छथि। वन्दनाक पद लालित्य आ लेखन शैलीक विशेष्ता देखक योग्य-

“जय जय जनक सूते जगारिणी जानकि जगदम्बे
हम मति मन्द वद्ध भव बन्धन केवल श्रीपदआशे।
करिअ कृपा भव पास विमोचिनी जानि अपन मोहिदासे।”

एतबे नहि, गीत काव्यक विलक्षण रचना सेहो कविवर कएने छथि। प्रकृति पुरुषक संयोग ‘वर्षा-गीत’मे वर्षामे मानव सदृश सम्वोधन करैत-

“शोभए वर्षा ऋृतु सुन्दरमे, मूर्त्तिमान आकाशे
सन्धया राग रूप चन्दन सौं चर्चित देह विकासे
जीवन मूल लाल दुखनाशक वर्षा सुख स्वच्छन्दे।”

मैथिली साहित्यमे कविवर लालदास तावत काल धरि अपन प्रभाव रखताह जावत काल धरि मिथिलाक धरा-धाम रहत। ❑

मिथिलाक बाल साहित्य

मिथिलाक साहित्यक इतिहासक अवलोकन कयलासँ ज्ञात होइछ जे एकर गद्य साहित्य, पद्य साहित्य, कथा साहित्य, उपन्यास साहित्य, नाट्य साहित्य, लोक साहित्य, हास्य साहित्य एवम् यात्रा साहित्य कालक्रमानुसार उत्तरोत्तर विकसित होइत आएल अछि, मुदा साहित्य मध्य बाल साहित्यक विकास ताहि रूपेँ नहि भऽ पओलक। केओ ई नहि ध्यान देल जे बालके कोनो समाजक निर्माणाधार थिक। बाल अवस्थेक बाद पुरुष वा नारी जीवनमे पूर्णता अबैछ।

एहि शून्यताकेँ सर्व प्रथम मैथिल कवि मनबोध स्वीकार कयलनि। हिनकासँ पहिने कवि लोकनि नारीक केवल रूप माधुरी देखलन्हि। श्रृंगारिक रचना कऽ अपार भण्डार साहित्य मध्य बनाय देल। ओ लोकनि एहि दिस ध्यान नहि देलनि जे नारीक चरम उत्कर्ष ओकर मातृत्वमे निहित अछि। तेँ मनबोध जखन बाल कृष्णक रूपकेँ उपस्थित करए लगलाह तँ यशोदाक मातृत्वकेँ तेहन महिमासँ मण्डित कए देल जे हुनक मातृ रूपक प्रतिष्ठा अमर भए गेल। ओ नारी समाजक हेतु प्रेरणादायक सिद्ध भेल अछि।

बाल चेष्टाक जतेक प्रभावोत्पादक स्वाभाविक वर्णन कृष्णजन्ममे अछि ओ अन्यत्र दुर्लभ कहल जा सकैत अछि। बाल छविमे जे एक गोट मृदुता होइछ, ओकर कौतुकमे जे एकटा आह्लाद रहैछ तथा ओकर

मुस्कानमे जे शुचिता रहैछ ताहि दिस एक मात्र मनबोधेक ध्यान गेलन्हि। कृष्णक बाल रूपक अंकन कए मनबोध मैथिली काव् मध्य सर्वथा नव परंपराक जन्म देलनि। एहिसँ पूर्वक साहित्यमे वात्सल्य रसकेँ भाव-मात्र मानल जाइत छल। एकरा रसमध्य नहि परिगणित कएल जाइत छल।

कृष्ण जन्मक वात्सल्य वर्णनक मौलिकताक उल्लेख करैत डॉ. जगदीश नारायण प्रसाद एहि रूपेँ कएलनि अछि-

> "हिन्दी साहित्यमे जाहि रूपेँ महाकवि सूरदास कृष्णक बाल्य रूपक वर्णन कए एक दिस साहित्यक अपूर्ण क्षेत्रकेँ पूर्ण कयलन्हि आ दोसर दिस वात्सल्य रसकेँ दसम् रसमे परिगणित कयलन्हि तहिना मनबोध मिथिलाक साहित्यमे नवीन परंपराक सूत्रपात कए एहि रसक महत्ताकेँ व्यक्त कयलन्हि अछि।"

बाल कृष्णक एक सजीव वर्णन देखल जाए-

"कतओक दिवस जखन बीति गेल
हरि पुनि हथगर, गोड़गर भेल।
से कोन ठाम कतए नहि जाथि
कय बेर अंगनहुँ सँ बहराथि।
कय बेर चून दही वधि खाथि।"

एतबे नहि थोड़बो अनदेखी भेलापर आगिकेँ छुवि लैत छथि- "कय बेर पकला तकला बिनु।" प्रकृतिसँ उपादान लए कवि कृष्णक सौन्दर्यक सांगो-पांग वर्णन कयने छथि-

"ताहि बिच देखल आनन्द कंद
जनि उड़गन विच पूरन चन्द्र।
कनक मुकुट तेहि जगमग जोती,
पीअर वसन दसन गजमोती।"

मनवोधक कृष्ण-जन्मकैं बुकानन साहेब मिथिलाक सर्वाधिक लोक प्रिय काव्य कहलनि अछि। डॉ. उमेश मिश्र कृष्ण-जन्मक प्रसेगमे कहने छथि-

> “विचार कयने ई स्पष्ट बुझि पड़ल जे सरल ओ मधुर भाषामे भगवानक जन्म लेव बाल चरित्रक उत्कृष्ट क्रियाकलापक संग भक्ति उत्पन्न करयबला इएहटा काव्य अपना आपमे लिखल गेल। ई कहब अनुचित नहि होएत जे उत्तर भारतीय भाषा सभमे मध्यकालीन कृष्ण विषयक कम्मे काव्य एहि गुणसँ सम्पन्न भेटत।”

प्रो. रमानाथ झा एहि क्रममे कहने छथि-

“मनबोध सर्व प्रथम कवि भेलाह जे विद्यापतिक सम्प्रदायकैं छोड़ि एक गोट नव ढंगक काव्य रचना कयलन्हि। भाव-भाषा, शिल्प ओ शैली सभ दृष्टिए ओ मिथिलाक बाल साहित्य परिवर्त्तनशील बनाओल। मनबोधक कृष्ण जन्ममे कृष्णक वाल्य अवस्थाक वर्णन नहि अछि, अपितु विविध लीलाक वर्णन अछि।”

डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाक शब्दमे-

> “कृष्ण-जन्म एक गोट वर्णन प्रधान काव्य ग्रंथ अछि। एहिमे लोक जीवनक प्रति नीक जकाँ ध्यान आकृष्ट भेल अछि। कृष्ण जन्मोत्सवपर नगर भरिमे हकार देब, तेल सिन्दुर बाँटव सोहर गान करब आदिक वर्णन विलक्षण ढंगसँ कयल अछि। एहिठाम भाषा अत्यन्त सरल, शब्दक लालित्य वाक्यक विन्यास बड़ रूचिगर आ कटगर भेल अछि। एहि रचनाक नामकरणक अनुसार मात्र वाल्येवस्थाक वर्णन होमएक चाही जे बाल साहित्यक विधानुकूल होइत मुदा से नहि भऽ कृष्णक समग्र लीलाक वर्णन भेटैछ।”

डॉ. ग्रियरसनक अनुसार मनबोधक भाषा विद्यापति ओ हर्षनाथक भाषाक बीच कड़ीक काज कएने अछि। ठेंठ शब्दक प्रयोगसँ भाषामे लालित्य स्वत: आबि गेल अछि। जकर अनुशरण अनेको कविलोकनि कएल ताहिमे प्रमुख छथि कवीश्वर चन्दा झा।

मिथिलाक बाल साहित्य मध्य कविशेखर बद्री नाथ झाक 'एकावली परिणय' महाकाव्यक सेहो विशिष्ट स्थान अछि। बाल्य वर्णन मनबोधे जकाँ सद्य: प्रभावकारी सावित भेल अछि। नीति सम्बन्धी सभ रचना बाल साहित्यक अन्तर्गत अबैत अछि। एहि श्रेणीमे कविवर सीताराम झाक 'शिक्षा सुधा', जनार्दन झाक 'नीति पद्यावली', धनुषधारी लाल दासक धनुषधारी सतसई, पं. वेदानन्द झाक 'रतन बटुआ' आदिक उल्लेख कएल जा सकैछ।

मुक्तक काव्यमे कंटकक 'तरेगन' शीर्षक कविताक विशेष महत्व अछि। कारण एहिमे सभसँ पहिने परम्परागत शिक्षा प्रधान कविताक नीरसताकेँ हटाओल गेल अछि- जे निम्नलिखित पाँतीसँ बुझना जाइछ-

"छिट पुट मोती की धन सारा
नभ मे उगल चकमक तारा।
तम्बुक तानल बूटा काढ़ि
दीदी हमर बड़ बुधिआरि।"

एहि परम्परामे श्री गोविन्दक 'पाकल आम' एवम् किरण झाक 'परात' कविता लिखल गेल छल। किरणजीक बाल सम्बन्धी चित्रण केहन चित्ताकर्षक अछि-

"दूर नै जो रे बाउ हमर
तों जोने बलानक पार
जानि न करवन हुल्लसन बढ़तै

छै भुताहि ई धार।।”

बाल साहित्यक कवितामे प्रो. सुमनजीक अवदान सेहो बड़ महत्वपूर्ण अछि। अपन रचना ‘दत्तवती’ महाकाव्यमे कवि वात्सल्य रूपक जे वर्णन कैने छथि ओ सहृदय संवेद्य अछि। मैथिली ओहुना शैशव वर्णनमे विरल अछि, समुमनजीक शैशव वर्णनक तुलना कवि शेखर द्वारा रचित एकावली परिणयक शैशव वर्णनसँ कयल जा सकैछ। द्रष्टव्य अछि-

“करवनहुँ चून लेपि कारीख केर
करवनहुँ करथि श्रृंगार
घर-घर घूमथि चूमथि भूतल
अपराधिक सभ व्यवहार।
तोहर बोल अमोल सनक
जग भरि जाय विकाय
माय-बाप जौहरी
हँसी हीरककेँ सहज जोगाय।”

बालकक प्रति एक आरो अपूर्व चित्रण देखल जाए-

“नगन मगन सतत दिगम्बर
दिग धवलित मुस्कान
हाथ उठय चाहै छथि पकड़य
मामा चान।”

मैथिल कवि सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाईंक सेहो बाल साहित्य मध्य अवदान देखल जाए-

“आजुके ललना गति कहलो ने जाई

ई दुख ककरा कहब गे माई
दिन भरि आइलि छथि निकहि खेलाइ
साँझ पड़ैत देल कननी लगाइ।”

चन्द्र नाथ मिश्र अमर मातृ स्नेहक जे सरल ओ हृदयग्राही वर्णन कैलन्हि अछि से अपन स्वाभाविकताक कारणें सहजहि हृदयकें स्पन्दित करबामे समर्थ होइछ-

“जनिक कामना कालिन्दीमे एक हमहि जल जात
जीवन उद्याचल शिखरपर मधुमन अरुणिक प्रात।
हमर यशोदा, रूप खुरलुच्ची तनिके माखन चोर
तनिक सुधिक हिलकोर उठय नित मानस सरमे जोर।”

मिथिलाक बाल साहित्यक पोषणमे शिशु मासिक पत्रिकाक प्रकाशन सेहो उल्लेखनीय अछि। एहिमे प्रो. श्री तंत्रनाथ झाक ‘वानर’ प्रो. ईश नाथ झाक ‘वन्दना’ आदि कविता छपल छल।

मिथिलाक बाल साहित्यक विकासक दृष्टिए ‘बटूक’ दरिभंगा ओ ‘धीया-पूता’ लोहना दरिभंगासँ (1957) प्रकाशित भेल छल। जकर अद्भुत योगदान रहल। ओहि मध्य ईश नाथ झा, सुमनजी, किरणजी, तेजनाथ झा, ब्रज किशोर वर्मा, रमाकर, अमरजी, धीरेन्द्र, मथुरानन्द माथुर आदिक कविता छपैत रहल छल।

मिथिला मिहिर जहियासँ नवीन साज-सज्जासँ छपब आरम्भ भेल तहियासँ ओहि मध्य ‘बाल स्तम्भ’ मे अनेकानेक बालोपयोगी कविता नेना भुटका चौपाड़ि आदि छपैत रहल। मुदा एकर अतिरिक्त सुन्दर बालोपयोगी रचना छपल अछि। मैथिली साहित्य मञ्जरी, मैथिली साहित्य बोध पाठ्य पुस्तकमे। एहि सभमे जनिक रचना संकलित भेल अछि ताहिमे छथि तंत्रनाथ झा, सुमनजी, प्रो. ईश नाथ झा, प्रो. हरिमोहन झा

ओ आरसी प्रसाद प्रभृत्ति।

वस्तुत: सुनियोजित रूपमे अद्यावधि बालोपयोगी कविता छापब आरम्भ नहि भेल अछि आ ने तत्संम्बन्धी पुस्तके प्रर्याप्त मात्रामे प्रकाशित भेल अछि। तेँ मिथिलाक बाल साहित्य अहुखन सम्पन्नताकेँ नहि प्राप्त कऽ सकल अछि। ❑

ओझहा लेखेँ गाम बताह

मिथिलांचलक बहु चर्चित लोकोक्तिक रूपमे 'ओझहा लेखेँ गाम बताह'क प्रयोग होइत अछि। मुदा एहि लोकोक्तिसँ मिथिलांचलक समाजक वास्तविकताक थाह भेटैत अछि। हास्य-व्यंग्यक भरपूर सामग्रीक संग ढकोसला पूर्ण पोंगा-पंथी विचार ओ रूढ़िवादिताक स्पष्ट छाप लक्षित होइछ। प्राचीन परम्परा आ आधुनिक परिवर्त्तनशीलताक बीच वैचारिक विपरीतताक कारणेँ एक ओर ओझहा लेखेँ गाम बताह कहल जाइछ तँ दोसर ओर ओझहाक विपरीत व्यवहार-विचार गामक दृष्टिमे ओझहाकेँ बताह बुझैत अछि।

आब पुन: विचार कएल जाय ई ओझहा के थिकाह?

ओना तँ कान कुब्ज व्राह्मण लोकनि ओझहा उपनाम वा उपाधि नामसँ जानल जाइत छथि। दोसर गाम-घरमे जादू-टोना, तंत्र-मंत्रक द्वारा झार-फूँक कएनिहार लोककेँ प्राय: ओझहा कहल जाइत छन्हि। खास कय एहू ओझहाक समयपर बड़ महत्व होइत अछि। अधिकांश ओझहा तँ धूर्त्त शिरोमणि होइत छथि जे प्राय: मनो वैज्ञानिक ढंगसँ अधेर युवतीक भूत झाड़ब माध्यमसँ अपन मनोनुकूल स्वार्थक पूर्ति कऽ लैत छथि। एहि तरहक ओझहा अन्ध विश्वासी समाजक बीच समादृत होइत छथि।

एहिठाम ओझहासँ तात्पर्य अछि मैथिल व्राह्मण जे 'झा' उपाधिधारी होइत छथि। विवाहोपरान्त 'झा'क आगाँ ओ उपसर्ग जुटि

जाइत छन्हि आ मूल नामक लोप भऽ जाइत छन्हि आ एहि तरहेँ सासुरमे ओझहाक नामसँ प्रख्यात भऽ जाइत छथि। जीवन पर्यन्त ओझहाक नामसँ सम्बोधित होइत छथि।

खाहे ओझहा वक-नेर होथि वा वुधियार, सासुरमे सारि, सरहोजि, सार, ससुर, सासु आ समाजक बीच अपन वर्चस्व स्थापित कऽ लेबाक पूर्ण चेष्टा करैत छथि। नवका धाही ओझहाक विशेष प्रभावकारी होइत छन्हि। एहि नवीन परिवेशमे ओ अपन (परिवार) गाम-घरक ख्याल नहि राखि ठोस धरातलपर पैर नहि रखैत छथि। मुदा शनै: शनै: महत्व घटल जाइत छन्हि आ ई पलासक फूल प्रतीत होमए लगैत छथि। हमरा तँ आशंका अछि जे वर्त्तमान समयमे उपाधि हँटएबाक जे अभियान शुरू भेल अछि, ताहिसँ ओझहा कहायब भविष्यमे संदिग्ध रहत। वास्तविकता तँ ई भेल जे ओझहा माने भेला नव विवाहित (दुल्हा) जमाय। खास कऽ मैथिलक जमायकेँ सर्वोपरि स्थान देल जाइत अछि। इएह कारण जे ओझहा सभक दृष्टिमे देव तुल्य रहैत छथि।

आब गाम बताहक तात्पर्य की?

ओना तँ गाम बताह प्राय: सभक लेल होइत अछि, मुदा स्वीकार कएनिहार कम लोक होइत छथि। कहबी छैक- ‘खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा।’ तेँ बदनाम छथि ओझहा। नवयुवक सभक लेखेँ गामक तात्पर्य होइत अछि गाम-घरक परम्परावादी लोक जे केवल अनुशासन वा नियंत्रणक गप्प करैत छथि।

बूढ़ पुरान लोकक लेल गामक तात्पर्य होइछ गामक अगत्ती छौँड़ा वा व्यवस्था विरोधी वा शास्त्रानुसार कलयुगक प्रतिनिधित्व कएनिहार। एहि तरहेँ देखैत छी जे स्त्रीगणों समाजमे युगानुकूले परिवर्त्तन भऽ गेल अछि, जाहिसँ विरोधाभासक मध्य जीवन जीबए पड़ैत छैक। संस्कारक अन्तर्विरोध ओ विचारक अन्तर्विरोध मिलि कए वतहपन स्वत: आनि दैत

अछि, मुदा सभक हेतु दोषी होइत छथि ओझहे। ओझहाक सत्यो गप्पकेँ हँसी-चौलमे उड़ा देल जाइछ। समूहक बीच एकसर ओझहाक बातकेँ धोपि देल जाइछ। तेँ ओझहाक दृष्टिकोणमे गाम बताह होएब किछु अर्थ रखैछ।

प्राचीन विचारधाराक पालनार्थ किछु निर्देश-

मिथिलाक कतिपय गाम-घरमे आधुनिकताक प्रभावसँ भलेँ प्रभावित शिक्षित-अशिक्षित लोक अछि, मुदा विवाह सम्बन्धी परम्परा पुरने रीति-रिवाजसँ होइत अछि। जकर किछु ज्वलन्त उदाहरण देखल जाइछ- केहनो पढ़ल-लिखल दुल्हा होथि- सम्पूर्ण शरीरक कपड़ा उतारै पड़तन्हि, ओठगर कुटए पड़तन्हि, नाक पकड़ि कऽ घुमाएल जेताहे संगहि ठक-वक प्रदर्शनमे जवाब देमए पड़तन्हियेँ ताकि ठकाएब वा वकनेर ने होथि एकर अतिरिक्तो 'नयना-योगिनक प्रक्रियामे ओझहाक पूर्ण तरहेँ अन्तर्विक्षा Interview) लऽ लेल जाइत छन्हि। एतबेसँ ओझहाकेँ मोजर नहि होइछ। एकर अतिरिक्त अनेका-नेक नियमक पालन करए पड़ैत छनहि। कोहवरमे सदिखन दबकल ढाबुस बेंग जकाँ रहथि, मुँह झाँपि बहार-भीतर होथि। सासुरक परिसरमे यथोचित बेश-भूषा रहन्हि, माथपर पाग ओ देहपर चादरि वा तौनी रहन्हि, कानपर जनौउ चढ़ाबथि पानि लऽ कऽ मूतथि, नद्दी फिरवा लय संगमे खबास चाहिअन्हि, पीढ़िपर बैसि गीत नादक संग भोजन करथि संगहि मुहुर्त्त, दिन-बेरागन, दिक्शूल ओ चन्द्रमाक अनुकूलतापर यात्रा करथि, अपन पत्नीक संग अलक्षित रूपमे रात्रिक मध्य भागमे सहवास करथि संगहि सन्ध्या वन्दन गायत्रीक जप कयल करथि। एहि तरहक नियमक पालन ओझहा करथि से मान्य होइछ।

ओझहाक उग्रवादी विचार-

मुदा ई ओझहा माथपर पाग नहि लेताह, चादरि देहपर नहि लेता

आ बाहरो भेलापर पाग-दोपट्टा नहि धारण करताह, चानन-ठोप नहि करताह, मौहकक गीत नहि सुनताह! ने दिन-बेरागनक अनुकूल अएताह-जयताह, कोहबर घरमे दबकल ढाबुस बेंग नहि बनताह। पत्नीक संग निर्वाध वार्तालाप करताह, सिनेमा-कर्कस ओ कब जयताह। भूमि आसनक बदला आकास भोजन करताह। टेबुल-कुर्सीक लंग छुड़ी-काँटासँ भोजन सामग्री खएताह। दिवा-रात्रि खुले आम सहवास करताह! घरवाली अर्थात बहुक संग भ्रमण करताह, एकर अलावा भूभक्षा-भक्षक विचार नहि कय जएह मोन अओतन्हि सएह खएताह, माउगि जकाँ केश बढ़य हिप्पी बनल रहताह। रंग-बिरंगी वस्त्रसँ देहकेँ रूपियाक सम्मन बनैत रहताह। ई भलेही गामक वा परिवारक लोककेँ अनसोहाँत लगौन्ह। ओझहा एहि तरहक प्रथाकेँ तोड़बाक समग्र चेष्टा करैत छथि जे मैथिल संस्कृतिक विरोधी बूझू वा व्यबहार विरोधी। ऊपरसँ ओझहाकेँ मनोनुकूल वर-विदाइ, दान-जैतुक सेहो चाहिअन्हि।

ओझहाक लक्षण : पैरक वेमाय जहिना विदरल रहैछ ताहि समान ओझहाक मुँह विदरले रहैत छन्हि। सेदलाहा ढोल जकाँ टन-टन बजैत रहैत छथि। हिनक आचार-व्यवहार प्रति सम्पूर्ण गाममे लोक टिका-टिप्पणी करए लगैत छन्हि। एतबे नहि, अगिमूत्तू वरह रूपिया, लुच्चा ओ अबाराक संज्ञा दैत छन्हि। सम्भ्रान्त लोक व्यवस्था विरोधी कहैत छन्हि बूढ़-पुरान तँ कहि उठैत छथि-

"हौ जी! ई तँ नबावक बेटा जेना होअए।"

बूढ़-पुरान लोकक द्वारा अपन बितलाहा समयक गप्पक उद्घोष-हमरो लोक निक विवाह भेल छल। बिनु बजए ने सासुर नहि जाइत छलहुँ। बढ़ियाँ दिन तकाकए जाइत रही। सासुरसँ बढ़ियाँ दिनमे विदाइ होइत छल, मुदा की युग भऽ गेल से नहि जानि? आबक जमाय तँ होटले बुझैत अछि सासुरकेँ। जखन मोन होइत छैक सासुर पहुँचि जाइछ। आजुक ओझहा तँ महा धर्कट होइत अछि। लाज-धाक तँ चौपट भऽ

गेल, सभटा उठा कए पीबि गेल अछि। बुझना जाइछ जेना अंग्रेजक सन्तान होअए। धोती, कुर्त्ता, पाग, दोपट्टाक बदला पेन्ट पहिरने चल अबैत अछि। मर्यादाक विरूद्ध थिक। ई ओझहाक प्रति बूढ़-बुढ़ानुषक धारणा गाम-घरमे देखल जाइछ।

ओझहाक पक्षमे आधुनिक विचार- हँ! पहिलुका ओझहा दिन तकाय सासुर अबैत छलाह, स्त्रीक संग नुका-छिपा कऽ संभोगवार्ता करथि, मुँह झाँपि घरसँ बहार होथि जकर फल भेल जे एक-आध ठाम ओझहा बिनु लहराक ईनारमे सेहो खसल रहथि तेँ एहि प्रथाकेँ नीक कोना कहल जाएत?

वर्त्तमान युगक प्रगति विज्ञान प्रचार-प्रसार ज्ञानपर निर्भर अछि। जाहि चन्द्रमाक पूजा देवताक रूपमे हमर मैथिल पूर्वजसँ आजुक लोक तक करैत आयल अछि, ओहि चन्द्रमापर वैज्ञानिक पहुँच गेल छथि।

दिक्शूल ओ भदवाक वारण आधुनिक ओझहो द्वारा नहि भेल तँ कोन जुलुम भेल, किएक तँ रेलगाड़ी, हवाइ जहाज, जल जहाज वा कोनो स्वचालित गतिमान सवारी, जन्म-मरण प्रभृति किएक ने वन्द उपर्युक्त नियमक कारणेँ रूकि जाइछ। वर्त्तमान समयमे पोंगा-पंथी, रूढ़िवादिता, ढकोलला तथा अन्धपरम्पराक अनुशरणसँ जीवन-धारण कठीन भऽ जाएत। एखुनका समयमे भोजन, वसन आ रहल-सहन सभ किछु युगानुकूल होमएक चाही। एकरे युग-धर्म कहल जाइछ। युगानुकूले हरिश्चन्द्र, युधिष्ठीर लोकनि प्रख्यात् भेलाह। राम-कृष्णकेँ युग पुरुषसँ देवत्वक रूप मानल जाय लागल। महात्मा गाँधी, ईशा प्रभृति युग पुरुष थिकाह जनिका अगिला पीढ़िक लोक मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा अवतारी श्री कृष्णक समान निश्चय बूझत। एतदर्थ ओझहाकेँ युग-पुरुषक उपाधि देल जा सकैछ किएक तँ जकड़ल समाजक परम्पराकेँ तोड़बाक प्रयास हिनक क्रान्तिक शुरूआत थिक।

निष्कर्षक निरूपण- रटल-रटाओल धारणाकेँ पुनः पुनः रटलासँ बुद्धि बकनाय जाएब स्वभाविक अछि। समाजक लोक तँ देखा-देखी जीबाक अभ्यासी बनि गेल अछि। आडम्वर ओ पाखण्डक प्रधानता समाजकेँ ऊपर नहि उठए दऽ सकैत अछि। आब खाली टंट-घंट फूठ-फूसिक बलपर टिकल समाज लड़खड़ा गेल अछि। जाति-पाति, मूल-गोत्रक गड़बड़ी एक प्रकारक विडम्बना थिक। निहित स्वार्थक कारणेँ सामाजिक पुर्निर्माण सम्भव नहि। हमरा तँ बुझना जाइछ जे ओझहाक विचार सम्पूर्ण क्रान्तिक चुनौती थिकन्हि। पाछाँ देखनाइ अवनतिक प्रतीक थिक। जे आगाँ देखैत अछि, निश्चय आगाँ बढ़ैत अछि। आइ समग्र संसारक लोक एक सूत्रमे बान्हएल अछि। प्रगतिशील लोक निश्चय प्रगतिशील देशक होइत अछि। किएक ने हमरो लोकनिकेँ प्रगतिशील श्रेणीमे आगू रहक चाही? मुदा से सम्भव नहि, तकर कारण थिक हमर टंगघिच्चा समाज। ओझहाक दृष्टिकोणक आलोचना वा खिद्धांश सभतरि होइत अछि जकर कारण वैचारिक भिन्नता, ओझहाक स्पष्टवादिता, आधुनिकता, समायानुकूल वस्त्र भेष-भूषा, चालि-ढालि हुनका अवारा, लुच्चा, हीरो-हिप्पी, अंग्रेजक सन्तान आ पथभ्रष्ट एवम् चरित्र-भ्रष्ट कहि हुनका संग सामांजष्य नहि होमए दैत अछि। इएह कारण थिक जे ओझहाक लेखेँ गाम बताह प्रतीत होइत अछि। ❑

मिथिलाक साहित्य आ संस्कृति

मनुष्यक चिन्तनशील प्रवृतिक परिणाम साहित्यक रूपमे विकसित होइत अछि। साहित्य लोकक जीवनसँ जुटल अछि। ओकर निर्माण मनुष्य अपन जीवनक लेल करैत अछि। एहि लेल साहित्य सामाजिक विषय थिक। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक। ओ असगर नहि रहि सकैत अछि। ओ अपन जीवनक एकाकीपन तथा उदासीनताकेँ नष्ट करबाक लेल साहित्यक निर्माण करैत अछि।

साहित्यक शब्दक व्युत्पत्तिक विषयमे कहल गेल अछि 'साहित्यस्यभाव साहित्यम्' अभिप्राय जे हितकर विचारकेँ साहित्य कहल गेल अछि। एकर क्षेत्र बड़ व्यापक अछि। काव्य, इतिहास, दर्शन विज्ञान आदि कोनो प्रकारक शब्द सामर्थ्यसँ प्रतिपादित ग्रंथ साहित्य कहा सकैत अछि। श्रेष्ट साहित्यकेँ कठिनसँ कठिन, दुरुहसँ दुरुह, कोमनसँ कोमल नाना प्रकारक भावकेँ प्रकाशित करबाक शब्द सामर्थ्य छैक।

विभिन्न विद्वान साहित्यक विभिन्न स्वरूप स्थापित कयलनि अछि। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ज्ञान राशिक संचित कोषक नाम साहित्य कहलन्हि अछि। जखन मुंशी प्रेमचन्द साहित्यकेँ जीवनक आलोचना मानैत छथि। मुदा श्री जय शंकर प्रसाद कहलन्हि अछि जे साहित्य चित्तकेँ रस मग्न करएबला व्यक्तिक कल्पना आंतरिक तथा नाट्य अनूभूति एवम् विचारक लिपिवद्ध रूप अछि। हेनरी हडसनक मान्यता

छन्हि जे साहित्य मूलत: भाषाक अध्ययनसँ जीवनक अभिव्यक्ति अछि। साहित्य विश्व कल्याणक भावनापर आधारित होइत अछि।

प्रत्येक युगक श्रेष्ठ साहित्य अपन युगक प्रगतिशील विचार द्वारा कोनो-ने-कोनो रूपेँ प्रभावित होइछ। साहित्यकार ओहि युगक प्रतिनिधित्व करैछ जाहिमे ओ जन्म लैत अछि। एहि दृष्टिसँ मिथिलाक साहित्यकार लोकनि प्रशंसनीय छथि। साहित्य हमर कौतुल्यक जिज्ञासा वृत्तिकेँ शान्त करैछ। ज्ञानक पिपाषाकेँ तृप्त आ मस्तिष्कक क्षुधाकेँ पूर्त्ति करैछ। साहित्य द्वारा हम अपन राष्ट्रीय इतिहास, देशक गौरव-गरिमा, संस्कृति-सभ्यता, पूर्वजक अनुभूति विचार एवम् अनुसन्धान, प्राचीन रीति-रेवाज, रहन-सहन तथा परम्परासँ परिचय प्राप्त करैत छी।

अनेक जाति आ धर्म उत्पन्न भेल मुदा स्थायी साहित्यक अभावमे ओ काल कवलित भए गेल। मिथिलाक महनीय माधुर्यक अवलोकन कएलासँ विदित होइछ जे अनेकानेक आफद एलोपरान्तो एकर विकास निर्वाध रूपेँ होइत रहल।

साहित्यक माध्यमसँ हमरा लोकनि जीवनक कतेको नीति विषयक बातकेँ जनैत छी, जाहिसँ हमर जीवन सुखमय होइत अछि। जेना- सत बाजबाक चाही, धर्मक अनुसार काड़ाकरी, अधर्म कएलासँ अधलाहे होइछ। दोसरक धन एवम् दोसराक स्त्रीक हरण करब जघन्य अपराध थिक। एहि हेतु हमरा लोकनिक पूर्वज नाना प्रकारक सिद्धान्तकेँ कल्याणार्थ व्यक्त कएने छथि। साहित्यमे समाजकेँ संगठित करबाक प्रवल क्षमता होइछ। जेना बंगालक तीव्र गतिसँ विकास भेल अछि तकर पृष्ठभूमिमे ओहिठामक वंगला साहित्य अछि। अंग्रेजी साहित्य पढ़लासँ अंग्रेजी सभ्यताक विकास भेल अछि।

साहित्यमे जे शक्ति अछि से संसारक कोनो वस्तुमे नहि। जाहिठामक साहित्य जतेक उन्नतिशील होएत ताहिठामक सभ्यतासँ

संस्कृति ततेक उन्नतिशील होएत। साहित्यक माध्यमसँ निर्वलकेँ सबल आ पशु तुल्य समाजकेँ सभ्यताक उच्चतम् शिखर चढ़ाओल जा सकैत अछि। मिथिलाक लोक जे भाषा बजलाह सएह विद्वान लोकनिक कृपासँ क्रमात साहित्यक रूप धारण कएलक। ओकरा शुद्ध करबाक हेतु ओहिमे शब्द कोष, व्याकरण, छन्द आदिक आधार बनल। मैथिली एक जीवित भाषा थिक आ एकर साहित्यमे परिवर्त्तन, परिवर्द्धन आवश्यक।

कतिपय हिन्दीक प्रेमीकेँ मैथिली साहित्यक गुण गरिमा स्वीकार रहितहुँ एकरा भाषा मानवामे संकोच होइत छन्हि, तेँ मैथिली साहित्य ठोकरएबाक नहि आदर ओ मनन करबाक वस्तु थिक। जाहि साहित्यक प्रभावेँ केवल विहारे नहि अपितु समस्त उत्तर-भारतक संस्कृति परिष्कृत भेल अछि तकरा हेय बूझब मात्र अज्ञानता थिक। एकर हित चिन्तनक सीमा समस्त मानव जातिक थिक। एहि माध्यमसँ हमरा लोकनि अपन सभ्यता संस्कृतिसँ परिचित होइत छी। संगहि जाहिकालक जनताक विचार जाहि पकारक रहैत अछि तकर चित्र एहिमे भेटैत अछि। मिथिला आ एकर मूलस्वरूपकेँ एहिठामक साहित्य पूर्ण रूपेण प्रभावित कएने अछि। मिथिलाक साहित्यक सम्बन्ध एकर संस्कृतिसँ छैक। ई सम्बन्ध अविछिन्न आ अकाट्य अछि। तेँ एकक अभावमे दोसरक कल्पना करब असंभव अछि।

संस्कृतिक अर्थ थिक संस्कार। संस्कारक अर्थ थिक चिन्ह विशेष। पाथरहु सन कठोरपर रगड़लासँ कोनो वस्तुकेँ अनेक समय धरि रखने ताहि पाथरपर चिन्ह भए जाइत अछि ताही रूपेँ जे विषय अधिकतासँ कतहु उपस्थित होइत अछि तकर संस्कार भए जाइत छैक। वएह वस्तु संस्कृति थिक।

द्रष्टव्य अछि- मिथिला देशमे प्राचीन कालमे अनेक यज्ञ भेल छल। अतएव यज्ञीय देश कहि कऽ शास्त्रमे मिथिलाक ख्याति अछि। जैमिनीसँ लऽ कऽ पार्थ सारथी धरि, मण्डन मिश्रसँ कुमारिलभट्ट प्रभृति मीमांसा

शास्त्रक उन्नायक मिथिलेमे भेल छलाह।

मिथिलाक अनेक विशाल पोखरि, अनेकानेक प्राचीन मन्दिर, अनेक धार्मिक स्थान यज्ञ दिसि लोकक प्रवृति एहि संस्कारकेँ दृढ़ करैत अछि तेँ हेतु यज्ञादिक चिन्ह आ यज्ञादिक क्रिया मिथिलाक संस्कृति थिक।

मिथिलामे अतिथि देवो भव अर्थात् अतिथिकेँ देवतुल्य मानव, संगहि मांगलिक हो वा अमांगलिक कार्य ताहिमे उदारतापूर्वक खर्च करब संस्कृतिक रक्षा करब थिक। मिथिलाक स्वतंत्र जनपदत्व, स्वतंत्र भाषा, स्वतंत्र प्राचीन लिपि, स्वतंत्र धर्म-शास्त्र, पंजी प्रवन्ध वेश-भूषा, एहिठामक लोकक आत्म गौरव, स्त्री जातिक लज्जा, धर्ममे दृढ़ता, कुलीनता अति विचारणीय होएब, देशान्तरक राजाक संग सम्बन्ध अनेक आधार विषय अछि जकरा द्वारा मिथिलाक संस्कृतिक अनुमान कएल जा सकैत अछि।

मुसलमानी शासनसँ अंग्रेजी शासन धरि मिथिलाक संस्कृति अक्षुण रहल।

आब भारत एक स्वतंत्र देश अछि। मिथिला एकरेमे समाहित अछि। अपन स्वतंत्रताकेँ तखने सुरक्षित राखल जा सकैत अछि, जखन हमरा लोकनि अपन संस्कृतिक प्रति प्रेम राखी। समग्र देशक संस्कृतिक विभिन्न विचारक आदर करी। यथार्थमे सं्कृतिक तात्पर्य व्यक्तिक चारूकातक विकासकेँ कहल जाइछ। जौं आर्य स्कृतिक पहिल स्थान छैक तँ मिथिलोक स्थान अपेक्षाकृत तदनुकूले अछि।

एहिठामक संस्कृतिक अन्दाज पाँच हजार वर्षसँ निरन्तर एक रूपक रहल अछि। एहिमे शान्तिक स्थापनाक स्वरूप देखबामे अबैत अछि। एतबे नहि, सामंजस्यक अपूर्व सामर्थ्य एहिठामक संस्कृतिमे अछि। एहि जीवनक अपेक्षा पारलौकिक जीवनक अधिक चिन्ता कएल

जाइछ। मानवीय भावनाकेँ प्रमुखता देनिहार मैथिल संस्कृति धर्म, आत्मा, कला एवम् कल्पनाक अपूर्व समन्वय थिक। धर्मक प्रति अन्ध विश्वास सामाजिक सौन्दर्य बोध मानल जाइत अछि।

एहिठामक सांस्कृतिक मंत्रकेँ आस्तिकता, सदाचार एवम् त्यागक भावना कहल जाइछ। आत्मवत सर्वभुतेषु तथा आचारो परमो धर्मः ऋषि लोकनि द्वारा प्रतिष्ठित कएल गेल अछि। सर्वभूत हितैषी उक्तिक एहिठामक संस्कृतिक एक अंश मानल गेल अछि। मिथिलाक संस्कृति सुसभ्य बनबाक सलाह दैत अछि। मिथिलाक संस्कृति दोसरक लेल अपन सुख आ शरीरकेँ समर्पणक सलाह दैत अछि। एतबे नहि, मिथिलाक संस्कृति ठकबाक अपेक्षा ठकएबामे आनन्द छैक तकर उपदेश दैत अछि। एहिठाम साम्प्रदायिकता कहियो विकसित नहि भेल। इएह सभ कारण अछि जे मिथिलाक संस्कृति सम्पूर्ण पृथ्वीपर अपन प्रेमक प्रकाश दैत रहल अछि।

एहिठामक संस्कृतिक ह्रास नहि भेल तकर कारण नारी समाजक अहंभूमिका अछि। ओ लोकनि धर्म एवम् संस्कृतिकेँ कायम रखबाक पूर्ण चेष्टा कएलनि। जकर कारण छल अविद्याकेँ नहि पाबि सकलीह। यद्यपि विलासिताक क्षेत्रमे स्त्री-पुरुषक बीच प्रतिद्वन्ता अछि। सिनेमाक अध्लाह प्रभाव लोकपर पड़ि रहल छैक। नव पीढ़िक लोककेँ परहेज कराएब असौकर्ज बुझना जाइछ। ओना तँ पश्चिमी देश सभसँ बहुत किछु सीखल अछि। नवीन युगक प्रगतिमे एकरा द्वारा आगू बढ़ल अछि। मुदा गप्प अछि स्वच्छ मिथिलाक संस्कृतिकेँ विकृत नहि कऽ पाबए। ❑

समकालीन मैथिली कवितामे राष्ट्रवादक स्वर

समकालीन मैथिलीक कविता स्वभावत: राजनीतिक, रामाजिक ओ वैचारिक दृष्टिसँ पृथकत्व, विद्रोह आ विघटनक कविता थिक। वर्त्तमान जीवनक मूल्यकेँ स्थिरता प्रदान करबाक समग्र प्रयास जारी रखनिहार एक मात्र समकालीन कविएटा छथि।

राष्ट्रीय भावनाक उवा-पोह प्राय: हरेक समकालीन कवितामे भेटैत अछि। मुदा ओहि राष्ट्रीयताक स्वरकेँ कण्ठक बाहर होइत-होइत कण्ठगते रहि जाय पड़ैछ। वास्तविक समकालीन कविता जीवनक अति समीप आबि गेल अछि। समकालीन कवि अपन व्यक्तिगत अनुभवक प्रतिपूर्ण निष्ठावान छथि तेँ ने साहित्यक प्रत्येक विधामे जुझैत देखल जाइत छथि। ओहि कविक झुकाव अन्तरगामी नहि भऽ कए वर्हिगामी भऽ जाइत छन्हि। इएह कारण छैक जे ओहि कविक कविता समकालीन संकटसँ सम्बद्ध कविता भऽ जाइछ।

आजुक लोकक हालत ओ कष्टक अभिव्यक्ति मध्य वर्गक एकटा पारिवारिक, साधारण लोकक चरित्र आ मानसिकताकेँ ध्यानमे राखि कयल गेल अछि। स्वतंत्रताक बाद देश भक्ति ओकरा कान्हपर माथ राखि सूति रहल छैक। सभ तरहेँ नैतिकता राजनीति ओ व्यवस्थाक विरूद्ध ठाढ़ भऽ गेल अछि।

मैथिलीक समकालीन कविताक शुरूआत कवीश्वर चन्दा झासँ प्राय: प्रारम्भ भऽ गेल छल। किएक तँ 1930 ई.क बाद देश-दशा, समाज

आ सामाजिक व्यवस्था, शासन आ शासकक हरेक क्रिया-कलाप जन विरोधी आ उत्पीड़नक प्रतीक बनि गेल छल। यथा कि कवीश्वर चन्दा झा ओ अपन चन्द्र पद्यावलीमे लिखने छथि-

"न्याय भवन कचहरी नाम
सभ अन्याय भेटैछ एहिठाम।"

उपर्युक्त पाँतीसँ वास्तविकताक नग्न सत्य सामने अबैछ। जे हुनक बादक सभकालीन कविक हेतु एक प्रकारक मार्ग निर्देश कएलक।

असहयोग आन्दोलनक बाद जे राष्ट्रीय नव चेतना भारतीय मानसकेँ आलोड़ित करए लागल, भुवनजीक शब्द शिल्प तकरे साक्षी अछि। भूवनजी काव्य धाराकेँ नवीन दिशामे मोड़ि देल। पुरान जकड़ल आ अधमिरूत लोकमे अन समकालीन काव्य द्वारा स्फूर्ति प्रदान कएल। हुनक रचनाक पाँती देखू-

"गौरवक गढ़ हम ढाहि देब
नहि क्षमा करब प्रतिशोध लेब।
चुटकीमे लय पीसब विभेदकेँ
बाँचत केवल सदय हृदय।
हम करब प्रय, हम करब प्रलय।"

भूवनजीक प्रश्चात् यात्रीजी मैथिली काव्यधाराकेँ आओर अधिक नवीनोन्मुख कएल। सामाजिक यथार्थ चित्रण करब ई विशेष श्रेयस्कर माननलनि। अपन समकालीन काव्यमे ओ मार्क्सक सिद्धान्तकेँ तूल देने छथि तँ दोसर ओ परम्परावादी विचारक एक झाँखी राष्ट्रीयताक सन्दर्भमे पेश करैत छथि। हिनक दूनू पक्ष हिनक रचनासँ स्पष्ट होइछ-

"जे श्रम करत भरि पेट खैत
आब ककरहु नहि बड़का धोधि हैत।

सभ पढ़त-लिखत करत राज
नहि बँचल रहत भेटतैक काज
पढ़ता-लिखता करताह पास
युगल कामति, छीतन खवास।"

साम्यवादक कतेक सटीक आ सुन्दर उदाहरण भेटैछ। ई हिनक समकालीन काव्य गुणक विषेषता थिक। दोसर स्थलपर यात्रीक राष्ट्रवादी विचारक रचना देखू-

"केरल काश्मीर धरि पसरलि
नागा भूमि सँ आगाँ ससरलि।
दिश-दिश सागर चुम्वित चरणा
सिक्त शीश हिमगिरि निर्झरना
कौस्तुभ मणि सभ विन्ध्य विराजित
शत-शत छुबि, शत शोभा सर्जित
गति गम्भीर ओ मति अवदाता
यज जय जय भारत माता।"

उपर्युक्त पाँती यात्रीजी राष्ट्रीय एकता एवम् अखण्डताक हेतु भौगोलिक अभिनन्दन कएलन्हि अछि।

ओना तँ वर्त्तमानक कवि लोकनि मुख्यत: दू भागमे बँटल छथि। पहिल आस्थावादी तथा दोसर अनास्थावादी, जे रचनाक क्षेत्रमे दू ढंगसँ प्रस्तु कय लजाइछ। परम्परागत ढंग तथा नव ढंग (विधा) सँ। जे लोकनि नव ढंगकेँ मानैत छथि ओहो कवि सभ नव मूल्यांकन आ मान्यताकेँ स्वीकार करैत छथि।

वर्त्तमान काव्य धारापर विचार करब तँ देखबामे आओत जे मैथिली साहित्यक विविध विषय विभूषित अछि। कवि लोकनिक द्वारा

विभिन्न विधामे पाठक समक्षक उपस्थित अछि।

देश जखन परतंत्र छल तखन कवि लोकनि किछु डेराएल रहितहुँ अपन भावनाकेँ नहि दाबि सकलाह। ओहि समकालीन कविगणमे भूवनजी, यात्री, ईशनाथ झा, मधुप, आरसी प्रसाद सिंह, पं. सीताराम झा, सुमनजी, किरणजी, राधवाचार्य, दीपक, प्रदीप प्रभृति अपन समकालीन काव्य द्वारा व्यक्त कएल अछि-

"वर्षो सहस्त्र भए गेल ने छूटल दासताई
दुर्दैव बुद्धि हरि लेलक दासते टा
आगाँ सचेत भए शक्तिक अर्चनासँ
कै मुक्त देश निज जीवन धन्य कैलहुँ।"

लक्ष्मीपति सिंह"

ईशनाथ बाबू अति ज्योशीला स्वरमे व्यक्त करैत छथि-

"हिंसक प्रति हिंसा धर्म हमर
थिक उचित करब शठता शठपर।
मुखरित करू सहसा उतरि समर
हर हर शंकर बम्-बम् शंकर।"

श्री सुमनजी सेहो अपना भावनाकेँ नहि रोकि सकलाह आ हुनक राष्ट्रवादी विचार प्रगट भैये गेल, यथा-

"मुक्त विदेशी शासन सँ सर्जन सुन्दर संसार करब
जीवन वनमे दाबानल रूपी, दानव दल संहार करब।"

काव्यालोकन कएलासँ राष्ट्रीय भावनाक संचार अनेरो भऽ जाइछ-

"झन झन-झन झन बेरी केर स्वर
खन खन खन हथकड़ी निनाद

सन सन सन हवा सनकि कैं

कहए देश कैं हमर समाद।”

एहि तरहैं देखैत छी जे समकालीन कवितामे जतेक राष्ट्रीयताक भावना मुखर राघवाचार्यक कवितामे मुखरित भेल अछि से अन्यत्र दुर्लभ-

“बीझ लागि गेल छौ, कृपाण कैं पिजा

नचैत जोर जोर सँ तों दुन्दमी बजा।”

मैथिलीक समकालीन कविमे आरसी प्रसाद सेहो पाछाँ नहि छथि ओहो अपना रचनामे लिखैत छथि-

“बाजि गेल रण डंक, डंक ललकारि रहल अछि

गरजि-गरजि कैं जनजनकैं पर चारि रहल अछि।

तरूण स्वदेश आबहु रहबे तों बैसल

आँखि फोल, दुर्मद दानव छौ कोनटा लग बैसल।”

श्री अमरजीकैं खेद होइत छन्हि जे राष्ट्रीय हित चिन्तक आइ उपेक्षित भऽ रहल छथि। अपन समकालीन काव्यमे ओहो लिखैत छथि-

“भारतीय सभ्यता ओ संस्कृति पाताल गेल अछि

अनुशासन हीनता आकाश ठेकल अछि।

मातृभूमि हेतु छैक जकरा ममत्व कने

सैह वर्ग देखू निर्भाल जकाँ आइ फेकल।”

समकालीन कविमे स्व. दीनानाथ पाठक बन्धूक स्थान सेहो अक्षुण रहत। अल्पायु बन्धुजी बड़ दिन मैथिली साहित्यक सेवा कऽ गेल छथि। ओ पाकिसतानक द्वारा भारतपर आक्रमणसँ पूर्वहि लिखने छथि-

“हो पैसि घर जखन युद्ध केर दानव

अछि उचित की घरमे बैसि विकल मन कानब?
डूबि गेल गाम-गाम वीरताक रंगमे
माँतल नर-नारी सभ राष्ट्र प्रेम रंगमे।"

स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात् कोनो देश निन्न सूति रहए तँ ओकर स्वतंत्रता केओ नहि देखि सकत।

"राजनीति तरू शोषित जलसँ सिंचित होइछ सदिखन
बलिदानक उर्वर प्राप्त कय झड़य फुलाय विलक्षण।"

श्री सुमनजी युग जीवनक समस्यासँ प्रभावित भए देशक रक्षार्थ प्रयत्नमे जुटि जाइ तकर सलाह अपना रचनामे दैत छथि-

"सम्पति थिक उचित शत्रु संहार
ताहि लेल चाही सैनिक संभार।
रोग जखन हो उचित तकर प्रतिकार
पुनि विकास सृजन केर विचार।"

राधाकृष्ण बहेड़ अपन नाम समकालीन कविक सूचीमे जोड़ि दैत छथि आ राष्ट्रीय चेतनाकेँ जगबैत कहैत छथि-

"सीमापर उठल छै धुक्का
क्षितिजो शोणित लाल भुभुक्का।
सभ केओ झारए चाहे झिल्ली
शोचय नवका दिल्ली।"

श्री दीपकजीक रचनामे केहन राष्ट्रीय भावना अछि देखू-

"राष्ट्रीय भाव केर लहरि उठय अन्तर
जीतक गंगा किछु एहन बहए
फरकय अठासी कोटि भुजा तरूआरि जकाँ

पर नारी रंठामे डटल रहए।"

श्री विदितजीक रचनाक पाँती कतेक विलक्षण अछि जे समकालीन कवितामे एक मानदण्ड थिक, देखू-

"मातृ भूमिक झाँकि सँ श्रेष्ठ आर दुलार की?

जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की?"

ओना तँ आइ समकालीन कविताक मूल स्वर व्यवस्था विरोधक स्वर भऽ गेल छैक। जे लोकनि विद्यापति गोविन्द दासक पदावलीसँ आनन्दित भेनिहार छथि, हुनका समकालीन कविता कहियो रूचिगर नहि लगतन्हि। किछु आलोचकक कहनाइ छन्हि जे पुरना विचारधारासँ जकड़ल लोकक हेतु समकालीन कविता जंगली आगिक समान दहकैत आ कारखनाक भट्ठी सदृश लहकैत प्रतीत होयतन्हि। मुदा ई समकालीन कविता अन्वेषण नहि एकटा प्रयत्न थिक। समकालीन कविता मानवीय आकंक्षाकेँ प्रदर्शित करैछ। जकर सोझ सम्बन्ध लोकक गरिमा ओ स्वतंत्रासँ छैक। इतिहास साक्षी अछि जे आइ लोकक संकटक कारण बाहरी नहि छैक, जतेक आन्तरिक मूल कारण थिकै राजनीति ओ सामाजिक व्यवस्था।

स्व. मधुपजीक रचना 'घसल अट्ठनी, कोजगरा मखान तथा छुतहर कविताकेँ पढ़लासँ स्पष्ट भऽ जाइछ-

"हा! देह तोड़ि कऽ कयल काज

सुपथो न बोनि अछि भेटि रहल।

मरि जायब एतै

ककरा कहबै। हित कोन हमर।"

उपर्युक्त पाँतीसँ सामन्ती प्रथाक संगहि शोषण आ शोषितक सजीव चित्रण भेल अछि। ओना तँ सभ कवि अपना समक्षक

समकालीने कवि रहैत अछि। समकालीन नेताक कसौटी हमर जनैत जीवनानुभव अछि आ भाषा छैक।

हमरा तँ विद्यापतिक रचनामे कयठाम समकालीन जीवनक ओ अनिवार्य ज्वलन्त अनुभवक धुँआ भेटल अछि। त्रासदी तीव्रतासँ जुटल अछि। जिज्ञासु लोक विद्यापतिक ओहनो पदक खोज करथु, मोन बनाबथु बुझबाक ओ अद्यतन औजारक काज करतन्हि-

"धनिकक आदर सभ तँह होई
निर्धन बापुरे पूछ नय कोय।"

ई पाँती एक प्रकारक चुनौती ओहि आलोचक आ समकालीन कविक हेतु अछि। केवल समकालीनताक राग अलापलासँ व्यवस्थाक विरोध, पूँजीवादक, जनतंत्र आदि ढाँचामे परिवर्त्तन कहियो सम्भव नहि भऽ सकैछ।

अन्तमे प्रदीपजीक कविताक पाँती देखू-

"हम दैत छी ने बाधा
सभ जन पैघ बनू भऽ जाउ अहाँ राष्ट्रक नेता
मुदा कृपा कऽ हमर कण्ठकेँ नहि काटू
अस्तित्व नष्ट कऽ अहाँ हमर चुल्हाकेँ नहि बाँटू।" ❑

तथास्तु...।

मैथिली लोक गीतमे पावस

सृष्टि जहिना पूर्वमे जलमय छल तहिना संसारक साहित्य पूर्वमे पद्यम छल। ई पद्य सभ जे गेय धर्मितासँ मुक्त छल, तेँ ओकरा गीतक नामसँ अभिहित कएल गेल। 'गीयते इति गीत।' आ तेँ पूर्वक पद्य साहित्यमे गीतक शिल्प विधानपर विशेष ध्यान देल जाइत छल। छन्द, लय ओ तालमे वद्ध कए पद रचना होइत छल। जकरा गीतक संज्ञा सहजहि भेटि जाइत छल।

साहित्य ओ संगीतकेँ यदि युगल दम्पत्ति मानी तँ संगीत सुकुमारी प्रेयसी ओ साहित्य ओकर अनुरक्त भर्त्ता मानल जायत।

मैथिली लोक साहित्यकेँ सुदीर्घकालीन परम्परा प्राप्त अछि। एना तँ मैथिलक जीवने गीतमय अछि। जीवनक विभिन्न संस्कार, परिस्थिति, घटना (संगोग-वियोग) गीतसँ आवर्जित अछि। मैथिली लोक गीतक क्षेत्र व्यापक अछि। एकरा माध्यमसँ जीवनक कोमल पक्षक सरस अभिव्यक्ति होइत आएल अछि।

मैथिलक आदि गीतकार छथि कवि कोकिल विद्यापति। विद्यापतिक गीत मैथिली साहित्यक हेतु अनुपम वर्दान सिद्ध भेल अछि। अपन पदावली द्वारा मैथिली लोक गीत काव्यकेँ नव दिशा देलन्हि। मैथिली लोक गीतक परम्परा वस्तुत: विद्यापतिक काव्य परम्परा थिक। जकर अनुकरण पर्ववर्ती कवि लोकनि कएल अछि। एहू कविमे सँ जे

विद्यापतिक सीमोलंधन कएल तँ निकट गीत दिस जनमानस अकानवो नहि कएलकन्हि। किएक तँ वद्यािपति जनमानसक हर आकांक्षा ओ उद्देश्यक आलोकमे अपन लोक गीतक रचना कएल। रीतिकालीन काव्यक जन्मे भेल अछि विद्यापतिसँ जतए काव्यक पूर्णता ओ आरूता भेटैछ। लोक-गीतमे सभसँ प्रमुख ओ उत्कृष्ट मनोहारी तथा मनोगत गीत थिक पावस गीत। पावसक गीत विरहिणी नारीक देह दशा, वेश-मेष क्रिया-कलापक विश्लेषण सराहनीय अछि। हृदयग्राही पावससँ प्रभावित नारीक प्रेम पूर्णता तखन प्राप्त कऽ जाइछ, जखन आकुल-व्याकुल भऽ बेचैन भऽ जाइछ। पाँच सय वर्षक अवधिमे जन-जीवनक क्रम ओ लोक भावनामे परिवर्त्तन भेल हो मुदा विद्यापतिक पावस लोक गीत एखनहुँ नवीने अछि। आब विद्यापतिक पावस गीतक पाँतीकेँ देखल जाए। विद्यापतिक पाँतीसँ पावसक सजीवता-

“के पतिया लए जायत रे मोर प्रियतम पास
हिअ नहि सहए असह दुःख रे मेल साओन माल।
एक सरि भवन पिया बिनु रे मोहि रहलो न जाय
सखी अनकर दुख दारूण रे जग के पतिआय।”

तात्पर्य अछि- साओन माल मेघ मलार देखि नायिका एकाकीपन जीवन नहि जीबए चाहैत पतिक सहवास चाहैत अछि। मुदा केओ पत्र लऽ गेनिहार नहि छन्हि। सम्वाद आखिर पहुँचत कोना? तखन हृदय वीदीर्ण होअए लगैत छन्हि आ ओ व्यथित हृदयक मात्र कण्ठसँ बहार भऽ गीतक रूप लऽ लैत छनहि। घर आंगनसँ विरक्ति भऽ जाइत छन्हि। अन्तर मोनक गप्प के बुझतन्हि? लोक सूनि कऽ विश्वासो नहि कऽ सकैत छन्हि।

दोसर घटना नारी व्यथित हृदयक अतिरोचक अछि जे विद्यापतिक पावस गीतक पाँतीमे व्यक्त भेल अछि जेना-

“मोर प्रियतम सखी गेल दूर देश
यौवन दए गेल साल सनेश।
माल अषाढ़ उनत नव मेघ
पिआ विसलेख रहओ निरकेध।
साओन मास वरिस धन वारि
पंथ न सूझए निसि अन्धिआरि।
चौदिश देखिअ विजुरी रेह
ऐ सखी कामिनि जीवन संदेह।”

नायक परदेस चल गेल छथिन्ह। नव यौवनाकेँ अपन जवानी साल (काँट) सदृश चुभैत छन्हि। आषाढ़, साओन मास धेनुआर मेघ अपन उन्नत अवस्थाक प्रतीक देखबैत अछि, नायिका संग समता रखैछ। साओनमे मेघ वरसि जाइछ, मुदा नायिकाक हेतु नायक नहि वरिसैत अर्थात् द्रवित होइत छथिन्ह। मेघक घटा-टोपसँ दिनो राति जकाँ लगैत अछि। अति अन्धकारक कारणेँ राह-बाट सूझबो कठिन संगहि रहि-रहि विजुरी छिटकि जाइछ जे नायिकाकेँ जीवन राखब कठिन कऽ देने छन्हि।

अषाढ़ साओनक संगहि कवि भादवोक मासमे नायिकाक भावनाकेँ केहन कलात्मक ढंगसँ अपन गीतक पाँतीमे उल्लेख कएलन्हि अछि से द्रष्टव्य अछि-

“सखी हे हमर दु:ख नहि ओर
ई भर वादर माह भादव सून मन्दिर मोर।
झँपि घन गरजन्ति सन्तत भुवन भरि वरसन्तिया
तिमिर दिगभरि घोर यामिनि, अथिर विजुरीक पँतिया।”

एक ओर विरह व्यजना काव्य शक्तिक अति क्रमण करैत अछि तँ

दोसर ओर नाद सौन्दर्य ओ छन्द शक्ति पराकाष्ठापर पहुँचि जाइत अछि। भाव ओ भाषा, रूप ओ विषयक निरूपण पावसमे विरहक धरातलकेँ स्पर्श करैत अछि। ई धरती परक सत्य थिक कल्पित नहि।

आब पावस गीतक पाँतीमे सजीव चित्रण देखू जे विरह वेदनामे टीस बनि सस्क्त होइछ-

“मोर बन बन सोर सुनइत
बढ़ए मनमथ पीर
प्रथम घार आषाढ़ आओल
अबहु गगन गंभीर।
घन सेलओन वारि
पंचसर छूटए कइसे जिअए विरहिनि नारि।
आबए भादो बेगर माघो
काहि एक एहो दुख:।
निउर डर डर डाक डाहूक
छुटए मदन बनूक।।”

नायक साओन मास अएबाक आश्वासन दऽ गेल छलथिन्ह, मुदा नहि एलथिन्ह। पावसक प्रकोप कामदेवक पाँचो वाण एकहि समय नायिकाक ऊपर वर्षाक बून्दक समान पड़ैत छन्हि। विरहमे जीवन संकट पूर्ण भऽ जाइत छन्हि, जौं एक ओर साओन-अषाढ़क माल खेपि जाइत छथि तँ भादव खेपब अति कठीन, किएक तँ बिना कृष्णक हुनक दुख दोसर बुझनिहार नहि। एकाएक शब्द नायिकाकेँ बन्दूक गोली जकाँ प्रतीत होइत छन्हि। एतबे नहि भादव मासक एक आओर चिताकर्षक चित्रण देखू जे गीतक पाँतीसँ लिखित अछि-

“भादव मास वरिस धनधोर

चहु दिशि कुहुकए दादुर मोर।
चहुँकि चहुँकि पिआ कोर समाय
गुण मति सूतलि छथि गाम।"

पावसमे पतिक संग पत्नीक रहब अत्यावश्यक। किएक तँ पावसी जीव आ वस्तु उद्दीपनक काज करैछ। एतबे नहि, पावस कोमल हृदययानारीक मोनकेँ अपन प्रकोपसँ प्रकंपित कऽ दैछ एहन समयमे प्रियतम कोरामे निर्भय भऽ नायिका वैसि जाइछ। गुणवती नारी पतिक शरीरमे नीड़-छीर जकाँ एकाकार भऽ सूति रहैछ।

विद्यापतिक पावस गीतक मार्मिक पाँती सभ देखल जाए-

"प्रथम मास अषाढ़ हे सखी
श्याम गेला मोहि तेजिऔ!
कोन विधि हम मास खेपब
हरत दुख मोर कोन यौ।
साओन हे सखी सर्व सोहाओन
दोसर राति अन्हार यौ
लौका लौके रामा
विजुरी यमके जंगल बाजे मोर यौ।
जेहो लोक गेल मधुपुर
ओ तहि भए गेल भोर यौ।"

श्याम मधुपुर चल गेल छथिन्ह। पावसक एहि अवधिमे विरहाग्नि तीव्र तँ भऽ गेलापर सम्वाद पठबैत छथि, मुदा समदिया ओतए जा कऽ सम्वाद की कहत, ओहो बिसर भोर भऽ गेल अछि।

आब पुन: देखू पावस गीतक पाँती केहन रोचक अछि-

"साओन मास लागल सजनी गे बाग हिलोर
भादव भरि गेल ताल चहुँ दिशि
आयल नहि चितचोर, विदेशिया मनमोहन।
अखाढ़हि मास ईाहे दुख मेल,
असुआ सँ जमुआ कटहर पाकि गेल
कहब दुख ककरा
विदेशिया मनमोहन।"

नायिकाकेँ पावसमे आम, जामुन, कटहर, वरहर आदि रसदार फल पाकल देखि व्यथा बढ़ि जाइत छन्हि, किएक तँ हुनक मनमोहन विदेशिया छथिन्ह।

पुनश्य देखू एहि स्थलपर पावस गीतक चित्रण-

"प्रथम तोहर सूनिय सोहर
सुफल माल अखाढ़ यौ
वारी वभस विदेश बालुम
हमर कोन अपराध यौ।
साओन हे सखी सर्व सोहाओन
फूलल बेलि चमेली यौ।
ताहि फूल देखि भभरा लुबधल
करए मधुर झंकार यौ।"

कहबाक तात्पर्य जे पावसमे बेली फूल, चमेली फूल फुलेलासँ भमरा लोभाए जाइत अछि, मुदा हुनक नायक केहन विरल लोक जे नहि लोभाइ छथि।

महाकवि विद्यापति अपन पावस गीतमे मनो वैज्ञानिक एंगसँ

चित्रण करबामे कमाल देखाओल अछि जेना-

"अखाढ़हि मास घटा घनघोर
मोहि मिया तेजि गेल देशक ओर।
साओन मास बेली फूलए भकरार
देखि देखि नयन सौं बहए जलधार।
भादव के निशि राति अन्हार
धुरि एलहुँ सौंसे संसार मोहन नहि मिलिहौ।"

अर्थात् नायिकाक बेचैनी तखन बढ़ि जाइत अछि जखन अखढ़िया मेघ उभड़ैत-घुमड़ैत अपन आकुला धरतीकेँ पानिक बूनसँ सराबोर कऽ दैछ। बेली फूल भकरार भऽ फूला कए नायिकाकेँ दाह उत्पन्न करैछ। आँखिसँ नोरक टघार बहि जाइत छन्हि। अन्तर्मनक व्यथा चहुओरसँ व्यक्त भऽ जाइत अछि। कविक ई गीतक पाँती मर्मस्पर्शी अछि।

पुनश्च देखू-

"झहरे-झहरे रे नयनमा
पिआ अजहुँ ने आबे
पावस-पावस कहि के
गए विते अन्हरिया राति
एक तँ पावस राति
ई जे पिया पर देश
तीजे काम जोर अति
छन छन बढ़त लेश
सून सेज मोर नयन लागे

आयो न नंद लाला।"

नन्द लालक पावसमे नहि एलापर नायिकाकेँ जीवनसँ विरक्ति भऽ जाइत छन्हि।

"आये सघन मेघ बून्दो ने वरिसय
मधुपुर गए श्याम विधि भए वाम
थर-थर काँपत गात, मन मे रहत ताप
कोना खेपब राति, विजुलीसँ मन घवरात हे।"

कृष्णक मधुपुर गेलासँ पावसक प्रतिकूलता नायिकाकेँ बुझना जाइत छन्हि। पावसकेँ चतुर मास सेहो कहल जाइत छैक तेँ विद्यापति अपन चौमासा गीतमे पावसक समग्र चेष्टाक संग वर्णन कएल अछि-

"दादुला धत थोर वाजए
शोर करू पिया ओर यो
प्रथम मास अखाढ़ अनुदिन
मदन यौगुन जोर यौ
गोर यौवन मेल अति सई
घर न आवई सखी निर्दयी
दय गेल अवधि तुरन्त आओन
एहि साओन कंत यौ।।"

ओना तँ पावसक परिप्रेक्ष्यमे महाकविक द्वारा जतेक रचना भेल अछि, तकर उल्लेख एतए सम्भव नहि। अन्तमे एहि गीतक पाँतीक भाव-गम्भीरता आ विषयक विषद वर्णन देखू-

"मोहू तजि गेला पिआ विषम वयसे
नमन वरसि गेल मेघ आश रेशे

ह्रंग चित वदन मलीन भेल रे

सिर फूजल केशे नागरि वयन वरसि गेल रे

जनु जल अश रेशे।"

विद्यापतिक अतिरिक्त अनेको कवि लोकनि लोक गीतक अन्तरालमे पावसक अभिनन्दन अपन गीतमे कएने छथि, जाहिमे पं. छेदी झा 'द्विजवर' एवम् महाकवि लाल दास ओ हर्ष नाथ झाक नाम अबैत अछि। पं. छेदी झा 'द्वजवर'क पावस-प्रसंग गीतक पाँती देखल जाए-

"हे जलधर! चल जाउ ततए झट

वसथि जतए नन्द लाला

करवन्हि विनय एहन कए नवि कए

आवथि शीघ्र कृपाला।"

हर्षनाथ कविक पावस गीतक पाँती-

"अविरल जलधर गरजत धनरस वरिसत रे

दादुल-संकुल रहत, दामिनि चमकत रे।

तड़ित चमकत, जलर गरजत करत दादुल सोर यो

तिमिर संकुल करत आकुल निशि भादव घोर यौ।"

महा कवि लालदास- हिनक प्रकति पुरुषक संयोग सजीव रूपमे चित्रित भेल अछि। एहि गीतक पाँतीमे जे अति सरस, मधुर ओ हृदयग्राही लगैछ-

"शोभ वर्षा ऋृतु सुन्दरमे मूर्तिमान आकाशे

सन्ध्या राग रूप यन्दन सौं चर्चित- देह पियासे।

मुक्ता माल विशाल सदृश उर पहिरि बलाका पाँती

मेघ रूप पट पहिरि चलल नम कामातुर मद माती।"

वर्त्तमान समयक कवि लोकनि सेहो पावसक प्रसंग काव्यक रचना कएल अछि। जाहिमे श्री आरसी प्रसाद, डॉ. जयमन्त मिश्र, राघवाचार्य, प्रो. मयानन्द मिश्र, कलानन्द भट्ट, विलट पासवान विहंगम प्रभृतिक नाम लेल जा सकैछ।

मैथिली लोक गीतमे पावस गीतक ओहने स्थान अछि जेहने शरीरक मध्य प्राणक। ❑

मान न मान हम अहाँक मेहमान

समग्र भारतीय भाषामे जे कोनो कहाबत (कहबी) प्रयुक्त भेल अछि, ताहि कहबीक गर्भमे अवश्य कोनो ऐतिहासिक घटना, रहस्यात्मक विषय, सामाजिक, वैयक्तिक अथवा भारतीय संस्कृतिक चित्रण पोषित होइत रहैछ। तेँ कहाबतक प्रयोग भेलापर भाषाविदक मोनमे जिज्ञासा उत्पन्न भऽ जाइछ जे अवश्य एकरा पाछाँ ठोस सत्य समाहित होएत।

विश्वक हरेक भाषामे शैलीक जे रूप भेल हो, अभिव्यक्तिक प्रणाली जेहन हो, विषय वस्तुक सर्जन ओ समेटबाक जेहन निरालापन हो, किन्तु ई निर्विवाद अछि जे मुहावरा वा कहाबतक प्रयोग होइतहि अछि।

भाषा-साहित्यमे मुहाबरा वा लोकोक्तिक प्रयोग कऽ लेखक वा वाचक भाषाकेँ चटकीला रंग प्रदान करैत छथि, जाहिसँ भाषामे प्रभावन शक्ति बढ़ि जाइछ। पाठक ओ श्रोता दुनू मंत्र मुग्ध भऽ जाइछ। एतबे नहि, भाषामे सामाजिकता सेहो अपन अलग सौन्दर्य मानल गेल अछि। थोड़ शब्दमे अधिक अभिव्यक्तिक क्षमता जँ श्रेष्ठता मानल जाय तँ कहाबतक उपयोगिता देखल जा सकैछ। जहिना चित्रकार ढेंढ़-मेढ़ डाँरि खींच कऽ राष्ट्रक सम्पूर्ण भावनाक ओर संकेत करैछ, तहिना भाषामे कहबी प्रयुक्त भऽ अपनामे नुकाएल अर्थक विशालताक ओर संकेत

करैत अछि।

प्रत्येक कहाबतक बड़ सटीक अर्थ होइछ। जीवनक उत्थान-पतन, गमैया जीवनक छोट-क्षीण घटना, राष्ट्र व्यापी, ऐतिहासिक उपलब्धि एवम् हितोपदेशक समान दंत कथाक कोखिसँ कहाबतक जन्म होइछ। वैज्ञानिक होथि वा दार्शनिक, राजनेता होथि वा उच्चपदाधिकारी, तकनीशियन होथि वा विधिवेत्ता, वक्ता होथि वा भाषाविद् अपन बातकेँ चहटगर बनेबाक हेतु अपना भाषामे कहाबतक चासनीसँ मुहावरा टाँक देबाक निश्चय चेष्टा करैत छथि। एहि तरहक चेष्टापूर्ण भाषण श्रोताकेँ अनेरो आकर्षित कऽ लैत अछि।

जँ मुहाबरा शब्दक लाक्षणिक प्रयोग होइछ तँ कहाबत खिसा-पिहानी एवम् चिर सत्यक आधारपर बनैत अछि। मुहाबरा वाक्यक पेटमे रहैछ आ कहावत सदिखन स्वतंत्र रहैछ। तेँ कहाबतक प्रयोगसँ बोली अधिक मुक्ति युकत प्रमाणित आ जोरदार एवम् भाषा स्पष्ट आ जानदार होइछ। कोनो बातकेँ स्पष्ट करबाक हेतु कहाबत बड़ उपयोगी सिद्ध होइछ। विलक्षण बजनिहारक लेल तँ कहाबतक प्रयोग बीच-बीचमे करब विशेषता होइछ। एहि निष्कर्षपर अबैत छी जे कहाबत रचनाक एक मुख्य अंग थिक। एहि हेतु अलंकार शास्त्रमे एकरा भाषाक अलंकार कहल गेल अछि। स्त्रीगणक हेतु जहिना गहना सौन्दर्य वर्द्धक होइछ, तहिना कहाबतो रोचकता ओ आकर्षणवर्द्धक होइछ।

एक-एक कहाबत जीवनक सद्य: अनुभूति थिक।

हम निवन्ध लिखि रहल छी। एक निबन्धकारक पूजी केबल शब्द सम्पदा मात्रे नहि होइछ, अपितु अनुभव, निरीक्षण एवम् प्रभावी उपस्थापनाक नितांत प्रयोजन होइछ। एतदर्थ हम आब 'मान न मान हम अहाँक मेहमान' कहाबतक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ रहल छी। ई बहु चर्चित कहाबत भाषा साहित्यक मानल जाइत अछि जे व्यक्ति विशेषक

चरित्रसँ सम्बद्ध अछि।

एहन लोक जे बिना सम्बन्धक सम्बन्धी भऽ पहुनाइ करैत अछि, बिना परिचयक परिचित भऽ बोझ बनि जाइत अछि, बिना किछु पुछने किछु कहए लगैछ, कोनो विचार विमर्शमे आनावश्यक दखल दऽ अपन वर्चस्व स्थापित करए लगैछ। मान अपमानक ख्याल नहि कऽ अपन थेथर चालिक चकमा दऽ काज करए...। एहि सन्दर्भ किछु गोटएक चर्चा कऽ रहल छी जे एहि प्रकारेँ अछि-

काल्हि तक जाहि व्यक्तिकेँ कोनो मोजर नहि, जे समाज वहिष्कृत छल, से जँ आइ कोनो विचार, व्यवहार आ विकाल काजमे टांग अड़बैत अछि तँ ओकरा लेल कहाबत अपने आप चरितार्थ भऽ जाइछ, वएह कहाबत भाषा साहित्यमे अंकित भऽ प्रयुक्त होमए लगैछ। यथा कि देखल गेल- हमर गाम खूब घनगर सात टोलमे बसल अछि। हरेक प्रकारक लोक, जाति बास करैत अछि। एतेक पैघ गाममे बालकक हेतु तँ विद्याय छैक, मुदा बालिकाक शिक्षा-दीक्ष्ज्ञाक कोनो विद्यालय नहि। वर्त्तमान समयमे नारी शिक्षाक प्रयोजन बुझि सभक ध्यान एहि दिश केन्द्रित भेल। ओना तँ कन्या विद्यालयक स्थापना हेतु प्रबुद्ध लोक बहुतो दिनसँ सोचि रहल छलाहे किएक तँ कन्याकेँ अन्यत्र पढ़ाएब-लिखाएब सभ पितासँ सम्भव नहि, तेँ गामेमे एकर समुचित व्यवस्था हो, तकरा लेल बैसार भेल। प्रमुख लोकक एहि बैसारमे जगहक चयन, भवनक निर्माण ओ सम्बन्धनक हेतु अर्थक जुटान कोना कएल जाय ताहिपर विचार-विमर्श होमए लागल। कर्मठ लोकक प्रयोजनपर घेंघाउज शुरू छल जे स्वाभाविके थिक।

एहि बीच धनेश्वर बिना बजाओल एहि बैसारमे आबि अपन तर्क देमए लागल। ओकर दखल देब लोककेँ अमान्य छलैक। प्रमुख व्यक्तिक बात आब तर पड़ि गेल आ एहि ऊपर पाँचोक गप्प ऊपर। फल ई भेल जे लोक विषयान्तर भऽ आँइ-बाँइ बाजए लागल। जतए कन्या विद्यालयक

स्थापनाक विषय छल ओतए रंग-मे-भंगक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल। किछु गोटए कहए लगलाह-

"एतए तोहर मुँह पुरषी नहि चलतह। बैसारमे बजाओल लोक तोरासँ पैघ माथबला सभ छथि।"

बूचन बाबू तमकि कऽ कहलथिन्ह-

"बूड़ि नहितन, तखनसँ फच-फच बाजल जाइत छथि। पूछए केओ नहि कहाबी कानून गो।" अर्थ स्पष्ट होइछ "मान न मान हम अहाँक मेहमान।" एहि सन्दर्भमे पाहुनक चर्चा सेहो करब आवश्यक।

एक दिन साँझमे एक व्यक्ति धड़फड़ाएल हमरा डेरापर पहुँचलाह। देखबामे मठोमाठ सन आ बजबाक कलामे दक्ष रहथि। हमरा अबिते-अबिते नमस्कार कएलन्हि। हमरा प्रत्युत्तर करबामे विलम्व भऽ गेल, किएक तँ हुनका एहिसँ पहिने कहियो देखने नहि छलियन्हि तेँ नमस्कारक प्रतिकारमे अस्तब्ध रही। ओ तराक दऽ कहि देलन्हि-

"प्रोफेसर साहेब, अपने हमरा नहि चिन्हल उचिते हें! हें..!! हम तँ अपनेक साढ़ूक मसिऔत मामाक भगीन-जमाय थिकहुँ। अपनेक चर्चा ओ कएने छलाह जे निर्मली कॉलेजमे प्रोफेसर छथि। ई बात स्मरण छलहे आइ कष्ट देमए एलहुँ अछि।"

हुनक एहि परिचयसँ संतोष नहि भेल तथापि 'अतिथिदेवोभव:' अर्थात् अभ्यागत बुझि हुनक यथोचित सत्कार करब उचित बूझल। बालककेँ कहलियन्हि-

"भानस बनैत हुए तँ हिनको हेतु कहि दहुन गऽ।" श्री

मती असमंजसमे पड़लीह जे अपना सभक हेतु तँ रातिमे रोटी बनैत अछि तखन पाहुनक हेतु रोटी कोना बनाओल जाय। मिथिलामे पाहुनकेँ रोटी खोआयब मर्यादाक विरुद्ध मानल जाइछ। हम श्रीमतीक विवशता बुझि गेलहुँ तेँ स्वयं हुनका पूछि देलियन्हि-

“अपने भात वा रोटी की पसिन करै छी?”

ओ कठ हँसी हँसैत कहलन्हि-

“हमरो रोटिये हितकर होइछ।”

हुनक बात सुनि मोन हल्लुक भेल, चाहबो सएह करैत रही। पाहुन सुम्मस्त भऽ बैसलाह आ अपन वाक् पटुताक परिचय देमए लगलाह। भारतीय केन्द्रीय मंत्रीसँ लऽ कऽ बिहारक मंत्रीगणसँ अपन सम्पर्कक व्याख्यान दैत गेलाह। अवाधगतिसँ बजैत गेलाह, पूर्ण विराम लोपे रहन्हि। सुनैत-सुनैत आकक्ष भऽ गेलहुँ। एहि बीच हमर इष्ट मित्र कतेको एलाह जे हिनके बात सूनि कऽ चल-चल गेलाह। भानस भेलापर हिनक भोजनक ओरियान भेल। भोजन भट पाहुन सभ सामग्रीक ताहि तरहेँ चट कयलन्हि जे श्रीमतीकेँ पुन: भानस करए पड़लन्हि। बच्चा सभ विशेष राति भेलासँ भूखले सूति रहल। अपने सभ जे बाकी बचलहुँ से दू बजे रातिमे भोजन कऽ ओछाउनपर लम्वायमान भेलहुँ।

प्रात:काल पाहुन महोदयकेँ एक चाह दऽ मुक्तिक मुद्रा बनाओल। ओहो बेचारे आग्रह नहि भेलासँ अपन बाट धएलन्हि। हुनक गेलापर श्रीमतीजीक क्रोधक भाजन होमए पड़ल। ओ कहलीह जे ई पाहुन केहन छलाह? जनिकासँ कोनो परिचय नहि छल, तखन अहाँ हिनका रोकि लेलहुँ। हम कहलयन्हि- हिनको राति काटब छलन्हि हमरो अभ्यागत जानि खोआयब कर्त्तव्य छल। ओ विक्षिप्त भऽ कहलन्हि- पेट नहि बखारी रहन्हि। ‘चिन्ही ने जानी मौसी-मौसी कही’ कहबाक तात्पर्य भेल ‘मान न मान हम अहाँक मेहमान’ एहि कहबीक मोने मोन पाठ कऽ सन्तुष्ट भेलहुँ।

एहि परिप्रेक्ष्यमे एक आओरो पाहुनक परिचय दैत छी- परीक्षाक समय वा परीक्षार्थीक उत्तर पुस्तिका जाँचक हेतु जखन विश्व विद्यालयसँ कॉपीक बण्डल अबैत अछि, तखन तँ बल पाहुन कहू वा थेथर लोकक

थेथरपनक अनेकानेक परिचय भेटैछ। एहि तरहें हम आई.ए.क उत्तर पुस्तिकाक मूल्यांकन करैत रही। अनेको व्यक्ति आबथि अनेक तरहक सम्बन्ध जाहीर करथि।

मुदा एक एहन व्यक्ति पहुँचलाह जे सद्य: 'मान न मान हम अहाँक मेहमान' लोकोक्तिक प्रतिमूर्ति छलाह। हमर अनिच्छाकेँ ओ अपन थेथरपनक प्रकोपसँ परास्त कऽ डेरापर धरना दऽ देलन्हि, अगत्या हुनका भोजनो करौलहुँ, मुदा जाड़क मास भोजनक संग-संग ओढ़ना-ओछाउनक जटील समस्या उपस्थित भेल किएक तँ हम परिवारक संग नहि रहैत छलहुँ जे ओढ़ना-ओछाउन फाजिल रहैत। पाहुनक हेतु व्यवस्था करबो तँ आवश्यके छल। एहि तरहक विचारमे मग्न रही कि एका-एक फूरल जे ओभर कोट मूसक द्वारा जे ठाम-ठाम काटलासँ पड़ल रहैत छल, कपड़ा उतारि कऽ देल जाय। आन दोसर उपाय कोन छल? मूसरीक काटल ओभर कोट ओ परदाक कपड़ासँ पाहुनक जाड़ निवारणक व्यवस्था कएल। पाहुन जी दाबि कहलन्हि-

"एहिठाम जाड़ विशेष होइत अछि किएक तँ कोसीकात थिकै।"

खैर! हुनक एहि बातक लक्ष्यार्थ बुझि अपन टूश दऽ देलियन्हि। प्रात: जिज्ञासा भेल जे आगन्तुककेँ हाल-चाल पूछल जाय। ई सोचि आगाँ बढ़लहुँ। हमरा पूछबासँ पूर्वहि ओ उचती-मिनती करैत कहए लगलाह-

"आहि सर सम्बन्धीक इएह काज होइछ। हम कतए एलहुँ से कहब तँ एखन मोनेमे अछि। अपनेक ओतए हमर अधिकार ठहरैत अछि।"

हम कहलियन्हि-

"से कोना?"

ओ आत्मीयताक आलाप करैत कहलन्हि-

“अपनेक पिताक मातृ पक्षक हम भगिनमान छी। तेँ ई सम्बन्ध काटएबला नहि अछि। अपनेक ओतए हमरा बालकक प्रथम पत्रक कौपी आएल छन्हि। ई जानि मनसूबा बढ़ल जे खूब नम्बर देबन्हि। परीक्षार्थीकेँ स्वयं पठबितहुँ, मुदा ओ अपनेसँ धकाइत तेँ दोसर ठामक पैरबीमे पठा स्वयं आएल छी। एतदर्थ अपने ततेक नम्बर दऽ दियौन्ह जे दोसरो पत्रक मोजबरा भऽ जान्हि।”

हुनक एहि उक्तिपर जिज्ञासा भेल तेँ गुप्त रूपेँ बण्डल खोलि देखए लगलहुँ। कॉपी देखलासँ माथपर अस्सी मोन पानि जेना पड़ल हो जे आब एहि पाहुनक भाभट कोना सम्हारब। भोजन, जलखइ, चाह-पानसँ तँ मुँह हिनक भरैत गेलहुँ अछि आ ऊपरसँ सादा कॉपीपर उत्तम अंक देनाइ तँ बूझू कष्टकर छल। प्रधान परीक्षक चिड़-चिड़ा स्वभावक लोक छथि, अधिक नम्बर देलासँ शिकायत कऽ आगू परीक्षको नहि होमए देताह ई सोचि व्यथित रही। पाहुनाइक संग-संग हिनक आकांक्षाक आपूर्त्ति यशक भागी होएबो अर्थ रखैत छल। दोसर साँझक भोजनोत्तर सत्यक आभास जखन हुनका करा देलियन्हि, तखन ओ वध लग्गू सन मुँह बनाए लेलन्हि।

किछु कालक बाद गिड़-गिड़ाइत कहए लगलाह-

“हम जीवनमे प्रथम बेर सम्बन्धी बुझि आयल छी। आशा बलवती छल जे पहुनाइक संग-संग मोन बन्ध नम्बर दिआएब मुदा आब तँ सभ खातिरदारी कयल अपनेक हम व्यर्थ बूझैत छी। हमर सम्मान अपने की कएल?”

वेश! धुआँ सन मुँह कऽ लेलन्हि। एहि तरहक मुँह देखि हम अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ, पित्त लहरि गेल जे काल्हिसँ व्यर्थक बोझ बनल छथि। ई हमरोसँ नजायज करबए चाहैत छथि। हिनका की होएतन्हि? पहुनाइ सुतारैत चल जेताह आ हमरा प्रधान परीक्षकक

फटकार सुनए पड़त।

खैर! अन्तमे साहस बान्हि कहलियन्हि-

“अपनेक विद्यार्थी पासो नहि करताह तेँ ई आशा छोड़ि देल जाय। मोनसँ पढ़ए कहियौन्ह आगाँ नीक करताह। हम अस्मर्थ छी।”

चट् बाजि उठलाह-

“तखन सम्बन्धीक फर्ज की?”

हम उत्तर देलियन्हि-

“एकर जानकारी तँ हमरा नहि अछि। ई सम्बन्ध स्वार्थक भीत्तपर ठाढ़ अछि।”

तैयो ओ गेंग जोतए लगलाह-

“अपने जे हमर विदाइ करितहुँ से नम्बरे दऽ कऽ मोजर भऽ जाएत।”

ई बात आओरो क्रोधक वृद्धि कएलक। जीवनमे एहन सम्बन्धीक भेँट पहिल बेर सेहो एतेक भयंकर..! आवेगमे आबि कहलियन्हि-

“मान न मान हम अहाँक मेहमान’ एहने ठाम कहल छैक।”

ई ओ सुनि मुँह विधुएने विदाह भऽ गेलथि। हमहूँ साँस छोड़ल जे पिण्ड छुटल।

एहि तरहक बल पाहुनक एक-आध आरो स्मरण भऽ गेल अछि मुदा समयाभाव अछि जकर जिक्र करब सम्भव नहि। मुदा समीक्षत्मक तौरपर देखैत छी जे आजुक समयमे शहर हो वा देहात, कार्यालय हो आकि मंत्रालय, विद्यालय हो वा विश्व विद्यालय, कारखाना हो वा मैखाना, देश वा विदेश सबतरि लोक एहि लोकोक्तिक आधार स्वरूप अपन स्वार्थक सिद्ध करबामे तल्लीन अछि। ❑

मनबोधक रचनामे सामाजिक चेतना

मैथिलीक महिमा मण्डित मूर्धन्य कवि मनबोध अठारहम् शताब्दीक कवि लोकनिमे महत्वपूर्ण स्थानकेँ प्राप्त कयने छथि। मैथिली काव्यधारा संगीतसँ ओत-प्रोत भए करवनहुँ स्फूट पद्यक रूपमे आ करवनहुँ नाटकसँ गुम्फति भए प्रवाहित होइत आबि रहल छल। काव्यक रूपगत विकास ठमकि गेल दल। नाअर मन मन मोहन भाषा रूढ़ भए गेल, एहने समयमे मनबोधक पदार्पण भेल।

मनबोधक रचनाक सन्दर्भमे चर्चा करैत एहि तथ्यपर आबए पड़ैछ जे हिनक कोन रचना समाजकेँ चेतनशील बनौलक। ओना तँ ई दान-लीलाक रचना कयलनि जे पूर्ण श्रृंगारिक कहल गेल अछि, मुदा ओहि रचनाक अता-पता एखन नहि अछि। मात्र किछु स्फूट गीत उपलब्ध अछि जे विद्यापतिक परम्पराक अनुकरण थिक।

मात्र हिनक ‘कृष्ण-जन्म’ रचना अछि जाहिमे ओ सामाजिक चैतन्यताकेँ पूर्ण रूपसँ समाहित करबाक चेष्टाकयल अछि। कोनो समाजकेँ जगेबाक क्षमता कवि आ लेखकमे होइत अछि जे अपन रचनासँ सत्साहित्यक सृजन कऽ ओहि समाजक संस्कृतिमे आमूल परिवर्त्तन आनि दैछ। भरकल भुतिआयल समाजकेँ नव दिशा प्रदान कएनिहारमे गोस्वामी तुलसीदास अपन राम चरित मानस रामायणक रचनासँ चेतनाक सोपान प्रदान कयलन्हि। महाकवि वद्यापतियो अपन

वहुविध रचनासँ मिथिले नहि मिथिलेत्तर प्रान्तोमे उदास-भटकल आ परांगमुख समाजकेँ चेतनशील बनाय देल।

मुदा मनबोध तँ हुनका लोकनिक रचनाक ठीक विपरीत नव शैली, चिन्तनक आधार तत्कालीन समाजक विचारधाराक समीक्षात्मक वर्णन प्रस्तुत कयल। मनबोध भवान कृष्णाहुक चरित्रकेँ परम्परागत श्रृंगारिकताक वातावरणसँ वहिर्भूत कय लोक नायकक रूपमे समायोचित अंकित कयलन्हि। ओ गोकुल-वृन्दावनहुक लीलामे श्रृंगार क्रीड़ाक नहि, प्रत्युत दानव-दमन लीलाक विवरण देलन्हि।

मनबोधक समयमे वैदेशिक आक्रमण ओ विधर्मीशासनक क्रुरतासँ जेना भारतभूमि दलित-मर्दित छल। मिथिलाक कन्दर्पीधातमे धनधोर युद्ध मचल छल। तकर प्रतिकात्मक वर्णन कंसक दुराचारसँ कय मगधपतिक दुर्ग्रहसँ मय पुनि महापुरुष कृष्णक विनाशाय च दुष्कृताम्'क सन्देश अपन रचनासँ देल। इएह सन्देश हुनक सामाजिक चेतनाक हमरा लोकनिकेँ कृष्ण-जन्ममे भेटैछ।

मनबोध भाषाक कवि कहि सम्बोधित छथि। वास्तवमे हिनक रचनामे लोक भाषा निखड़ि कय रूप परिपक्क भय प्रयुक्त अछि। तत्कालीन साहित्य संस्कृत एवम् अवहटक संयुक्ताक्षरक प्रयोगक कारणेँ कर्ण कटु होमय लागल छल से घसि कऽ कोमल उच्चारणसँ मजा कय चिक्कन भऽ लोक कंठक अनुकूल बनि गेल। भाषाक सरली करणक काजमे पुर्वोदित (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति) आरम्भ कयने छलाह से मनबोधक रचनामे पूर्णताकेँ जेना प्राप्त कय चुकल हो से प्रतीत होइछ। तेँ ई कहब असंगत नहि होएत जे वर्तमान मैथिली बहुत किछु मनबोधक सरणिपर चलित अछि। वर्त्तमान मैथिलीक परिष्कर्त्ता समाज सुधारक कवीश्वर चन्दा झा मनबोधसँ ने केवल रामायणक प्रमुख छन्द अपनाओल प्रत्युत भाषाक रूप राशि, वाग्धारा एवम् क्रिया ध्वनि सबहुक नीक जकाँ अनुशरण कयल। भाषाक मौलिकता वा सप्राणता थिक ओहिमे प्रयलित

वाग्धारा तकर प्रयोगमे मनबोध अनुकरणीय मानल जायताह।

लोकोक्ति समाजिक चिन्तन दिशाकेँ वयंग्यसँ तीक्ष्ण कटाक्षसँ, तिख-चोख उपमानक योजनासँ प्रभावी बनबैछ। ओकर प्रचुर प्रयोग कृष्ण-जन्मेमे भेटैछ।

द्रष्टव्य अछि- बामन पोथ्ज्ञी, छत्री तीर, नेनहि सिख चरवाहिअहीर। ठेंठ मैथिलीक प्रयोग मनबोधक भाषाक विशेषता थिक। कृष्ण-जन्म अठारह अध्यायक उपलब्ध अछि, किन्तु भाषा-भाव कथा रचना शैलीसँ ई स्पष्ट भय जाइछ जे 10 अध्यायक बाद जे किछु अछि से मनबोधक मूल नहि, क्षेपक थिक। मनबोधक कृष्ण-जन्म मैथिली साहित्यक एक गोट अनुपम रत्न अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकर बड़ विशिष्ट ओ महत्वपूर्ण स्थान छैक। मैथिली साहित्यक ई प्रथम ग्रंथ थिक जकर प्रकाशन ओ सम्पादन कयलन्हि। मैथिलीक स्वतंत्र सत्ताक प्रव्यापक विश्व विदित भाषा तत्वविद् महामना ग्रिअर्सन साहेब। पहिल कवि मनबोध छला जे श्रृंगारसँ शून्य भक्ति रसमय नूतन शैलीमे रचना कए नव दिशा समाजकेँ देल। बाल चेष्टाक जतेक प्रभावोत्पादक स्वाभाविक वर्णन एहि ग्रंथमे अछि ओ अति दुर्लभ कहल जाएत।

बाल छविमे जे एक गोट मृदुता होइछ, ओकर कौतुकमे जे एकटा आह्लाद रहैछ तथा ओकर मुस्कानमे शुचिता रहैछ ताहि दिश एक मात्र मनबोधक ध्यान गेलन्हि। कृष्णक बाल रूपक अंकन कय मनबोध मैथिली काव्य मध्य नव परम्पराक जन्म देलन्हि।

कृष्ण-जन्मक वात्सल्य वर्णनक मौलिकताक उल्लेख करैत डॉ. जगदीश नारायण कहलन्हि अछि- “हिन्दी साहित्यमे जाहि रूपेँ महाकवि सूरदास कृष्णक वात्सल्यक वर्णन कय एक दिश साहित्यक अपूर्ण क्षेत्रकेँ पूर्ण कयलन्हि आ वात्सल्य रसकेँ दशम रसमे परिगणित कएलन्हि तहिना मनबोध मैथिली साहित्यमे कृष्ण-जन्मक रचना कए साहित्यक अपूर्ण

क्षेत्रकेँ पूर्ण कयलन्हि। वात्सल्य रसक महत्ताकेँ सजीव ढंगसँ चित्रणक कए व्यक्त कयलन्हि अछि। कोनो समाजक मूलाधार बाल रूपेँ होइछ।”

कतओक दिवस जरवन विति गेल

हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल।

एहि कृष्ण-जन्ममे कविक ध्यान लोक-जीवनक प्रति नीक जकाँ आकृष्ट भेल अछि। मनबोधक भाषा सरल, मधुर शब्द विन्यास बड़ रूचिगर ओ कटगर अछि। डॉ. ग्रिअर्सन साहेबक अनुसार मनबोधक भाषा विद्यापति ओ हर्षनाथक भाषाक बीच कड़ीक काज करैत अछि। अचेतन समाजकेँ चेतनशील बनएबाक बहुविधि प्रयास मनबोधक रचनामे भेल अछि।

मनाकवि मनबोधक ऐतिहासिक रचना कृष्ण-जन्मक प्रसंग अपन विचार व्यक्त करैत डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र कहैत छथि जे साहित्यकारक हेतु कृष्ण एहन चरित्र नायक थिकाह जे सभकेँ समान रूपे प्रेरकक काज करैत आयल छथि। ओ एक ओर प्रतिनिध कवि विद्यापतिक रचनाक काव्य पुष थिकाह संगहि महाकवि मनबोध से अपन काव्यक चरित्र नायक कृष्णकेँ रखने छथि। मुदा विद्यापति ओ मनबोधक कृष्णमे महान अन्तर अछि। दुनूकेँ स्वरूपहिटामे केवल अन्तर नहि अपितु उद्देश्यमे सेहो महान् अन्तर छन्हि।

मनबोध कृष्णक एक नवीन मूर्तिकेँ देखलन्हि। ओहि मूर्तिकेँ ओ तेहेन आदर्श ओ गरिमासँ नवीन छवि देलन्हि जे कृष्ण सामाजिक जीवनक अभिनव अंग बनि कऽ प्रकट भेलाह। पहिने बाल रूपक दिग्दर्शन पश्चात् लोकोपकारी एवम् लोक संग्रही भए जाइत छथि। पापी-दुराचारीक संहार करैत छथि। कृष्ण अवतारक मूल उद्देश्यक पूर्तिक सभ रहस्यक एहिमे स्पष्ट उद्घाटन भेल अछि। अव्यस्थित आ आतंकित समाजकेँ सुव्यवस्थित आ निरांतकीक सीख एहि रचनासँ भेटैछ।

मनबोधसँ पहिने कविलोकनि नारीक केवल रूपमाधुरीक अवलोकन कए श्रृंगारिक रचना कए साहित्यक भण्डारकेँ केवल भरलन्हि। ओ लोकनि एहि दिश ध्यान नहि देलन्हि जे नारीक चरम उत्कर्ष ओकर मातृत्वमे निहित अछि। तेँ मनबोध जखन बाल रूप कृष्णकेँ उपस्थित करय लगलाह तँ यशोदाक मातृत्वकेँ तेहन महिमासँ मण्डित कए देल जे हिनक मात् रूपक प्रतिष्ठा अमर भय गेल अछि जाहिसँ नारी समाजमे सेहो नव चेतना जागृत भेल अछि।

मनबोध अपन अमर कृति कृष्ण-जन्ममे तेहन आवेग-पूर्ण भाषामे रचना कयने छथि जे सर्व साधारणक हेतु व्यक्तिगत अनुभवक स्मरण करबैत अछि। संगहि कृष्ण ओ लीलामे कोनो माताक सुख-दुख हर्ष ओ विषादक संग झंझटि आ संकटक अनुभव तँ करिबितहि अछि संगहि वात्सल्य रसक धारमे सनातक भए मनबोधक रचनाक स्थायी सम्पदाक रूप धारण कए लेलक अछि। कविक कल्पनाक सामंजस्य काव्यकेँ हृदयग्राही बनौने अछि। मनबोधक काव्य पुरुष कृष्ण शान्ति ओ सौहार्दक अक्षय समाजक कल्याण होइत आबि रहल अछि। इएह कल्याणकारी भावना सामाजिक चेतनाक सद्य: स्वरूप थिक।

एकर विपरीत सदाचार, परोपकार ओ धर्मक प्रतीक कृष्ण छथि। कंसक चरियांकन कवि पापी आ कुकर्मी सभक मुखियाक रूपमे कयने छथि आ अन्तत: कृष्ण ओहि पालात्माक वध परिजन-पुरजन ओ सर सम्बन्धी सहित कए दैत छथि। असम्भव कार्य आ अलौकिक लीला कएनिहार कृष्ण वस्तुत: अवतारी पुरुष छलाह जनिकर प्रत्येक कार्य आ लीलामे देवत्वक आभास होइत अछि। मनबोधक कृष्ण अंग, वंग ओ तैलंगक दुराचारी राजा सभक अन्त करैत मगध नरेश जरासंधोक अन्त कए सवतरि शान्ति स्वच्छ वातावरण कायम कएल। ई स्वीकारए पड़त जे मनबोधक कृष्ण-जन्म रचनासँ समाजकेँ नव आलोक भेटलैक जकर अनुकरण करबे सामाजिक चेनाक प्रत्यक्ष प्रमाण थिक। ❑

मौलाइल गाछक फूल : जगदीश प्रसाद मण्डल

'मौलाइल गाछक फूल'क लेखक श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ हम साधुवाद दैत छियन्हि जे हिन्दी आ राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अर्हता प्राप्त होइतहुँ अपन मातृभाषाक प्रति अटुट सिनेह राखि मैथिलीमे लेखन करबाक भगिरथी प्रयास कएल अछि। ओना तँ मैथिलीमे अनेकानेक साहिन्यकार लोकनि चेष्टा कएल अछि। हुनका लोकनिक भाषामे फेंट-फाँट भेटल अछि, किन्तु मौलाइल गाछक फूलमे सुच्चा लोकभाषाक प्रयोग भेटैत अछि। प्रान्जल भाषा गमैया भाषाक आगाँ घुटना टेक दैत अछि, जन साधारण अल्पो शिक्षितकेँ गुद-गुदीक संग विषय अन्तस्थलीकेँ छुबि लैत अछि। वैचारिक दृढ़ता एवम् हार्दिक मृदुलताक अद्भुत समाहार जगदीशजीमे विरल अस्तित्वक परिचय दैछ। उपन्यासक प्रत्येक लेखपर माने उपकथापर दृष्टि दैत छी तँ स्पष्ट प्रतीत होइछ जे एकर लेखक जेना प्रत्यक्षदर्शी भऽ विषयक निरूपण कएल अछि।

ओना तँ शिक्षाक सीढ़ीकेँ पार कऽ लेखक कलाक बलवती इच्छा राखि मैथिलीक वाटिकाकेँ पल्लवित-पुष्पित करक भरपूर प्रयास कएलनि अछि। गाम ठामक बिलक्षण चित्रण हिनक लेखनीक विशेषता ऐ पोथीमे देखल जाइछ। हिनका भाषानुरागीक संग मातृभाषाक सिनेही कही तँ सर्वथा उपयुक्त होएत। ऐमे सामाजक ओइ वर्गक समीक्षा कएल अछि जकरापर आइधरि कियो सोचबो ने कएने छल। माजल ठेंठ गमैआ

बोलीक मैथिलीमे समाहित कएने छथि।

हमरा तँ लगैत अछि माए मैथिली लेखकक माथपर चढ़ि कऽ एहन चमत्कारी उपन्यास लिखक हेतु प्रेरित कएल अछि। फणिश्वर नाथ रेणु आ यात्रीजीक उपन्यासमे सामाजिक रहन-सहन वैचारिक भिन्नता अर्थाभावक कारणे स्वाभिमानक हनन जौं देखबामे अबैत अछि तँ सम्प्रति उपन्यासमे वर्णित घटना आ घटनासँ पात्रक प्रत्यक्ष दिग्दर्शन अति मार्मिक अन्तर मोनकेँ सोचवाक लेल उत्प्रेरित करैछ।

मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे जन्म नेनिहार लेखक एतेक सुन्दर, सुवोध आ सुगम्य ढंगसँ विषएकेँ निरूपित कऽ पाठकक जिज्ञासाकेँ अन्त धरि बढ़बैत गेल छथि जे चिक्कन, चोटगर आ चयन लेल वाध्य करैत अछि। मैथिली साहित्याकाशक ई ज्योर्तिमान नक्षत्र सदृश उद्भूत भऽ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ समृद्धता अनबामे योगदान कएल अछि।

ओना तँ औपन्यासिक विचारानुसार ऐ उपन्यासमे त्रुटि अछि। एकरा उपन्यास कहल जाए वा सामजिक निबंध तइ परिप्रेक्ष्यमे विद्वान पाठके निर्णए कऽ सकैत छथि। मुदा हमरा तँ लेखकक ऐ उपन्यासमे कालानुसार घटना आ पात्रक चित्रणमे ताल-मेलक अभाव भेटैत अछि जेना- एक ओर अनुप वोनिहारक बेटा बौएलाल भूख-पियाससँ आकुल अछि इनारक पानि भरबामे डोरी डोलक प्रयोजन छैक तँ दोसर दिसि रमाकान्त आ हीरालालकेँ आधुनिक कालमे शराब चुस्कीक चर्चा होइत अछि तँए उपन्यासक विषए-वस्तु समए बद्ध नै रहलासँ औपन्यासिक दोष लक्षित होइत अछि। स्वीकार करए पड़ैत अछि जे हिनक ई उपन्यास विषय-वस्तुकेँ तइ रूपेँ समेटने अछि जेना सितुआमे समुद्र समाएल हो।

लेखक जगदीश प्रसाद मण्डलजीक प्रयास आ आयास दुनू साराहनीय छन्हि। हम माँ मैथिलीसँ प्रार्थना करैत छी जे हिनकामे स्फूर्ना बनल रहनि जाहिसँ मैथिली साहित्यक सम्वर्द्धन होइत रहए। ❑



डॉ. बचेश्वर झा

लेखक परिचय

नाम : बचेश्वर झा

जन्म तिथि : 15 मार्च 1947

पिता : स्वर्गीय उमेदी झा

माता : स्वर्गीया दुर्गा देवी

पत्नी : श्रीमती मीना झा

पैत्रिक गाम : हटनी (नौआबाखर) जिला- मधुबनी

मातृक गाम : नरुआर (भवानीपुर) जिला- मधुबनी

वर्त्तमान पता : पूर्व विश्व विद्यालय प्रचार्य एवम् अध्यक्ष मैथिली विभाग- निर्मली कॉलेज निर्मली, प्रोफेसर्स कॉलोनी वार्ड न. 06, पो. निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

पिन : 847452

शैक्षणिक योग्यता : मैट्रिक प्रथम श्रेणी, स्नातक प्रतिष्ठा, एम.ए. मैथिली, पी.एच-डी. (मैथिली विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्लीसँ टिचर फेलोशिप अन्तर्गत शोध कार्य सम्पादित।

शिक्षण अनुभव : मैथिली प्रतिष्ठामे 33 वर्षक शिक्षण अनुभव।

अन्य उपलब्धि : (क) स्नातक प्रतिष्ठा स्तरक परीक्षक एवम् प्रश्न-पत्र चयनकर्त्ता। (ख) आकाशवाणी दरभंगासँ 1983 ई.सँ 2009 ई. धरि मैथिली साहित्यक अनेकानेक विषयक वर्ताकार। (ग) पत्र-पत्रिकामे मैथिली लेख एवम् कविता प्रकाशित।

सम्पर्क : 9122409495, 8340425615

ISBN:978-93-87675-76-6





पल्लवी प्रकाशन ₹ 250/-

जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन

निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452